www.understandquran.com

UNDERSTAND AL-QURAN ACADEMY

90%* क़ुरआनी अल्फ़ाज़

आओ क़ुरआन समझें – आसान तरीक़े से

कोर्स: 5 - सूरह अल-बक़रा (आयात: 106-141)

इन्शा-अल्लाह, इस कोर्स के बाद आप क़ुरआन मजीद के तक़रीबन 90 फ़ीसद अल्फ़ाज़ समझने लगेंगे
(*अगर आप सूरतुल बक़रह और उसके बाद वाली सूरतों को पढ़ना जारी रखेंगे)

तालीफ़
डा० अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ अ़ब्दुर्रहीम
बानी व डायरेक्टर: अन्डरस्टैण्ड अल-क़ुरआन एकेडमी

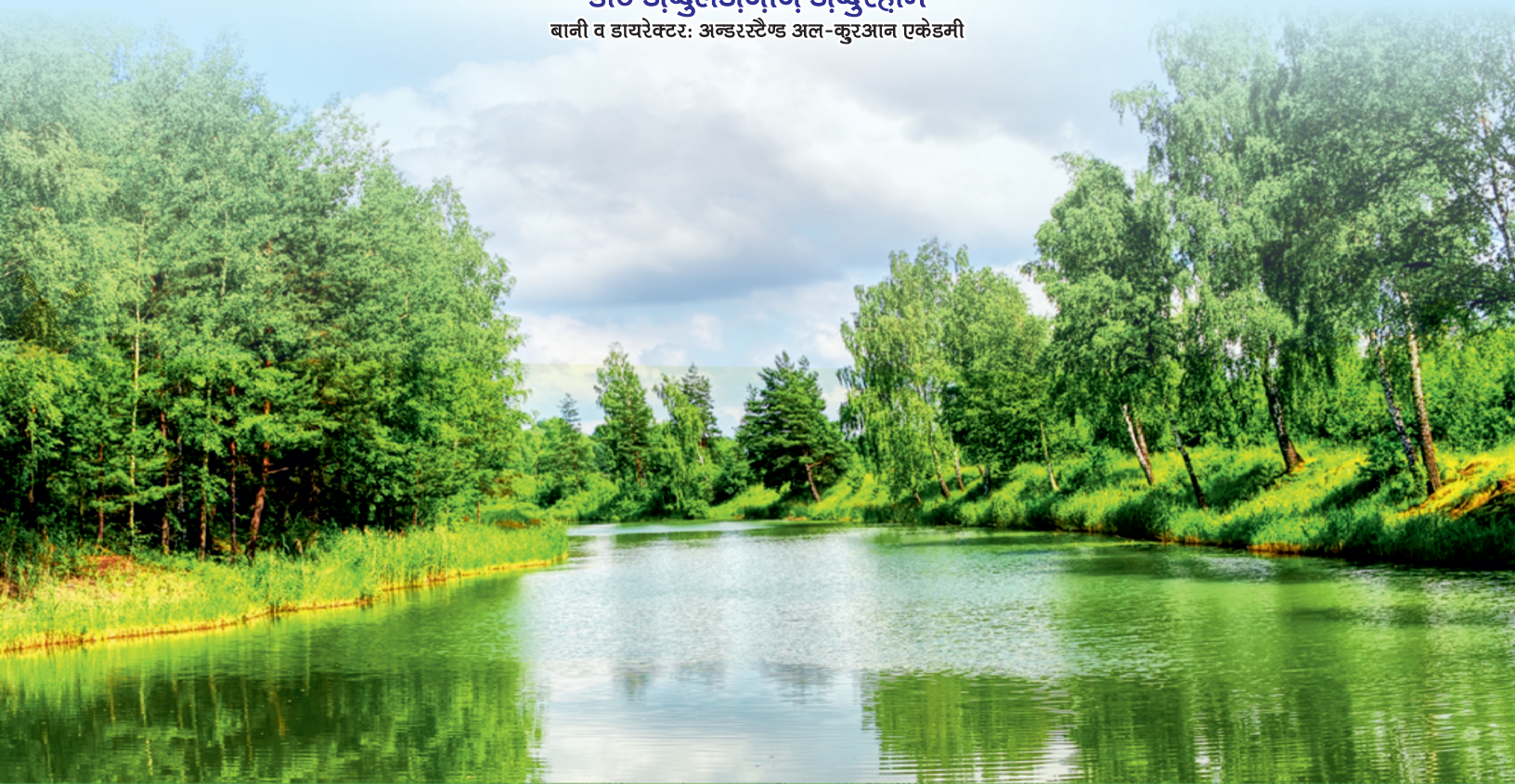

www.understandquran.com

इशारात TPI के ज़रिया
(सूरह अल-बक़रा पेज: 16-20)

पेज 20	पेज 19	पेज 18	पेज 17	पेज 16 अल-बक़रा

बनी इसराईल का ज़िक्र

जिन्हों ने हिदायत की क़द्र नहीं की।

कुरआन को हमारी ज़िंदगी में लाने के लिए एक सादा तरीक़ा

www.understandquran.com

UNDERSTAND AL-QUR'AN ACADEMY

*90% से ज़ायद
क़ुरआनी अल्फ़ाज़

आओ क़ुरआन समझें – आसान तरीक़े से

कोर्स: 5 - सूरह अल-बक़रा (आयात: 106-141)

इन्शा अल्लाह, इस कोर्स के बाद आप क़ुरआन मजीद के
90 फ़ीसद से ज़ायद क़ुरआनी अल्फ़ाज़ समझने लगेंगे
(*अगर आप सूरतुल बक़रा और उसके बाद वाली सूरतों को पढ़ना जारी रखेंगे)

तालीफ़

डा0 अब्दुलअ़ज़ीज़ अब्दुर्रहीम
बानी व डायरेक्टरः अन्डरस्टैण्ड अल-क़ुरआन एकेडमी

www.understandquran.com

© EduSuite Solutions Private Limited

इस किताब के किसी भी हिस्से की बग़ैर इजाज़त कॉपी, तक़सीम और किसी भी वेबसाइट पर अपलोड करना मना है।

किताब आओ क़ुरआन समझें आसान तरीक़े से
कोर्स-5: सूरह अल-बक़रा (106-141) 90 फ़ीसद से ज़ायद क़ुरआनी अल्फ़ाज़

तालीफ़ डा0 अब्दुलअ़ज़ीज़ अब्दुर्रहीम
डायरेक्टर: अन्डरस्टैण्ड अल-क़ुरआन एकेडमी

नाशिर EduSuite Solutions Private Limited

एडीशन मार्च 2021, तादाद: 1000

सफ़हात 112

रिसर्च व डेवलपमेंट टीम
मोहसिन सिद्दीक़ी
मोहम्मद फ़ुरक़ान फ़लाही, आमिर इरशाद फ़ैज़ी
अब्दुलक़ुद्दूस उमरी,
इरशाद आलम नदवी

एडवाइज़रस
ख़ुरशीद अनवर नदवी
फ़ाज़िल दारुलऊलूम नदवतुल-उलमा
कामिल जामिया निज़ामिया

मुआविनीन
डॉक्टर अ़बदुलक़ादिर फ़ज़लानी
ख़्वाजा निज़ामुद्दीन अहसन, अ़बदुर्रहीम नईमुद्दीन
मोहम्मद यूनुस जामई

हिंदी टाइपिंग
तूबा मज़हर ज़हरावी

अरबी फॉन्ट डिज़ाइनर
शकील अहमद मरहूम (अल्लाह उनकी क़ब्र को नूर से भर दे),
आयशा फ़ौज़िया

ग्राफ़िक डिज़ाइनर
कफ़ील अहमद फ़ैज़ी

क़ुरआनी (अल्फ़ाज़) तादाद व शुमार
तारिक़ अ़ज़ीज़, मुज्तबा शरीफ़ www.corpus.quran.com

Publisher
EduSuite Solutions Private Limited
Plot No. 13-6-434/B/41, 2nd Floor, Omnagar,
Langar House, Hyderabad - 500 008.
Telangana - INDIA
Ph.: +91- 9652 430 971 /+91-40-23511371
Website: www.understandquran.com
Email: info@understandquran.com

www.understandquran.com

بسم الله الرحمن الرحيم

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

सबक़ नंबर	कुरआन	सफ़्हा नंबर टेक्स्टबुक	सफ़्हा नंबर वर्कबुक
	अहम हिदायात	IV	
	एकेडमी का तआरूफ़	V	
	पेशे लफ़्ज़	VI	
16a	नस्ख़ व निसयान (2:106-107)	8	80
16b	क्या तुम भी सवाल करोगे? (2:108)	10	81
16c	ख़ाहिश अहले किताब की? (2:109-110)	12	82
16d	जन्नत सिर्फ़ यहुद व नसारा को? (2:111-112)	14	83
17a	यहूद व नसारा लड़ें आपस में (2:113)	16	84
17b	ज़ालिम रोकें मस्जिद से (2:114-115)	18	85
17c	इसाई बनाएँ बेटा अल्लाह का (2:116-117)	20	86
17d	बे-इल्म कहें: बात करे अल्लाह (2:118-119)	22	87
18a	राज़ी न हों यहूद व नसारा (2:120-121)	24	88
18b	बनीइसराईल! याद करो नेअ़मतें (2:122-123)	27	89
18c	इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की आज़माइश... (2:124)	29	90
18d	बैतुल्लाह और शहरे मक्का (2:125-126)	31	91
19a	बैतुल्लाह की तामीर और दुआएँ (2:127-129)	33	92
19b	कौन मुहँ मोड़े मिल्लते इबराहीम से? (2:130-131)	36	93
19c	वसीयत इबराहीम व याकूब अलैहिमस्सलाम? (2:132-133)	38	94
19d	वह उम्मत गुज़र गई (2:134)	41	95
20a	हो जाओ यहूद व नसारा! (2:135-136)	43	96
20b	अगर वह ईमान लाएँ तुम जैसा तो... (2:137-138)	45	97
20c	अल्लाह के बारे में झगड़ा? (2:139-140)	47	98
20d	बड़ा ज़ालिम जो शहादत छुपाए (2:140-141)	49	99

ग्रामर (क़वाइद)	सफ़्हा नंबर टेक्स्टबुक	सफ़्हा नंबर वर्कबुक
जुमला फ़ेअ़लिया	52	100
إِنَّ और उस की बहनें (أَنَّ، كَأَنَّ، لٰكِنَّ)	54	100
كَانَ और उस की बहनें (أَصْبَحَ، أَمْسٰى)	56	101
पहली जोड़ी: حرف جر+ اسم (واحد)	57	101
पहली जोड़ी: حرف جر+اسم (جمع)	59	102
رَفْع، نَصْب، جَرّ वाहिद अस्मा के लिए	60	102
رَفْع، نَصْب، جَرّ जमा अस्मा के लिए	61	103
दूसरी जोड़ी: اسم +صفت (واحد)	62	103
दूसरी जोड़ी: اسم +صفت (جمع)	63	104
तीसरी जोड़ी: إِشَارَة +اِسْم (هٰذَا، هٰؤُلَاءِ)	64	104
चौथी जोड़ी का तआरूफ़ (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है)	66	105
चौथी जोड़ी (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है) رَفْع، نَصْب، جَرّ	67	105
चौथी जोड़ी (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है) رَفْع، نَصْب، جَرّ (ज़मायर के साथ)	68	106
चौथी जोड़ी (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है) जमा के साथ	69	106
नसब की तीन ह़ालतें	70	107
नसब की मज़ीद तीन ह़ालतें	71	107
नसब की मज़ीद पाँच ह़ालतें	72	108
أَسْمَاءخَمْسَة (पाँच अस्मा)	74	108
ग़ैर मुंसरिफ़	76	109
ग्रामर: इआ़दा	78	109

www.understandquran.com

अहम हिदायात

इस कोर्स को मुअस्सिर अंदाज़ में इस्तिमाल करने के लिए चंद अहम हिदायात।

- इस बात की बहुत अहमियत के साथ ताकीद की जाती है कि इस कोर्स को पढ़ने से पहले आप हमारे कोर्स:**1-4** को मुकम्मल कर लीजिए।
- यह पूरी तरह तआ़मुली **(interactive)** कोर्स है; इस लिए जो कुछ भी आप पढ़ें या सुनें उस की अ़मली मशक़ कीजिए।
- मशक़ के दौरान होने वाली ग़लतियों की वजह से परेशान न हों, इब्तिदा में हर किसी से ग़लती हो ही जाती है।
- जो ज़्यादा मशक़ करेगा वह उतना ही ज़्यादा सीखेगा, चाहे मशक़ के दौरान ग़लतियाँ हुई हों।
- यह सुनहरी क़ायदा याद रखिए:

I listen, I forget, I see, I remember. I practice, I learn. I teach, I master.

- हर सबक़ के बाद ग्रामर भी मौजूद है। ग्रामर का हिस्सा अस्ल अस्बाक़ से बिलावास्ता मुतअ़ल्लिक़ नहीं है क्योंकि इस सूरत में कोर्स पेचीदा हो जाता और बहुत मुम्किन था कि क़ुरआन के अस्बाक़ को शुरूअ़ करने से पहले हमें ग्रामर को अलग से पढ़ाने की ज़रूरत पड़ती। दरअस्ल ग्रामर का हिस्सा असल सबक़ के दौरान पढ़े जाने वाले अल्फ़ाज़ में अ़रबी क़वायद की ततबीक़ को बयकवक़्त मज़बूत करता रहता है। यही वजह है कि चंद अस्बाक़ के मुकम्मल होने पर ख़ुद आप को सूरतों या अज़कार के पढ़ने के दौरान ग्रामर के फ़वायद नज़र आने लगेंगे।

मुंदरिजा ज़ैल सात होम वर्कस करना हरगिज़ न भूलिए:

दो तिलावत के

1. कम अज़ कम **5** मिनट मुसहफ़ (क़ुरआन देख कर तिलावत करना)।
2. कम अज़ कम **5** मिनट बग़ैर देखे अपने ह़ाफ़िज़े से (जो भी याद हो) तिलावत करना।

दो मुतालआ़ (Sudy) के:

3. कम अज़ कम **10** मिनट इस किताब का मुतालआ़ कीजिए। (मुबतदी ह़ज़रात के लिए)
4. कम अज़ कम सिर्फ़ आधा मिनट अल्फ़ाज़ व मआ़नी की शीट का हर नमाज़ के बाद या अपनी सहूलत के मुताबिक़ किसी वक़्त मुतालआ़ कीजिए। और इस कोर्स के मुकम्मल होने तक इस किताबचा को हमेशा अपने साथ रखिए।

दो सुनने और सुनाने के

5. इन आयात की लफ़्ज़ी तर्जमा के साथ कोई रिकार्डिंग सुनिए। आप इसे सफ़र करते हुए कार वग़ैरा में, या घर के कामों को करने के साथ साथ भी सुन सकते हैं। या आप ख़ुद अपनी आवाज़ में इस कोर्स के अस्बाक़ को रिकॉर्ड कर के बार-बार सुन सकते हैं।
6. दिन में कम अज़ कम एक मिनट अपने घर वालों, दोस्तों, क्लास के साथियों के साथ सबक़ के तअ़ल्लुक़ से गुफ़्तगू कीजिए।

और एक इस्तिमाल करने का:

7. रोज़ाना सुन्नत या नफ़्ल नमाज़ों में मुख़्तलिफ़ सूरतों की तिलावत कीजिए, इस का मक़सद यह है कि आप रोज़ाना की नमाज़ों में एक ही सूरह को बार-बार न पढ़ते रहें।

मुख़्तलिफ़ औक़ात में अल्लाह तआ़ला से बार-बार दुआ़ करने की आ़दत डालिए:

1. ख़ुद के लिए दुआ़ (رَبِّ زِدْنِى عِلْمًا) और
2. अपने साथियों के लिए दुआ़ कि अल्लाह हमारी और उन की क़ुरआन को सीखने में मदद फ़रमाए।

याद रखिए कि सीखने का सब से बेहतरीन तरीक़ा यह है कि सिखाया जाए, और किसी को सिखाने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि उसे भी टीचर बना दिया जाए। आप ख़ुद भी टीचर बन सकते हैं। आप हमारी वेबसाइट पर जाईए और वहाँ से पी-पी-टी फाइल्स डाउन-लोड कीजिए, वीडीयो देखिए और जिस तरह़ पढ़ाया गया है, बस उसी तरह़ पढ़ाईए। अपनी तरफ़ से कोई शरह़ बढ़ाने से पहले उलमा से चेक कर लीजिए, वर्ना दी हुई शरह़ को ही इस्तिमाल कीजिए, इन्शा अल्लाह यह काफ़ी है और उल्माए किराम ने इस को चेक किया हुआ है।

www.understandquran.com

"अन्डरस्टैन्ड अल-कुरआन एकेडमी" का तआ़रूफ़

www.understandquran.com

एकेडमी के मक़ासिदः (1) कुरआन से दूरी को दूर किया जाए और ऐसी नस्ल की तैयारी में मदद की जाए जो कुरआन को पढ़े, समझे, अ़मल करे और दूसरों तक इस के पैग़ाम को पहुँचाए (2) कुरआन को सब से दिलचस्प आसान मुअस्सिर और रोज़ाना की ज़िंदगी में सब से ज़्यादा काम आने वाली दुनियाँ और आख़िरत की कामयाबी का रास्ता दिखाने वाली किताब के तौर पर पेश किया जाए (3) रसूलुल्लाह ﷺ की मुहब्बत व अ़ज़मत पैदा करने की नियत से अहादीस की बुनियादी तालीम फ़राहम की जाए (4) कुरआन पाक को आसान अंदाज़ में तज्वीद के साथ पढ़ना सिखाया जाए (5) स्कूल्स, मदारिस, मकातिब और आ़म लोगों के लिए ज़रूरी चीज़ें (किताबें, CD, पोस्टर्स वग़ैरा) उलमा की निगरानी में तैयार किए जाएँ और उन्हें एक निसाब के तौर पर पेश किया जाए (6) मशग़ूल और तिजारत पेशा अफ़राद के लिए मुख़्तसर मुद्दती कोर्सेस (शॉर्ट कोर्सेस) मुनअ़क़िद किए जाएँ (7) सीखने सिखाने के आसान और नए तरीक़ों को इस्तेमाल करते हुए कुरआन के सीखने को आसान बनाया जाए।

वाज़ेह़ रहे कि इस का मक़सद कुरआनी ऊलूम के माहिरीन को तैयार करना नहीं है क्योंकि यह काम माशा अल्लाह दीगर मदारिस और इदारे कर रहे हैं बल्कि इस का मक़सद यह है कि आम मुसलमान और स्कूल्स के तलबा कुरआन के बुनियादी पैग़ाम को समझ सकें।

यह काम क्योंः ग़ैर अ़रब मुसलमानों की अक्सरियत कुरआन को नहीं समझती है। आज की नस्ल के लिए कुरआन से तआ़रुफ़ इन्तेहाई ज़रूरी है क्योंकि एक तरफ़ तो बेहयाई का तूफ़ान है जिस में किसी की बात का असर उतना नहीं हो सकता जितना अल्लाह के कलाम का होगा, और दूसरी तरफ़ तक़रीबन हर तरफ़ से दीने इस्लाम, मोह़म्मद ﷺ की ज़ाते अक़दस और कुरआन करीम पर ह़मलों का सिलसिला जारी है, पूरी कोशिश की जा रही है कि मुसलमानों का ईमान कुरआन से ख़त्म हो जाए या कमज़ोर हो जाए और वह अल्लाह व रसूल से ग़ाफ़िल हो जाएँ। इन ह़ालात में हमारे लिए ज़रूरी है कि हम नई नस्ल को कुरआन समझाएँ और उन को बुनियादी ऐतेराज़ात का मुक़ाबला करने के क़ाबिल भी बनाएँ, इन्शा अल्लाह जब वह कुरआन समझेंगे तो अपनी दुनिया व आख़िरत में कामयाब होंगें और दूसरों को भी इस की दावत पेश कर सकेंगे।

मुख़्तसर तारीख़ः 1998 में www.understandquran.com बनाई गई। अल्ह़म्दुलिल्लाह उस वक़्त से कुरआन मजीद को आसान और मुअस्सिर तरीक़ों के ज़रिया समझने और समझाने के लिए मुख़्तलिफ़ किताबों की तैयारी या उन के तराजिम पर काम किया जा रहा है। कुरआन फ़हमी का पहला कोर्स (पचास फ़ीसद कुरआनी अल्फ़ाज़) तक़रीबन 25 मुख़्तलिफ़ ममालिक में पढ़ाया जा रहा है और इस का तक़रीबन 20 आ़लमी ज़बानों में तर्जमा भी किया जा चुका है। इस के अ़लावा यह कोर्स पाँच मुल्कों व आ़लमी टीवी चैनल्स पर भी नशर किया जा चुका है। इस वक़्त तक़रीबन 2000 से ज़ायद स्कूल्स में "आओ कुरआन पढ़ें तज्वीद के साथ" और "आओ कुरआन समझें आसान तरीक़े से" के कोर्सेस जारी हैं। अल्ह़म्दुलिल्लाह

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमायाः "بَلِّغُوا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً" (पहुँचा दो मेरी तरफ़ से अगरचः एक आयत ही हो) तो आईए हम सब मिल कर इस काम को आगे बढ़ाएँ! आप जहाँ भी हों, कोशिश करें कि इस कोर्स को सीखें और वहाँ की मस्जिद, मोह़ल्ले, स्कूल्स, मदरसे वग़ैरा में इसका तआ़रुफ़ कराएँ और बच्चों और बड़ों को इस अहम काम से जोड़ें। अल्लाह से दुआ़ है कि वह अपनी अज़ीमुश्शान किताब की ख़िदमत में किए गए हमारे इन छोटे मोटे कामों को क़बूल करे, हमें रियाकारी और दूसरे तमाम गुनाहों से बचाए और ग़लतियों से मह़फ़ूज़ रखे। आमीन

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ، وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ، وَاغْفِرْ لَنَا،
اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ - وَجَزَاكُمُ اللهُ خَيْرًا-

www.understandquran.com

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ. اَمَّا بَعْدُ!

अल्लाह तआ़ला ने हम सब की हिदायत के लिए कुरआन नाज़िल किया है। इस से रहनुमाई उसी वक़्त ह़ासिल की जा सकती है जब हम इस को समझ कर पढ़ें। बड़े ही अफ़सोस की बात है कि हम में से अक्सर लोग कुरआन को समझते नहीं क्योंकि हमें इस तरह़ पढ़ाया ही नहीं गया है। यहाँ तक कि आज भी आ़म तौर पर हमारे स्कूलों में कुरआन को समझा कर पढ़ाया नहीं जाता। इस की एक अहम वजह यह हो सकती है कि इस मक़सद के लिए आसान और मुनासिब किताबों की कमी है।

इन्हीं वुजूहात की बिना पर "अन्डरस्टैन्ड अल-कुरआन एकेडमी" के तह़त ख़िदमत कर रहे उलमा व माहिरीने तदरीस की टीम ने कुरआन मजीद को बतौर निसाब पेश करने की जानिब क़दम उठाया है जो बड़ों और बच्चों दोनों के लिए यकसाँ मुफ़ीद है। इस सिलसिले की पहली किताब "आओ कुरआन और नमाज़ समझें-आसान तरीक़े से" आप को तक़रीबन **50** फ़ीसद कुरआनी अल्फ़ाज़ के मआ़नी सिखाती है।

पहली किताब के बाद इसी सिलसिले की तीन और किताबें ''आओ कुरआन समझें-आसान तरीक़े से'' के नाम से मन्ज़रे आ़म पर आ चुकी हैं, जिन में मजमूई तौर पर सूरह अल-बक़रा (आयतः**1** से **105**) पढ़ाई गई है और साथ में अ़रबी ग्रामर के तह़त कम्ज़ोर अफ़्आ़ल, मज़ीद फ़ीह अफ़्आ़ल, सर्फ़ के मज़ीद क़वायद और नह्व के बुन्यादी क़वायद भी सिखाए गए हैं। इन चारों किताबों को मुकम्मल तौर पर पढ़ लेना आप को तक़रीबन **90** फ़ीसद कुरआनी अल्फ़ाज़ समझने के क़ाबिल बना देता है (बशर्त कि आप सूरह अल-बक़रा ही सीखना जारी रखें)।

यह किताब ''आओ कुरआन समझें-आसान तरीक़े से (सूरह अल-बक़रा आयतः **106** से **141**)'' इसी सिलसिले की पाँचवीं कड़ी है। इस किताब के मुकम्मल होने पर आप तक़रीबन **90** फ़ीसद से ज़ायद कुरआनी अल्फ़ाज़ समझने लग जाएंगे (बशर्त कि आप सूरह अल-बक़रा ही सीखना जारी रखें)। इसके साथ साथ अ़रबी ग्रामर के तह़त इल्मे नह्व के अहम अस्बाक़ भी सीखेंगें।

इस किताब की चंद नुमायाँ खुसुसियातः

- कुरआन मजीद के मज़ामीन को समझने और याद रखने में सहूलत के लिए हर सफ़्ह़ा को इशारात **(Pointers)** के तह़त तक़सीम कर दिया गया है, इन इशारात की मदद से तलबा व तालिबात मज़ामीने कुरआन को अपने ज़ेहनों में बा-आसानी मह़फ़ूज़ रख सकते हैं। एक सबक़ में एक इशारा पढ़ाया जाए तो बेहतर है।
- हर सबक़ में एक ह़दीस भी शामिल की गई है, ताकि तलबा में रसूलुल्लाह ﷺ की अह़ादीस की अ़ज़मत भी पैदा हो और वह उन पर अ़मल करने वाले बनें।
- अल्फ़ाज़ के मआ़नी को याद करने के लिए फ़ेक़रों **(phrases)** का इस्तिमाल किया गया है। नई ज़बान सीखने के लिए यह एक नया और मुअस्सिर तरीक़ा है।
- कुरआनी आयात के तर्जमे में इस बात की रिआ़यत की गई है कि वह लफ़्ज़ी तर्जमा भी रहे और रवाँ तर्जमे की ज़रूरत भी पूरी कर दे। इस मक़सद के पेशे नज़र कई मुस्तनद तराजिमे कुरआन से इस्तिफ़ादा किया गया है।
- अ़रबी ग्रामर की मशक़ की ग़र्ज़ से आयात में आने वाले नए अस्मा व अफ़्आ़ल को हर सबक़ में मुस्तक़िल ज़िक्र किया गया है, उस्ताज़ की ज़िम्मेदारी है कि वह हर इस्म और फ़ेअ़ल की तलबा से **(TPI)** के साथ मशक़ करवाए, ताकि अफ़्आ़ल के अबवाब और उन की मुख़्तलिफ़ शक्लें उन के ज़ेहनों में पोख़्ता हो जाए।
- पहली तीन किताबों में आप ने तीन ह़र्फ़ी और मज़ीद फ़ीह अफ़्आ़ल (सह़ीह़ और मोतल) सीखे। गुज़िशता किताब में आप ने ख़ास तौर पर इल्मे सर्फ़ के मज़ीद कुछ अस्बाक़ और नह्व का तआ़रूफ़ भी पढ़ लिए है। इस किताब में नह्व के दीगर अहम अस्बाक़ पढ़ाए जाएंगे जिन से आप को अ़रबी जुमलों की बनावट समझने में काफ़ी मदद मिलेगी, इन्शा अल्लाह।
- सीखने का अ़मल बेहतर हो और तलबा की दरसगाह में मौजूदगी का अंदाज़ा हो सके इस लिए हर सबक़ के साथ वर्क-बुक का ह़िस्सा रखा गया है।

अल्लाह से दुआ़ है कि वह हमें ग़ल्तियों से मह़फ़ूज़ रखे और अगर हो गई हों तो मुआ़फ़ फ़रमाए, अगर आप इस में कोई ग़लती देखें तो बराहे करम ज़रूर बताएँ ताकि अगले ऐडीशन में उसकी तसह़ीह़ हो सके।

अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ अ़ब्दुर्रह़ीम
info@understandquran.com
March 2021

www.understandquran.com

क़ुरआन

www.understandquran.com

नस्ख़ व निसयान (अल-बक़रा:106-107)

मुतालआ के बाद तल्लीन दुआ तसव्वुर एहसास प्लान एहतिसाब

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ

या उस जैसा,	उस से	बेहतर	(तो) हम ले आते हैं	हम उसे भुला देते हैं	या	कोई आयत	जो हम मंसूख़ करते हैं

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ 106 اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह,	क्या नहीं आप ने जाना	ख़ूब क़ादिर है।	हर चीज़ के ऊपर	कि अल्लाह	क्या आप ने नहीं जाना

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	और नहीं है तुम्हारे लिए	और ज़मीन की,	आसमानों	बादशाहत	उसके लिए है

مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ 107

और न कोई मददगार।	कोई हिमायती

मुख़्तसर शरह

- مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ...: नस्ख़ यानी ख़त्म कर देना, मन्सूख़ कर देना।
- तौरात व इंजील और दीगर किताबों के मुक़ाबले जब कुरआन मजीद को आख़िरी किताब बना कर नाज़िल किया गया और बाज़ अह़काम तबदील कर दिए गए (जैसे सनीचर के बजाए जुमा को ख़ास करना या बैतुल-मुक़द्दस के बजाए मक्का को क़िबला बनाना) तो कुछ यहूदीयों ने इस पर एतराज़ किया और आ़म मुसलमानों के दिमाग़ों में इस बारे में शुकूक डालना शुरूअ़ कर दिया और कहने लगे कि अगर यह किताब (कुरआन) अल्लाह ही की तरफ़ से है तो फिर यह अह़काम में तबदीली कैसे हो सकती है?
- نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا...: इस आयत में अल्लाह यह पैग़ाम दे रहा है कि हम जानते हैं कि इंसानों के लिए मुख़्तलिफ़ ज़मानों में क्या बेहतर होता है और कब कौन सी नई और बेहतर चीज़ उन्हें सिखानी है, हम हर चीज़ पर कुदरत रखते हैं।
- इसी तरह़ यह भी पैग़ाम है कि हम या तो पिछली चीज़ से बेहतर चीज़ लाते हैं या उसी के मानिंद लाते हैं, और बेहतर किस के लिए? हम इंसानों के लिए!
- اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ...: पूरी कायनात अल्लाह ही की मिल्कियत है। यहाँ अल्लाह हमें उस की बादशाहत पर और उसकी कुदरत व ताक़त पर ग़ौर व फ़िक्र करने की दावत दे रहा है।
- क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह की हुकूमत तुम्हारी निगाह और तसव्वुर से कहीं ज़्यादा फैली हुई है। किसी सूनामी या ज़लज़ले या तूफ़ान की आमद के वक़्त अपनी कमज़ोरी को मह़सूस करो, ऐसे ह़ालात में तुम सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की ह़िफ़ाज़त ही के भरोसे होते हो।
- इस कायनात के बड़े और फैले हुए इंतिज़ाम का तसव्वुर करो जिन में से बहुत सारे ह़िस्से तो ऐसे हैं कि हम अभी तक उन्हें पूरा समझ ही नहीं सके हैं, जैसे पौदों का बढ़ना, जानवरों और कीड़े मकोड़ों की दुनिया, खाने और पानी का सिस्टम, **ozone** से बचाव का सिस्टम वग़ैरा।
- वह अल्लाह जो इतनी बड़ी कायनात को चला रहा है और जिसने सितारों सय्यारों के लिए बेहतरीन क़ानून बनाए हैं उसको इंसानों के लिए क़ानून बनाना और हिदायत देना ज़रा भी मुश्किल काम नहीं है।
- وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ...: अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए कि जिस अल्लाह ने तंहा पूरी कायनात को पैदा किया है वह

www.understandquran.com

हमारा रहबर और मददगार है। वह हमें कभी भी अकेला नहीं छोड़ेगा। वह हमेशा हमारी मदद और रहनुमाई करेगा। हर क़िस्म की मुख़ालिफ़त, झूटी ख़बरों और इस्लाम के बारे में ग़लत-फ़हमियों के मुक़ाबले में हमारी हिफ़ाज़त करने के लिए वह हमेशा हमारे साथ है।

- कुछ लोग इस्लाम से नफ़रत की वजह से इस्लाम के ख़िलाफ़ शुकूक व शुबहात, ग़लत-फ़हमियाँ और झूटे प्रोपेगंडे फैलाते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में झूटी ख़बरें फैलाई जाती थीं और आज भी ग़लत लोगों की जानिब से फैलाई जाती हैं।
- **मुहासिबा:** क्या मैं अल्लाह की जानिब से मिलने वाली हिदायत पर मुकम्मल यक़ीन और भरोसा रखता हूँ? क्या मेरा यक़ीन इस्लाम के ख़िलाफ़ झूटे इल्ज़ामात से लड़खड़ा जाता है? क्या मैं ग़लत लोगों का सहीह जवाबात के ज़रिए मुक़ाबिला करने की सलाहीयत रखता हूँ? क्या मैं हल तलाश करने के लिए इस्लामी किताबों से रुजूअ़ करता हूँ? क्या मुझे यक़ीन है कि अल्लाह तआ़ला हमारी मदद करने और हमारी रहनुमाई करने के लिए हर वक़्त मौजूद है?

हदीस: हज़रत अबूहोरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरख़ास्त की कि मुझे कुछ ऐसे कलिमात पढ़ने का हुक्म कीजिए कि उन्हें में सुबह व शाम पढ़ सकूँ। आप ﷺ ने फ़रमाया कि यूँ कहो:

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيْكَهٗ،

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَشَرِّ الشَّيْطٰنِ وَشِرْكِهٖ.

ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले, ग़ैब और हाज़िर को जानने वाले, हर चीज़ के रब और उसके मालिक, मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं तेरी पनाह में आता हूँ अपने नफ़्स के शर से और शैतान के और उसके शिर्क के शर से। (अबू दाऊद: **5067**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लान: इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- अल्लाह तआ़ला जानता है कि हमारे लिए क्या बेहतर है, कब वह्य नाज़िल करना है और कब कौन सी बेहतर और नई चीज़ सिखाना है।
- अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर मुकम्मल क़ुदरत रखता है और वह हर चीज़ का मालिक है।
- अल्लाह तआ़ला के सिवा न ही कोई मददगार है और न ही कोई बचाने वाला है।

दुआ़: ऐ अल्लाह! हमें मज़बूत ईमान और अपनी किताब की मुहब्बत अ़ता फ़रमा। शैतानी वस्वसों से हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा और तमाम शुकूक व शुबहात का मुक़ाबिला करने में हमारी मदद फ़रमा और हमें इल्म अ़ता फ़रमा।

प्लान: इन्शा अल्लाह! मैं हर हफ़्ता में कम अज़ कम एक बार ज़मीन और आसमान की तख़लीक़ पर ग़ौर व फ़िक्र करूँगा

अस्मा और अफ़्आ़ल: मशक़ की आसानी के लिए इन आयात में पहले सिर्फ़ तीन हर्फ़ी सहीह अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए, फिर उन ही आयात में शुरूअ़ से आख़िर तक कम्ज़ोर हूरूफ़ वाले अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़ल के तहत दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
ख़त्म कर देना	نَسْخ	مَنْسُوْخ	نَاسِخ	اِنْسَخْ	يَنْسَخُ	نَسَخَ	ن س خ / ف	2
जानना	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	ع ل م / س	518
मालिक होना	مُلْك	مَمْلُوْك	مَالِك	اِمْلِكْ	يَمْلِكُ	مَلَكَ	م ل ك / ض	97
मदद करना	نَصْر	مَنْصُوْر	نَصِيْر	اُنْصُرْ	يَنْصُرُ	نَصَرَ	ن ص ر / ذ	94
पास आना	إِتْيَان	مَأْتِيّ	اٰتٍ	اِئْتِ	يَأْتِيْ	أَتٰى	أ ت ي / هد	275
भुलाना	إِنْسَاء	مُنْسًى	مُنْسٍ	أَنْسِ	يُنْسِيْ	أَنْسٰى	ن س ي / أسـ+	7

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाहिद
आयत, निशानी	اٰيَات	اٰيَة
हिमायती	سَمٰوَات	سَمَاء
मुहाफ़िज़	أَوْلِيَاء	وَلِيّ

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 16b क्या तुम भी सवाल करोगे? (अल-बक़राः108)

मुतालआ़ के बाद तल्क़ीन दुआ़ तसव्वुर एह़सास एह़तिसाब प्लान

كَمَا	رَسُوْلَكُمْ	اَنْ تَسْـَٔلُوْا	اَمْ تُرِيْدُوْنَ
जैसे	अपने रसूल से	कि तुम सवाल करो	क्या तुम चाहते हो

بِالْاِيْمَانِ	الْكُفْرَ	يَّتَبَدَّلِ	وَمَنْ	مِنْ قَبْلُ ؕ	مُوْسٰى	سُئِلَ
ईमान के बदले	कुफ़्र को	इख़्तियार कर ले	और जो	इस से पहले,	मूसा अ़लैहिस्सलाम	सवाल किए गए

السَّبِيْلِ 108	سَوَآءَ	ضَلَّ	فَقَدْ
राह से।	सीधी	वह भटक गया	तो तह़क़ीक़

मुख़्तसर शरह़

- اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا...: एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से मुतालिबा किया कि अगर आप सच्चे नबी हैं तो आसमान से कोई किताब नाज़िल कीजिए या फिर यहाँ कोई नहर जारी कर दीजिए। अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को तन्बीह फ़रमाई कि इस क़िस्म के सवालात और मुतालिबात न करें। ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से भी उनकी क़ौम ने ऐसे ही सवालात व मुतालिबात किए थे जैसे यह मुतालिबा किया था कि हमें अल्लाह को दिखाओ।
- رَسُوْلَكُمْ: इस में यहूदीयों से भी ख़िताब है कि ऐ यहूदीयों! अब तुम्हारे नबी ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ हैं, इस नबी के साथ किसी भी क़िस्म की बदसुलूकी मत करो जैसा कि इस से पहले तुम ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ कर चुके हो।
- इंसान उस वक़्त अपने अक़ीदा व ईमान से हाथ धो बैठता है जब वह अल्लाह से या उसके रसूल से ग़लत-अंदाज़ में सवाल करता है।
- हमें ह़दीस व सुन्नत में दिए गए अह़काम व हिदायात पर बिल्कुल भी सवालात नहीं करना चाहिए। अगर कभी कोई शक हो तो किसी आ़लिम से पूछना चाहिए।

ह़दीसः ह़ज़रत अबूहोरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फ़रमाते हुए सुनाः ''मैं जिस काम से तुम को मना करूँ उस से दूर रहो, और जिस काम का हुक्म करूँ उस पर जहाँ तक तुम से हो सके अ़मल करो; क्योंकि तुम से पहले के लोगों को बहुत ज़्यादा सवालात करने और अपने पैग़म्बरों से इख़्तिलाफ़ करने ने तबाह व बर्बाद कर दिया''। (मुस्लिमः **1337b**)

- सीखने की ग़र्ज़ से सवालात ज़रूर किए जा सकते हैं, लेकिन सवाल ऐसे न हों जो बग़ावत व सर्कशी की या रुकावटें पैदा करने की नीयत से हों।

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह इस्लाम की और रसूलुल्लाह ﷺ की शकल में जो नेअ़मत तूने हमें अ़ता की है उस की क़दर करने में हमारी मदद फ़रमा। इस्लाम को जज़्बा और सच्ची लगन के साथ अपनी ज़िंदगी में लाने और दूसरों तक पहुँचाना हमारे लिए आसान बना दे।

प्लान इन्शा अल्लाह! जब कभी मुझे इस्लाम के तअ़ल्लुक़ से कोई सवाल हो या शुबहा हो तो मैं अल्लाह से इल्म की भीक मांगूँगा और उलमा से उस के बारे में पूछूँगा।

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः मशक़ की आसानी के लिए इन आयात में पहले सिर्फ़ तीन हर्फ़ी सह़ीह़ अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए, फिर उन ही आयात में शुरूअ़ से आख़िर तक कम्ज़ोर हूरूफ़ वाले अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
इंकार करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر ذ	465
सवाल करना	سُؤَال	مَسْئُوْل	سَائِل	سَلْ	يَسْئَلُ	سَأَلَ	س أ ل ف	119
गुमराह होना	ضَلَالَة	–	ضَالّ	ضِلَّ	يَضِلُّ	ضَلَّ	ض ل ل ضل	113
चाहना	إِرَادَة	مُرَاد	مُرِيْد	أَرِدْ	يُرِيْدُ	أَرَادَ	ر و د أس+	139
बदलना	تَبَدُّل	-	مُتَبَدِّل	تَبَدَّلْ	يَتَبَدَّلُ	تَبَدَّلَ	ب د ل تد+	3
ईमान लाना	إِيْمَان	مُؤْمَن	مُؤْمِن	اٰمِنْ	يُؤْمِنُ	اٰمَنَ	أ م ن أس+	818

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
रसूल	رُسُل	رَسُوْل
रास्ता	سُبُل	سَبِيْل

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 16c ख़ाहिश अहले किताब की? (अल-बक़रा:109-110)

मुतालआ के बाद तल्लीन दुआ तसव्वुर एहसास एलान एहतिसाब

وَدَّ كَثِيْرٌ	مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
चाहा बहुत	(से) अहले किताब ने

لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ	مِّنْۢ بَعْدِ	اِيْمَانِكُمْ	كُفَّارًا ۚ	حَسَدًا	مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ
काश कि वह लौटा दें तुम्हें	बाद	तुम्हारे ईमान के	कुफ़्र में,	ह़सद करते हुए	अपने दिलों से

مِّنْۢ بَعْدِ	مَا تَبَيَّنَ	لَهُمُ	الْحَقُّ ۚ	فَاعْفُوْا
बाद	इस के कि वाज़ेह हो गया	उनके लिए	ह़क़,	पस तुम मुआफ़ कर दो

وَاصْفَحُوْا	حَتّٰى	يَاْتِيَ اللّٰهُ	بِاَمْرِهٖ ؕ	اِنَّ اللّٰهَ	عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
और दरगुज़र करो	यहाँ तक कि	लाए अल्लाह	अपना हुक्म,	बेशक अल्लाह	ऊपर हर चीज़ के

قَدِيْرٌ (109)	وَاَقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ	وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ	وَمَا	تُقَدِّمُوْا
ख़ूब क़ादिर है।	और तुम क़ायम करो	नमाज़	और तुम दो ज़कात	और जो कुछ	तुम आगे भेजोगे

لِاَنْفُسِكُمْ	مِّنْ خَيْرٍ	تَجِدُوْهُ	عِنْدَ اللّٰهِ ؕ	اِنَّ اللّٰهَ	بِمَا تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ (110)
अपने लिए	भलाई	(तो) तुम पालोगे उसे	अल्लाह के पास,	बेशक अल्लाह	जो तुम अ़मल करते हो	ख़ूब देखने वाला है।

मुख़्तसर शरह

- ...حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ: अहले किताब ह़सद क्यों करने लगे? रसूलुल्लाह ﷺ की आमद से पहले अ़रब में उन की एक इमतियाज़ी और क़ायदाना हैसियत थी। वह किताब वाले थे और वह चाहते थे कि रसूल उन ही में से कोई एक हो, लेकिन ऐसा हुआ नहीं।
- अपनी हट धर्मी और ज़िद की वजह से वह इस्लाम क़बूल करने से दूर रहे। वर्ना वह रसूलुल्लाह ﷺ के ज़रिया लाई गई तालीमात की अज़मत, उन की सच्चाई और फ़ज़ीलत को जान चुके थे।
- उन को ह़सद इस वजह से था कि मुसलमान एक बाइख़्तियार और बाइज़्ज़त मुआ़शिरा बन कर उभर रहे थे। उन की ख़ाहिश थी कि मुसलमान अपने पुराने दीन की तरफ़ लौट जाएँ।
- एक ऐसे इंसान का तसव्वुर कीजिए जो सिर्फ़ अपनी ज़िद और हट धर्मी की वजह से क़यादत के रुतबे से मह़रूम हो गया हो। ऐसे इंसान का रवैय्या हमेशा मनफ़ी रहेगा कि "चूँकि में नाकाम हो रहा हूँ इस लिए हर एक भी नाकाम हो जाए"
- इन लोगों को मुआ़फ़ कर दो और दरगुज़र करो, अपने काम पर ख़ूब तवज्जोह दो।
- ...حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ: दुश्मनों के ख़िलाफ़ अल्लाह ख़ुद ज़रूरी कार्रवाई करेगा, वह हर चीज़ पर मुकम्मल क़ुदरत रखता है। वह उन्हें सिर्फ़ अपनी ग़ल्तियों को दरुस्त करने के लिए मोहलत दे रहा है।
- ...وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ: बेहतर से बेहतर अंदाज़ में नमाज़ें पढ़ कर, सदक़ात व ख़ैरात दे कर और नेक काम कर के अपने आप में सुधार पैदा करने पर तवज्जोह दीजिए। आपने आख़िरत के लिए क्या किया है उस की फ़िक्र कीजिए।
- اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ: अपने अंदर इस एह़सास को हमेशा ज़िंदा रखिए कि अल्लाह हर वक़्त और हर ह़ालत में आप को देख रहा है।

www.understandquran.com

ह़दीसः ह़ज़रत अ़बदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ब्यान करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने जब ह़ज़रत मुआ़ज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन भेजा तो फ़रमाया कि तुम उन्हें इस कलिमे की गवाही की दावत देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और यह कि मैं (मोह़म्मद ﷺ) अल्लाह का रसूल हूँ। अगर वह लोग यह बात मान लें तो फिर उन्हें बताना कि अल्लाह तआ़ला ने उन पर रोज़ाना पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। अगर वह लोग यह बात भी मान लें तो फिर उन्हें बताना कि अल्लाह तआ़ला ने उन के माल पर कुछ सदक़ा फ़र्ज़ किया है जो उन के मालदार लोगों से ले कर उन्हीं के मोह़ताजों में लौटा दिया जाएगा। (बुख़ारीः **1395**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- लोगों के मनफ़ी रवय्ये की फ़िक्र में पड़ कर अपनी सलाह़ियत व ताक़त को बर्बाद मत कीजिए।
- किस तरह़ अच्छे काम कर के खुद को बेहतर बनाया जा सकता है इस पर तवज्जोह दीजिए।
- इस एह़सास को हमेशा ज़िंदा रखिए कि अल्लाह हमें हर वक़्त और हर ह़ाल में देख रहा है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हमारी मदद फ़रमा कि हम दुश्मनों और उन की साज़िशों के बारे में बातें करने के बजाए अपने आप को बेहतर बनाने पर तवज्जोह दे सकें।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं ग़ल्तियों और कोताहियों की पहचान कर के अपने आप को और मुआ़शरे को बेहतर बनाने का प्लान बनाऊँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः मशक़ की आसानी के लिए इन आयात में पहले सिर्फ़ तीन ह़र्फ़ी सह़ीह़ अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए, फिर उन्ही आयात में शुरूअ़ से आख़िर तक कम्ज़ोर हूरूफ़ वाले अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
दर गुज़र करना	صَفْح	مَصْفُوْح	صَافِح	اِصْفَحْ	يَصْفَحُ	صَفَحَ	ص ف ح / ف	8
देखना	بَصَر	مَبْصُوْر	بَصِيْر	اُبْصُرْ	يَبْصُرُ	بَصُرَ	ب ص ر / ک	66
मुआ़फ़ करना	عَفْو	مَعْفُوّ	عَافٍ	اُعْفُ	يَعْفُو	عَفَا	ع ف و / دع	30
आना	إِتْيَان	مَأْتِيّ	اٰتٍ	اِئْتِ	يَأْتِيْ	أَتٰى	أ ت ي / هد	275
चाहना	مَوَدَّة	مَوْدُوْد	وَادّ	وَدَّ	يَوَدُّ	وَدَّ	و د د / مسـ	25
लौटाना	رَدّ	مَرْدُوْد	رَادّ	رُدَّ	يَرُدُّ	رَدَّ	ر د د / ظن	44
वाज़ेह़ होना	تَبَيُّن	مُتَبَيَّن	مُتَبَيِّن	تَبَيَّنْ	يَتَبَيَّنُ	تَبَيَّنَ	ب ي ن / تد+	18
आगे भेजना	تَقْدِيْم	مُقَدَّم	مُقَدِّم	قَدِّمْ	يُقَدِّمُ	قَدَّمَ	ق د م / عل+	27

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
हुक्म	أُمُوْر	أَمْر
नमाज़	صَلَوَات	صَلَاة

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 16d जन्नत सिर्फ़ यहुद व नसारा को? (अल-बक़राः111-112)

وَقَالُوْا	لَنْ يَّدْخُلَ	الْجَنَّةَ	اِلَّا	مَنْ كَانَ هُوْدًا
और उन्होंने कहा	हरगिज़ दाख़िल न होगा	जन्नत में	सिवाए	जो हो यहूदी

اَوْ نَصٰرٰى ؕ	تِلْكَ	اَمَانِيُّهُمْ ؕ	قُلْ	هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ	اِنْ كُنْتُمْ
या नसरानी,	यह	उन की (बातिल) ख़्वाहिशें हैं,	कह दीजिए	तुम लाओ अपनी दलील	अगर तुम हो

صٰدِقِيْنَ (111)	بَلٰى ۚ	مَنْ اَسْلَمَ	وَجْهَهٗ	لِلّٰهِ	وَهُوَ مُحْسِنٌ	فَلَهٗٓ
सच्चे।	क्यों नहीं	जिस ने झुका दिया	अपना चेहरा	अल्लाह के लिए	और वह नेकोकार हो	तो उसके लिए है

اَجْرُهٗ	عِنْدَ رَبِّهٖ ۪	وَلَا خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ	وَلَا هُمْ	يَحْزَنُوْنَ (112)
उसका अज्र	उसके रब के पास,	और न कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर	और न ही	वह ग़मगीन होंगे।

मुख़्तसर शरह

- ...وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ: हर कोई यह दावा कर सकता है कि सिर्फ़ वही जन्नत में दाख़िल होगा। यहूद और नसारा ने भी यही दावा किया था ह़ालाँकि वह सच्ची हिदायत से दूर हो चुके थे।
- ...قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ: कुरआन कहता है: लाओ अपनी दलील! सिर्फ़ दावा कर लेना या ख़ाहिश कर लेना काफ़ी नहीं है।
- ...بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ: जो कोई जन्नत को ह़ासिल करने के लिए मेह़नत करे उसके लिए जन्नत एक बेहतरीन और सब के लिए बराबर का मौक़ा है। शर्त सिर्फ़ यह है कि अल्लाह के ताबेअ़ हो जाओ और ''मोह़सिन'' (नेक काम करने वाले) बन जाओ। इस के सिवा कोई और रास्ता नहीं है। दरह़क़ीक़त जन्नत एक ऐसा अहम तरीन ह़दफ़ है जिसे ह़ासिल करने के लिए इंसान को ख़ुद को मुकम्मल तौर पर वक़्फ़ कर देना होता है।
- ''मोह़सिन'' की ख़ूशी को मह़सूस कीजिए जिसे क़्यामत के दिन इंआ़म के तौर पर जन्नत से नवाज़ा जाएगा।
- ''मोह़सिन'' एह़सान से बना है, यानी बेहतरीन काम करना। आप उस वक़्त तक अच्छा काम करने वाले नहीं बन सकते जब तक कि आप सुन्नत की और रसूलुल्लाह ﷺ के बताए हुए रास्तों की पैरवी न करें।
- ...فَلَهٗٓ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ: जो इंसान ख़ुद को अल्लाह के ताबेअ़ कर दे और मोह़सिन बन जाए उसके लिए यहाँ दो अज़ीमुश्शान इंआ़म ब्यान किए गए हैं
  - कोई ख़ौफ़ नहीं: उस चीज़ का जो क़्यामत में पेश आने वाली है।
  - कोई ग़म नहीं: माज़ी में छूट जाने वाली चीज़ का या होने वाले किसी नुक़सान का।
- **मुह़ासिबा कीजिए:** नेक कामों के करते वक़्त अपनी नीयत का जाएज़ा लीजिए। कहीं रियाकारी का जज़्बा तो नहीं है? क्या जब लोग नेक कामों पर मेरी तारीफ़ करते हैं तो मैं ख़ुश होता हूँ या नहीं करते हैं तो मुझे बुरा लगता है? चाहे मेरी नीयत कितनी ही साफ़ क्यों न हो, क्या मैं तमाम नेक काम सुन्नत के मुताबिक़ करता हूँ?

ह़दीस: ह़ज़रत अबू याला शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया ''अक़्लमंद इंसान वह है जो अपने नफ़्स का मुह़ासिबा करे और मौत के बाद की ज़िंदगी के लिए अ़मल करे। और आजिज़ है वह जो अपने नफ़्स को ख़ाहिशात के पीछे लगा दे फिर अल्लाह से तमन्नाएँ करता रहे। (इब्ने माजाः **4260**)

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- सिर्फ़ तमन्नाएँ और ख़ाहिशें किसी को भी जन्नत में दाख़िल नहीं कर सकती।
- जन्नत में दाख़िले की शर्तें यह हैं किः
  1. इख़्लास व ईमान-दारी इख़्तियार की जाए और
  2. सुन्नत के मुताबिक़ अ़मल किया जाए।

दुआः ऐ अल्लाहः हमारी मदद फ़रमाईए कि हम भी मोह़सिनों में से बन जाएँ।

प्लान इन्शा अल्लाह! मैं अपने आमाल को चेक करता रहूँगा और सुन्नत पर अ़मल करने का एहतेमाम करूँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
सच्चा होना	صِدْق	مَصْدُوْق	صَادِق	اُصْدُقْ	يَصْدُقُ	صَدَقَ	ص د ق / ذ	90
बदला देना	أَجْر	مَأْجُوْر	اٰجِر	اُؤْجُرْ/جُرْ	يَأْجُرُ	أَجَرَ	أ ج ر / ذ	94
ग़मगीन होना	حَزَن	مَحْزُوْن	حَزِن	اِحْزَنْ	يَحْزَنُ	حَزِنَ	ح ز ن / سـ	33
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَايِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل / قا	1719
होना	كَوْن	-	كَايِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن / قا	1358
डरना	خَوْف	مَخُوْف	خَايِف	خَفْ	يَخَافُ	خَافَ	خ و ف / خا	118
हुक्म मानना	إِسْلَام	مُسْلَم	مُسْلِم	أَسْلِمْ	يُسْلِمُ	أَسْلَمَ	س ل م / أسـ+	72
अच्छा करना	إِحْسَان	مُحْسَن	مُحْسِن	أَحْسِنْ	يُحْسِنُ	أَحْسَنَ	ح س ن / أسـ+	74

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
आरज़ू	أَمَانِيّ	أُمْنِيَّة
दलील, सुबूत	بَرَاهِيْن	بُرْهَان
चेहरा	وُجُوْه	وَجْه
बदला, अज्र	أُجُوْر	أَجْر

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 17a यहूद व नसारा लड़ें आपस में (अल-बक़रा:113)

मुतालआ के बाद तल्क़ीन दुआ तसव्वुर एहसास एहतिसाब प्लान

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ	لَيْسَتِ النَّصٰرٰى	عَلٰى شَيْءٍ	وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى
और कहा यहूदीयों ने	नहीं हैं ईसाई	किसी चीज़ पर,	और कहा ईसाईयों ने

لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ	عَلٰى شَيْءٍ	وَّهُمْ يَتْلُوْنَ	الْكِتٰبَ	كَذٰلِكَ	قَالَ
नहीं हैं यहूदी	किसी चीज़ पर,	हालाँकि वह सब पढ़ते हैं	किताब,	इसी तरह	कहा

الَّذِيْنَ	لَا يَعْلَمُوْنَ	مِثْلَ قَوْلِهِمْ	فَاللّٰهُ يَحْكُمُ	بَيْنَهُمْ	يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
उन लोगों ने जो	इल्म नहीं रखते	मिसल उनके क़ौल के,	सो अल्लाह फ़ैसला करेगा	उनके दरमियान	क़्यामत के दिन

فِيْمَا	كَانُوْا	فِيْهِ	يَخْتَلِفُوْنَ (113)
जिस में	वह थे	उस में	इख़्तिलाफ़ करते।

मुख़्तसर शरह

- ...وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى: गुज़िश्ता आयात में अल्लाह ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ कहा गया यहूद व नसारा का यह जुमला नक़्ल किया था कि सिर्फ़ वही जन्नत में दाख़िल होंगे। इस दावे में वह मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुत्तहिद हैं, लेकिन जब उन के आपसी तअ़ल्लुक़ात की बात आती है तो एक दूसरे पर यह इल्ज़ाम लगाते हैं कि तुम्हारे पास कोई दलील नहीं है। जिसका मतलब यह है कि इस्लाम के ख़िलाफ़ उन का मौक़िफ़ सच्चाई और ईमानदारी पर मबनी नहीं है।
- ...وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ: यहूद के पास ऐसी किताब मौजूद थी जिस में ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की आमद का ज़िक्र था फिर भी वह ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान न लाए। नसारा ने अपने अ़क़ीदे को इस ह़द तक बिगाड़ दिया कि वह ईसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा बना बैठे। उन्होंने यह सब अपनी किताब को पढ़ने के दौरान ही किया।
- यहूद व नसारा दोनों ही अल्लाह की जानिब से नाज़िल की गई किताबें पढ़ते हैं, लेकिन वह अपने आप पर और अपनी निजात पर तवज्जोह देने के बजाए दूसरों पर उंगलियाँ उठाने में लगे हुए हैं।
- ...كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ: उन लोगों के बिगड़े हुए अ़क़ायद और बुरी ह़रकतों को देख कर मुशरिकों ने--जिनके पास कोई किताब नहीं थी--इन यहूद व नसारी को बे-बुनियाद क़रार दे दिया।
- ...فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ: वह दूसरों के मुतअ़ल्लिक़ फ़ैसले करने में इतना मशग़ूल हो गए कि यह बात भी भूल बैठे कि एक दिन उन्हें भी ह़िसाब व किताब और फ़ैसले के लिए जाना है।
- ख़ुद उम्मते मुस्लिमा में भी बहुत सी जमाअ़तें और ग्रुप हैं जो आपस में एक दूसरे को ग़लत क़रार देते हैं; ह़ालाँकि सब के सब क़ुरआन पढ़ते हैं।
- मुसलमानों के आपस में एक दूसरे को ग़लत क़रार देने की वजह से वह लोग भी मुसलमानों पर हंसते हैं जिनके पास कोई किताब नहीं है और वह हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं।
- कौन ग़लत है यह देखने और लोगों का नाम रखने के बजाए हमें पहले ख़ुद अपने आपको इख़्तिलाफ़ात से बचाना चाहिए, साथ ही साथ ईमान और नेक-आमाल का सह़ीह़ नज़रिया लोगों में फैलाने पर काम करना चाहिए।
- तसव्वुर/एह़सासः इम्तिह़ान ह़ाल में बैठे किसी ऐसे तालिब-इल्म का तसव्वुर कीजिए जो पूरा वक़्त सिर्फ़ यही देखने में ख़र्च कर रहा हो कि कौन जवाबात लिख रहा है और कौन नहीं। सोचिए कि वह ख़ुद का कितना नुक़्सान कर रहा है!

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- यहूद व नसारा आपस में एक दूसरे का यह कह कर मज़ाक़ उड़ाते कि ''तुम्हारे पास कुछ भी सच्चाई नहीं है''
- यहूद व नसारा के इख़्तिलाफ़ात को देख कर आम इंसान भी सोचने और बोलने लगता है कि वह इन यहूद व नसारा से बेहतर हैं।
- आख़िरत के दिन अल्लाह फ़ैसला करेगा कि कौन सहीह़ था।
- हमें दूसरों की ग़ल्तियों पर निगाह रखने के बजाए अपने आमाल की फ़िक्र करना चाहिए।

दुआः ऐ अल्लाह! इस उम्मत को कुरआन से जोड़ने में हमारी मदद फ़रमा, हम खुद को बेहतर से बेहतर बनाएँ इस में हमारी मदद फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं खुद को बेहतर से बेहतर बनाने पर तवज्जोह दूँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
जानना	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	ع ل م / سـ	518
फ़ैसला करना	حُكْم	مَحْكُوْم	حَاكِم	اُحْكُمْ	يَحْكُمُ	حَكَمَ	ح ك م / ذ	80
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَايِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق ول / قا	1719
तिलावत करना	تِلَاوَة	مَتْلُوّ	تَالٍ	اُتْلُ	يَتْلُوْ	تَلَا	ت ل و / دعـ	63
इख़्तिलाफ़ करना	اِخْتِلَاف	مُخْتَلَف	مُخْتَلِف	اِخْتَلِفْ	يَخْتَلِفُ	اِخْتَلَفَ	خ ل ف / اِخـ+	52

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
चीज़	أَشْيَاء	شَيْء
किताब	كُتُب	كِتَاب
क़ौल, बात	أَقْوَال	قَوْل

www.understandquran.com

ज़ालिम रोकें मस्जिद से (अल-बक़रा:114-115)

मुतालआ के बाद तल्लीन दुआ तसव्वुर एहसास प्लान एहतिसाब

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ

उस से जिस ने मना किया	और कौन ज़्यादा ज़ालिम है

مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ

अल्लाह की मसाजिद से	कि ज़िक्र किया जाए	उन में	उस का नाम	और कोशिश की	उस के उजाड़ने में,

اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ لَهُمْ

यह लोग	न था उनके लिए कि	वह दाख़िल होते वहाँ	मगर	डरते हुए,	उनके लिए

فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ (114) وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ

दुनिया में	रुस्वाई	और उनके लिए	आख़िरत में	बड़ा अज़ाब।	और अल्लाह ही के लिए हैं	मशरिक़

وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (115)

और मग़रिब,	सो जिस तरफ़	तुम मुँह करोगे	तो वहाँ ही है	अल्लाह का चेहरा,	बेशक अल्लाह	वुसअ़त वाला	जानने वाला है।

मुख़्तसर शरह

- وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ...: सब से बेहतरीन अ़मल अल्लाह तआ़ला को याद करना है और सब से बदतरीन काम किसी को अल्लाह की याद से रोकना है। अल्लाह का ज़िक्र तमाम अच्छाईयों की बुनियाद है, इस लिए कि हर नेक और अच्छे काम की इब्तिदा अल्लाह तआ़ला से तअ़ल्लुक़ से ही होती है।
- मस्जिद बहुत ही मुक़द्दस व बा-बरकत जगह होती है और इस का बहुत ज़्यादा एह़तेराम करना चाहिए। मस्जिद की बे-एह़तेरामी करना बड़े और घिनौने गुनाहों में से एक है।
- मक्का के मुशरिकीन मुसलमानों को काअ़बा (ह़रम) मैं दाख़िल होने से रोकते थे। वह बड़े मुजरिम लोग थे।
- **तसव्वुर/एह़सास:** उस सूरते ह़ाल का तसव्वुर कीजिए जब सह़ाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह के घर की ज़ेयारत और वहाँ इबादत करना चाहते होंगे लेकिन उन को रोक दिया जाता होगा।
- اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ...: लोगों को अल्लाह के ज़िक्र से रोकने वाले और मस्जिदों को जाने से रोकने वाले लोग पत्थर दिल, ज़ालिम और मुजरिम हैं। उन का मुक़द्दर इस दुनिया में ज़िल्लत व रूसवाई और आख़िरत में सख़्त तरीन अ़ज़ाब है।
- فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ-: रसूलुल्लाह ﷺ ने कुछ वक़्त तक बैतुल-मुक़द्दस की जानिब रूख़ कर के नमाज़ें अदा फ़रमाईं, उसके बाद क़िबला तबदील हो गया। उस वक़्त से मुसलमान काअ़बा की जानिब रूख़ कर के नमाज़ पढ़ते हैं, चाहे वह दुनिया के किसी भी ह़िस्से में हों। इस तरह़ से तमाम जेहतें अल्लाह ही के लिए हैं।
- जहाँ तक क़िबला की बात है तो हम नमाज़ में काअ़बा की जानिब रुख़ करते हैं। ट्रेन या हवाई जहाज़ में सफ़र के दौरान अगर क़िबला की तरफ़ रूख़ करना मुम्किन न हो या कोई माक़ूल उज़्र हो तो उसी जानिब रूख कर के नमाज़ पढ़ लें जिस तरफ़ रूख़ कर के आप बैठे हैं, लेकिन नमाज़ कभी न छोड़ें।

ह़दीस ह़ज़रत अबूहोरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ''शहरों में अल्लाह तआ़ला के यहाँ सब से ज़्यादा पसंदीदा जगह मस्जिदें हैं और शहरों में सबसे ज़्यादा नापसंदीदा जगह बाज़ार हैं''। (मुस्लिम: 671)

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- ज़ालिम लोग इबादत करने वालों को मस्जिद में दाख़िल होने से रोकते हैं।
- अल्लाह उन्हें दुनिया में भी ज़लील करेगा और आख़िरत में उन्हें सज़ा देगा।
- मशरिक़ व मग़रिब अल्लाह ही के लिए है।

दुआः ऐ अल्लाह! मुझ में मस्जिदों से मुहब्बत पैदा फ़रमाईए और पाँच वक़्त की नमाज़ें मस्जिद में अदा करने में मेरी मदद फ़रमाईए।

प्लान इन्शा अल्लाह! मैं मस्जिद में आने वाले मुख़्तिलिफ़ लोगों से मुलाक़ातें करूँगा और लोगों को मस्जिद में आने की दावत देने की कोशिशें करूँगा।

अस्मा और अफ़्आलः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आल नीचे दिए गए है।

अफ़्आलः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
रोकना	مَنْع	مَمْنُوْع	مَانِع	اِمْنَعْ	يَمْنَعُ	مَنَعَ	م ن ع / ف	14
वीरान होना	خَرَاب	-	خَرِب	اِخْرَبْ	يَخْرَبُ	خَرِبَ	خ ر ب / س	1
अ़ज़ीम होना	عِظَم	-	عَظِيْم	اُعْظُمْ	يَعْظُمُ	عَظُمَ	ع ظ م / ک	107
कोशिश करना	سَعْي	–	سَاعٍ	اِسْعَ	يَسْعٰى	سَعٰى	س ع ي / سع	30
डरना	خَوْف	مَخُوْف	خَايِف	خَفْ	يَخَافُ	خَافَ	خ و ف / خا	118
फेरना	تَوْلِيَة	مُوَلًّى	مُوَلٍّ	وَلِّ	يُوَلِّيْ	وَلّٰى	ظ ل م / ض	31

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
ज़ुलम करने वाला	أَظْلَم ↑	ظَالِم
चेहरा	وُجُوْه	وَجْه

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 17c इसाई बनाएँ बेटा अल्लाह का (अल-बक़राः116-117)

मुतालआ़ के बाद तल्क़ीन दुआ़ तसव्वुर एहसास प्लान एहतिसाब

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

जो आसमानों में	उसी के लिए है	बल्कि	वह पाक है,	औलाद	बना ली है अल्लाह ने	और उन्होंने कहा

وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ (116) بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और ज़मीन का	आसमानों	पैदा करने वाला है	आजिज़ी करने वाले हैं।	सब उसी के लिए	और ज़मीन (में) है,

وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ (117)

तो वह (फ़ौरन) हो जाता है।	तू हो जा	तो सिर्फ़ कहता है उस को	और जब वह फ़ैसला करता है किसी काम का

मुख़्तसर शरह़

- ...وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا: अल्लाह ने बेटा बना लिया है और अल्लाह का बेटा है दोनों में फ़र्क़ है। नसारा के बाज़ ग्रुप यह अक़ीदा रखते हैं कि अल्लाह का बेटा है, जब कि दूसरे ऐसे भी हैं जो यह अक़ीदा रखते हैं कि अल्लाह ने बेटा बना लिया है यानी गोद लिया है। यह दोनों ही ग्रुप ग़लत हैं।
- كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ: यानी आजिज़ी के साथ फ़रमाँबरदारी करने वाले। तमाम की तमाम मख़लूक़ात अल्लाह के मातह़त हैं और उस की इबादत में मशग़ूल हैं।
- जब शिर्क का ज़िक्र होता है तो अल्लाह तआ़ला "سُبْحَانَهٗ" कहता है, यानी अल्लाह तमाम कमज़ोरीयों, नक़ायस और ग़लतीयों से पाक है।
- हम इंसानों को औलाद की ज़रूरत पड़ती है, इस लिए कि:
  1. हम थक जाते हैं तो बच्चे हमें खुश करते हैं।
  2. हम बूढ़े हो जाते हैं तो हमारी औलाद हमारी मदद करती है।
  3. हम मर जाते हैं तो हमारी औलाद हमारे नाम और विरासत को बाक़ी रखती है।
- अल्लाह तआ़ला को इन में से किसी भी चीज़ की ज़र्रा बराबर भी ज़रूरत नहीं वह ज़मीन और आसमानों का ख़ालिक़ व मालिक है। हर चीज़ उस का हुक्म सुनते ही फ़ौरन उस की इताअ़त करती है।
- ...بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ: वह ज़ात जो बग़ैर किसी चीज़ के कोई चीज़ बना दे। (लफ़्ज़ बिदअ़त भी इसी से बना है)।
- ...يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ: अल्लाह की क़ुदरत और ताक़त हर चीज़ को घेरे हुए है। जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो वह सिर्फ़ यह कहता है कि "हो जा" और वह काम हो जाता है। इसी लिए उसे किसी बेटे की कोई ज़रूरत नहीं है।
- बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने वाला एक छोटा सा घर बनाने में सालों लग जाते हैं तसव्वुर कीजिए कि इतनी बड़ी ज़मीन और आसमानों को बनाना कितना बड़ा काम है, और वह भी बग़ैर किसी चीज़ के पैदा करना! बेशक अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत हमारे तसव्वुरात से बहुत आगे है।

www.understandquran.com

- **तसव्वुर और एहसास:** यह पूरी कायनात और इस में मौजूद तमाम मख़लूक़ात अल्लाह तआ़ला की फ़रमाँबरदार हैं। सब के सब अल्लाह की तस्बीह़ ब्यान करते हैं और उस की तारीफ़ करते हैं, सिवाए कुछ ऐसे इंसानों के जो अल्लाह की ना-फ़रमानी करते हैं और उस के साथ किसी को बेटा या किसी को शरीक मानते हैं। इस के बावजूद देखिए कि अल्लाह कितना रह़ीम है! वह अल्लाह के बारे में इतना बड़ा झूट बोलते हैं फिर भी वह उन्हें मह़फ़ूज़ रखता है, उन्हें रिज़्क़ अ़ता करता है और सेह़त से नवाज़ता है।

ह़दीस: ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: ''कोई भी लोगों की जानिब से बोली गई तकलीफ़-दह बात पर जो उस ने सुनी हो वह अल्लाह से ज़्यादा सब्र करने वाला नहीं। लोग उस (अल्लाह) के लिए औलाद ठहराते हैं और इस के बावजूद वह उन्हें तन्दरुस्ती से नवाज़ता है और उन्हें रोज़ी अ़ता करता है। (बुख़ारी **6099**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लान: इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- नसारा यह बात कह कर बहुत ही बड़ा झूट बोलते हैं कि अल्लाह का बेटा है।
- अल्लाह बहुत ही ताक़त व क़ुदरत वाला है। जब वह किसी काम का इरादा करता है तो वह सिर्फ़ "كُنْ" (हो जा) कहता है और वह काम हो जाता है।

दुआ़: ऐ अल्लाह: हमें शिर्क से मह़फ़ूज़ रख और हम तेरी पाकी ब्यान करें इस में हमारी मदद फ़रमा।

प्लान: इन्शा अल्लाह! मैं तौह़ीद का पैग़ाम जहाँ तक मुम्किन हो ज़रूर पहुँचाऊँगा।

अस्मा और अफ़्आ़ल: इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
फ़रमाँबरदारी करना	قُنُوْت	مَقْنُوْت	قَانِت	اُقْنُتْ	يَقْنُتُ	قَنَتَ	ق ن ت / ذ	13
पैदा करना	بَدْع	–	بَدِيْع	اِبْدَعْ	يَبْدَعُ	بَدَعَ	ب د ع / ف	2
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَايِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل / قا	1719
फ़ैसला करना	قَضَاء	مَقْضِيّ	قَاضٍ	اِقْضِ	يَقْضِيْ	قَضٰى	ق ض ي / هد	63
हुक्म देना	أَمْر	مَأْمُوْر عَلَيْهِ	اٰمِر	مُرْ	يَأْمُرُ	أَمَرَ	أ م ر / ذ	231
होना	كَوْن	-	كَايِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن / قا	1358
बनाना	اِتِّخَاذ	مُتَّخَذ	مُتَّخِذ	اِتَّخِذْ	يَتَّخِذُ	اِتَّخَذَ	أ خ ذ / اِخ+	128

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
बेटा	أَوْلَاد	وَلَد
आसमान	سَمٰوَات	سَمَاء
काम, मुआ़मिला	أُمُوْر	أَمْر

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 17d बे-इल्म कहें: बात करे अल्लाह (अल-बक़रा:118-119)

मुतालआ के बाद
तल्लीन दुआ
तसव्वुर एहसास
प्लान एहतिसाब

وَقَالَ الَّذِيْنَ

जो लोग	और कहा

لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ

इसी तरह़	कोई निशानी,	या हमारे पास आती	हम से कलाम करता अल्लाह	क्यों नहीं	इल्म नहीं रखते

قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ

कहा	उन लोगों ने जो इन से पहले (थे)	जैसी उन की बात,	एक जैसे हो गए उन के दिल,

قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ (118) اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

हम ने वाज़ेह़ कर दीं	निशानीयाँ	लोगों के लिए	(जो) यक़ीन रखते हैं।	बेशक हम	हमने आप को भेजा	ह़क़ के साथ

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ (119)

ख़ुशख़बरी देने वाला	और डराने वाला,	और न आप से पूछा जाएगा	दोज़ख़ वालों के बारे में।

मुख़्तसर शरह़

- قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ...: जब लोग हट-धर्मी और बेईमानी में मुबतिला हो जाते हैं तो इसी तरह़ की बातें करते हैं।
- अगर अल्लाह तआ़ला बराहे रास्त उन से बात कर भी ले, तब भी वह अपनी बदनीयती की वजह से ईमान नहीं लाएंगे।
- अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया जो निशानीयों से भरा है। लोगों को अपने दीन की जानिब दावत देने के लिए अल्लाह के अपने तरीक़े हैं जो ह़िक्मत से भरे हैं, जिन में इंसानों की आज़माईश भी होती है कि वह किस तरह़ से ह़क़ और सच्चाई की दावत को क़बूल करते हैं। ग़ौर व फ़िक्र करने वाले शख़्स के लिए यह निशानीयाँ काफ़ी हैं कि वह अल्लाह तआ़ला पर ईमान ले आए।
- अल्लाह तआ़ला इंसानों के सोचे हुए तरीक़ों के मुताबिक़ अ़मल नहीं किया करता।
- كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ...: समझदार क़िस्म के लोग क़ुरआन की सच्चाई को मानते थे, उन्होंने क़ुरआन के पैग़ाम में कभी कोई शक नहीं किया। अलबत्ता जो लोग सन्जीदा नहीं थे उन में न कोई तबदीली आई और न आएगी। यहाँ तक कि अगर कोई फ़रिश्ता भी खुली निशानीयाँ ले कर आ जाए तब भी उन्हें कोई न कोई कमी नज़र आएगी।
- يُّوْقِنُوْنَ: यानी वह लोग जो मज़बूत ईमान रखते हैं। यह वह लोग हैं जो ह़क़ को तलाश करते हैं और उस को क़बूल करने और उस पर ईमान लाने के लिए बिल्कुल तैयार रहते हैं।
- **यक़ीन:** किसी चीज़ को बहुत मज़बूती से मानना। ऐसी चीज़ जो हमेशा के लिए दिल में रह जाए और उस में कोई शक व शुबहा न हो। इस का दर्जा इल्म से कई गुना ज़्यादा बढ़ा हुआ है।
- اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ...: आज भी अपने आपको ज़हीन कहलाने वाले लोग भी इस क़िस्म के सवालात पूछते हैं कि हमें अल्लाह दिखाओ या यह कि हम कैसे कह सकते हैं कि यह बात अल्लाह ही की जानिब से है। ऐसे लोग पहले ज़माने के उन लोगों ही की तरह़ बर्ताव कर रहे हैं जिन्होंने अपने नबियों के साथ बदसुलूकी की। ऐसे लोगों को क़ुरआन का मुतालआ़ करना चाहिए ताकि वह इस में मौजूद ह़क़ और सच्चाई को साफ़ तौर पर देख सकें।

www.understandquran.com

- जो शख़्स क़ुरआन की आयात में तदब्बुर करता है वह साफ़ तौर पर यह बात महसूस कर सकता है कि यह किताब बिल्कुल सच्ची है और अल्लाह की जानिब से दिया हुआ एक ज़िंदा मोजिज़ा है।

हदीसः इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने ब्यान किया कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ सफ़ा पहाड़ी पर चढ़े और पुकारा या सबाहा! (लोगो दौड़ो) इस आवाज़ पर क़ुरैश जमा हो गए और पूछा क्या बात है? नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया कि तुम्हारी क्या राय है अगर मैं तुम्हें बताऊँ कि दुश्मन सुबह के वक़्त या शाम के वक़्त तुम पर ह़मला करने वाला है तो क्या तुम मेरी बात की तसदीक़ नहीं करोगे? उन्होंने कहा कि हम आपकी तसदीक़ करेंगे। आप ﷺ ने फ़रमाया कि फिर मैं तुमको सख़्त तरीन अ़ज़ाब (दोज़ख़) से पहले डराने वाला हूँ। (बुख़ारीः **4801**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- जाहिल लोग कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला बराहे रास्त हम से ख़िताब क्यों नहीं करता या निशानीयाँ सीधे हमें क्यों नहीं मिलती?
- इस से पहले भी गुमराह लोगों ने इस क़िस्म के सवालात किए थे।
- एक नबी का काम अपनी क़ौम तक पैग़ाम को पहुँचाना होता है; वह उन की निजात का ज़िम्मेदार नहीं होता।

दुआ़ः ऐ अल्लाह हमारी मदद फ़रमा कि हम पक्के मोमिन बन जाएँ।

प्लान इन्शा अल्लाह! मैं अपने ईमान में इज़ाफ़े के लिए क़ुरआन का मुतालआ़ करूँगा और उस में ग़ौर व फ़िक्र करूँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
जानना	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	ع ل م / س	518
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَابِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل / قا	1719
आना	إِتْيَان	مَأْتِيّ	اٰتٍ	اِئْتِ	يَأْتِيْ	أَتٰى	أ ت ي / هد	275
पूछना	سُؤَال	مَسْئُوْل	سَائِل	سَلْ	يَسْئَلُ	سَأَلَ	س أ ل / ف	119
बात करना	تَكْلِيْم	مُكَلَّم	مُكَلِّم	كَلِّمْ	يُكَلِّمُ	كَلَّمَ	ك ل م / عل+	21
एक जैसा होना	تَشَابُه	–	مُتَشَابِه	تَشَابَهْ	يَتَشَابَهُ	تَشَابَهَ	ش ب ه / تدا+	10
वाज़ेह़ करना	تَبْيِيْن	مُبَيَّن	مُبَيِّن	بَيِّنْ	يُبَيِّنُ	بَيَّنَ	ب ي ن / عل+	48
यक़ीन करना	إِيْقَان	مُوْقَن	مُوْقِن	أَيْقِنْ	يُوْقِنُ	أَيْقَنَ	ي ق ن / أس+	17

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
कहना	أَقْوَال	قَوْل
क़ौम, लोग	أَقْوَام	قَوْم
साथी, वाला	أَصْحَاب	صَاحِب

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 18a राज़ी न हों यहूद व नसारा (अल-बक़रा:120-121)

मुतालआ के बाद: तल्बीग़, दुआ, तसव्वुर एहसास, प्लान, एहतिसाब

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ

उनके दीन की,	आप पैरवी (न) करें	जब तक कि	और न नसारा	यहूदी	आप से	राज़ी न होंगे	और हरगिज़

قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ

बाद	उन की ख़ाहिशात की	आपने पैरवी की	और अगर	हिदायत,	वही	बेशक अल्लाह की हिदायत	कह दें

الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ (120)

और न मददगार।	कोई हिमायत करने वाला	अल्लाह के मुक़ाबले में	नहीं आप के लिए	इल्म,	आप के पास आ गया	उस के जो

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ

ईमान रखते हैं उस पर,	वही लोग	उस की तिलावत का,	जैसा हक़ है	वह उस की तिलावत करते हैं	किताब	हमने दी उन्हें	वह लोग (कि)

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (121)

नुक़सान उठाने वाले हैं।	वही सब (लोग)	इंकार करें उस का	और जो

मुख़्तसर शरह

- ...وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ: रसूलुल्लाह ﷺ यहूद व नसारा को इस्लाम की दावत देने की हर मुम्किन कोशिश करते थे, इस के बावजूद अक्सर लोगों ने और ख़ास तौर पर यहूदीयों (सिवाए चंद लोगों के) ने इस दावत पर कोई तवज्जोह न दी। अल्लाह तआला अपने नबी ﷺ से फ़रमा रहा है कि वह लोग आप से उस वक़्त तक राज़ी नहीं होंगे जब तक कि आप इस्लाम से किनारा न कर लें और उन के दीन की इत्तिबा न कर लें।
- उन की इस तमन्ना के जवाब में अल्लाह ने नबी करीम ﷺ को यह हुक्म दिया कि उन लोगों को बता दें कि सच्ची हिदायत तो अल्लाह की हिदायत है, और यही वजह है कि तुम्हारी तमन्नाओं की पैरवी मैं नहीं कर सकता हूँ।
- किसी को ख़ुश करने की ख़ातिर उस की आरज़ू और तमन्ना को पूरा करने में लग जाना दर-हक़ीक़त अपने आप को ख़ुदकुशी की तरफ़ धकेलने जैसा है। ऐसा इंसान ख़ुद भी हिदायत से दूर हो जाता है और अल्लाह की हिफ़ाज़त से भी महरूम हो जाता है।
- ...اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ: वह अहले किताब जो अपनी किताब की दरुस्त अंदाज़ में तिलावत करते हैं वह इस्लाम को मान लेंगे। लफ़्ज़ ''तिलावत'' के दो माअ़ना हैं (1) तिलावत करना, पढ़ना, (2) इत्तिबा करना। वह किताब की तालीमात पर ईमान ला कर और अ़मल कर के उस किताब की इत्तिबा करते हैं। यह लोग सच्चे अहले किताब हैं। दरहक़ीक़त यह लोग हज़रत मोहम्मद ﷺ पर भी ईमान ला चुके और इस्लाम में दाख़िल हो चुके।
- ...يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ: हमें कुरआने मजीद के तमाम हुकूक़ अदा करने चाहिए, वह हुकूक़ यह हैं कि उसे तज्वीद के साथ पढ़ा जाए, उसे समझा जाए, उस में तदब्बुर किया जाए, उसे अपनी ज़िंदगी में लाया जाए और उस की तब्लीग़ की जाए।
- अगर कोई शख़्स किताब को दरुस्त अंदाज़ पर पढ़ेगा जिस में तदब्बुर भी शामिल हो तो उसे ईमान की हिदायत मिल जाएगी, और उस के ईमान में इज़ाफ़ा और मज़बूती पैदा होगी।
- हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तिलावत का हक़ यह है कि कुरआन में मौजूद हलाल व हराम की पैरवी की जाए, अल्फ़ाज़ को बदले बग़ैर और ग़लत मफ़हूम ब्यान किए बग़ैर सहीह तिलावत की जाए।

www.understandquran.com

- हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि तिलावत का ह़क़ यह है कि क़ुरआन की जिस तरह़ पैरवी की जानी चाहिए उसी तरह़ पैरवी की जाए।

एक दिलचस्प नक़्ता

- اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ: ''हम ने उन्हें किताब दी''। यह अल्फ़ाज़ आ़म तौर पर उस वक़्त आते हैं जब अल्लाह उन लोगों से राज़ी और ख़ुश हो।
- اُوْتُوا الْكِتٰبَ: ''वह लोग जो किताब दिए गए''। उस वक़्त जब अल्लाह उन लोगों से नाराज़ हो।

तदब्बुर और तज़क्कुर

- कुछ लोग सिर्फ़ इस लिए इस्लाम को पसंद नहीं करते कि वह सच्चाई की इत्तिबा नहीं करना चाहते हैं, या यह कि उन्हें ग़लत मालूमात मिली हैं या इस लिए कि शैतान ने उन्हें कन्फ़ियूज़ कर दिया है। ऐसे लोग अपने मीडीया चैनल्स के ज़रिया इस्लाम के तअ़ल्लुक़ से ग़लत बातें फैलाने की कोशिश करते हैं। मुशरिकीन मक्का ने भी रसूलुल्लाह ﷺ के ख़िलाफ़ इस क़िस्म की कोशिशें की थीं, हमें इस से घबराना या परेशान नहीं होना चाहिए।
- दरअसल ऐसी सूरते ह़ाल हमारे लिए एक मौक़ा हुआ करती है कि हम इस्लाम के सह़ीह़ पैग़ाम को फैलाएँ। हमें ह़िजाब, एक से ज़ायद निकाह, ख़वातीन के मुसावात वग़ैरा के तअ़ल्लुक़ से इस्लाम का सह़ीह़ मौक़िफ़ समझना चाहिए और फिर उसे लोगों के सामने मुनासिब अंदाज़ में पेश करना चाहिए।

ह़दीसः ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया कि उस शख़्स की (मोमिन) की मिसाल जो क़ुरआन की तिलावत करता है संतरे की सी है जिस का मज़ा भी लज़ीज़ होता है और जिस की ख़ुशबू भी बेहतरीन होती है। और जो मोमिन क़ुरआन की तिलावत नहीं करता उस की मिसाल खुजूर की सी है उस का मज़ा तो उम्दा होता है लेकिन उस में ख़ुशबू नहीं होती। और उस बदकार (मुनाफ़िक़) की मिसाल जो क़ुरआन की तिलावत करता है रैह़ाना की सी है कि उस की ख़ुशबू तो अच्छी होती लेकिन मज़ा कड़वा होता है, और उस बदकार की मिसाल जो क़ुरआन की तिलावत भी नहीं करता अंदराइन की सी है जिस का मज़ा भी कड़वा होता है और उस में कोई ख़ुशबू भी नहीं होती। (बुख़ारीः **5020**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- रसूलुल्लाह ﷺ ने लोगों को इस्लाम की दावत देने की बेहतर से बेहतर कोशिश की। अल्लाह तआ़ला ने आप ﷺ को बताया कि वह लोग उस वक़्त तक ख़ुश नहीं होंगे जब तक कि आप उन की पैरवी न कर लें।
- सच्ची हिदायत सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ से है, हमें उस को मज़बूती से थामे रखना चाहिए।
- हमें क़ुरआन की तिलावत दरुस्त अंदाज़ में करना चाहिए, यानी उस की तिलावत के साथ साथ उसकी तालीमात पर अ़मल करना चाहिए।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हमें ईमान पर साबित-क़दम रख। तेरी किताब की पैरवी करने से भटकाने वालों का शिकार बनने से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं अपने आप को तैयार करूँगा ताकि दूसरों को इस्लाम का पैग़ाम बेहतर से बेहतर तरीक़े पर पेश कर सकूँ।

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
नुक़्सान उठाना	خُسْر	مَخْسُوْر	خَاسِر	اِخْسَرْ	يَخْسَرُ	خَسِرَ	خ س ر / سـ	57
राज़ी होना	رِضْوَان	مَرْضِيّ	رَاضٍ	اِرْضَ	يَرْضٰى	رَضِيَ	ر ض ي / رضـ	64
आना	مَجِيْئَة	مَجِيْء	جَاءٍ	جِئْ	يَجِيْءُ	جَاءَ	ج ي أ / زا	277
तिलावत करना	تِلَاوَة	مَتْلُوّ	تَالٍ	اُتْلُ	يَتْلُوْ	تَلَا	ت ل و / دعـ	63
पैरवी करना	اِتِّبَاع	مُتَّبَع	مُتَّبِع	اِتَّبِعْ	يَتَّبِعُ	اِتَّبَعَ	ت ب ع / اِخـ+	140
देना	إِيْتَاء	مُؤْتًى	مُؤْتٍ	اٰتِ	يُؤْتِيْ	اٰتٰى	أ ت ي / أسـ+	274
ईमान लाना	إِيْمَان	مُؤْمَن	مُؤْمِن	اٰمِنْ	يُؤْمِنُ	اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
मज़्हब	مِلَل	مِلَّة
ख़ाहिश	أَهْوَاء	هَوٰى
इल्म	عُلُوْم	عِلْم

www.understandquran.com

बनीइसराईल! याद करो नेअ़मतें (अल-बक़राः122-123)

يٰبَنِيٓ اِسْرَآءِيْلَ

ऐ बनीइसराईल!

اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ 122

तुम याद करो	मेरी नेअ़मत को	जो	मैंने इंआ़म की तुम पर	और यह कि मैं ने	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	ज़माने वालों पर।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا

और डरो	उस दिन से	बदला न होगा	कोई शख़्स	किसी शख़्स के लिए	कुछ	और न क़बूल किया जाएगा	उस से

عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ 123

कोई मुआ़विज़ा	और न उसे नफ़ा देगी	कोई सिफ़ारिश	और न	उन सब की मदद की जाएगी

मुख़्तसर शरहः

- ...يٰبَنِيٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا: बहुत सारे तारीख़ी वाकेआ़त ब्यान करने के बाद अल्लाह तआ़ला दोबारा बनीइसराईल को अपने एह़सानात याद दिला रहा है। अल्लाह तआ़ला ने उन में कई नबियों को भेजा, नीज़ उन में से बाज़ को बादशाह और ह़ाकिम बनाया। यह सारे इंआ़मात उन्हें न ही उन की ज़ाती मेह़नत की वजह से मिले थे और न ही वह उस के मुस्तह़िक़ थे, बल्कि यह इंआ़मात सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की रह़मत और उस के फ़ज़्ल की वजह से थे।
- अल्लाह के इंआ़मात को याद रखना हम को अल्लाह से क़रीब होने, मुख़लिस बनने और उस का फ़रमाँबरदार बनने में मदद करता है।
- अल्लाह के अह़काम की पैरवी कर के अल्लाह का शुक्र अदा करने के बजाए वह तकब्बुर पर उतर आए और उन्होंने अल्लाह के पैग़म्बरों का, उस के अह़काम का मज़ाक़ उड़ाया और अपनी बेकार रस्मों और ख़ुराफ़ात पर फ़ख़्र करने लगे। उन्हें तो रसूलुल्लाह ﷺ के पैग़ाम को क़बूल कर लेना चाहिए था लेकिन इस के बजाए वह आप ﷺ के मुख़ालिफ़ बन गए।
- सोचिए कि बनीइसराईल की तरह़ हमें भी बहुत सारे इंआ़मात से नवाज़ा गया है। सब से अहम इंआ़म यह है कि हमें क़ुरआन अ़ता किया गया और हम को रसूलुल्लाह ﷺ की उम्मत में रखा गया।
- ...وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ: अपनी तवज्जोह भटकने मत दीजिए क़्यामत के दिन को हमेशा निगाहों के सामने रखिए। अगर कोई इंसान आख़िरत के दिन को याद रखेगा तो शैतान उसे कभी गुमराह नहीं कर सकेगा और वह हमेशा ह़क़ की पैरवी करेगा चाहे वह कितना ही मुश्किल क्यों न हो या उस की ख़ाहिशात के ख़िलाफ़ क्यों न हो।
- उस दिन
  - कोई इंसान किसी दूसरे की जगह ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा,
  - दौलत काम न आएगी,
  - कोई सिफ़ारिश फ़ायदा न देगी,
  - अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर कोई भी ताक़त कुछ भी मदद न कर सकेगी।

www.understandquran.com

हदीसः हज़रत अबूहोरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः ''क़्यामत के दिन अल्लाह तआ़ला ज़मीन को अपनी मुट्ठी में ले लेगा, और आसमान को अपने दाएँ हाथ में लपेट लेगा, फिर फ़रमाएगा मैं बादशाह हूँ, कहाँ हैं ज़मीन के बादशाह!!!'' (बुख़ारीः **7382**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- दूसरी तमाम क़ौमों के मुक़ाबले में बनीइसराईल को मुन्तख़ब किया गया था। जहाँ यह उन पर अल्लाह तआ़ला का एक बहुत बड़ा इंआ़म था वहीं एक बड़ी ज़िम्मेदारी भी थी कि अल्लाह के पैग़ाम की पैरवी करना है।
- अल्लाह के इंआ़मात को याद करने से हमें अल्लाह का शुक्र अदा करने और अल्लाह के अह़काम की पैरवी करने में मदद मिलती है।
- क़्यामत का दिन बहुत सख़्त होगा, उस दिन अल्लाह के इलावा कोई मदद करने वाला न होगा। उस दिन को याद रखने से ग़लत जज़्बात व ख़ाहिशात पर क़ाबू पाने में मदद मिलती है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! मुझे अपना शुक्रगुज़ार और फ़रमाँबरदार बंदा बना। क़्यामत के दिन मुझे सिर्फ़ अपने ही फ़ज़्ल व करम से जन्नतुल फ़िरदौस अ़ता फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं अल्लाह के इंआ़मात व एह़सानात याद रखूँगा, ख़ास तौर पर जब भी अलह़मदुलिल्लाह कहूँ और ज़िक्र करूँ।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
क़बूल करना	قَبُوْل	مَقْبُوْل	قَابِل	اِقْبَلْ	يَقْبَلُ	قَبِلَ	ق ب ل / سـ	10
नफ़ा देना	نَفْع	مَنْفُوْع	نَافِع	اِنْفَعْ	يَنْفَعُ	نَفَعَ	ن ف ع / ف	42
सिफ़ारिश करना	شَفَاعَة	مَشْفُوْع	شَافِع	اِشْفَعْ	يَشْفَعُ	شَفَعَ	ش ف ع / ف	25
मदद करना	نَصْر	مَنْصُوْر	نَاصِر	اُنْصُرْ	يَنْصُرُ	نَصَرَ	ن ص ر / ذ	94
बदला देना	جَزَاء	مَجْزِيّ	جَازٍ	اِجْزِ	يَجْزِيْ	جَزٰى	ج ز ي / هد	116
इंआ़म देना	إِنْعَام	مُنْعَم	مُنْعِم	أَنْعِمْ	يُنْعِمُ	أَنْعَمَ	ن ع م / أسـ+	17
फ़ज़ीलत देना	تَفْضِيْل	مُفَضَّل	مُفَضِّل	فَضِّلْ	يُفَضِّلُ	فَضَّلَ	ف ض ل / عل+	19
डरना	اِتِّقَاء	مُتَّقًى	مُتَّقٍ	اِتَّقِ	يَتَّقِيْ	اِتَّقٰى	و ق ي / اِخـ+	216

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
नेअ़मत	نِعَم	نِعْمَة
दुनिया, जहाँ	عَالَمِيْن	عَالَم
दिन	أَيَّام	يَوْم
जान, शख़्स	أَنْفُس	نَفْس

www.understandquran.com

इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की आज़माइश और कामयाबी

(अल-बक़राः124)

मुतालआ़ के बाद तल्लीन दुआ तसव्वुर एहसास प्लान एहतिसाब

وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ

इमाम	लोगों का	बेशक मैं तुम्हें बनाने वाला हूँ	उसने फ़रमाया	तो उन्होंने पूरा कर दिया उन्हें,	चंद बातों से	उनके रब ने	इबराहीम अ़लैहिस्सलाम को	आज़माया	और जब

قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِى الظّٰلِمِيْنَ 124

ज़ालिमों को।	मेरा अ़ह्द	नहीं पहुँचता	उसने फ़रमाया	और मेरी औलाद से,	उसने कहा

मुख़्तसर शरह़

- ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम एक सच्चे मुसलमान यानी अल्लाह के कामिल फ़रमाँबरदार बन्दे थे। कुरआने मजीद में मौजूद ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की बहुत सारी मिसालें इस बात की तसदीक़ करती हैं।
- ...فَاَتَمَّهُنَّ: ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम बहुत मुश्किल ह़ालात और आज़माईशों में कामयाब हुए। मसलन अपने वालिद से जुदा हुए, आग में डाले गए, सह़रा, पहाड़ और वादीयों का सफ़र कर के मक्का की जानिब हिजरत की, मक्का की बन्जर वादी में अपने घर वालों को छोड़ना पड़ा, बुढ़ापे की उम्र में अपने बेटे की कुर्बानी देने का हुक्म दिया गया, वग़ैरा।
- ...قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ: इस में मुशरिकीन के साथ साथ यहूद के लिए भी याद-दिहानी है कि ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम को उनके सच्चे ईमान, अल्लाह से मुह़ब्बत और फ़रमाँबरदारी की वजह से सारी इन्सानियत का इमाम बनाया गया। ग़लत काम करने वालों का इस इमामत व क़ेयादत में कोई ह़िस्सा नहीं है।
- ...قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ: जो लोग सह़ीह़ ईमान व अक़ीदे से भटक जाएं और जो तअ़ल्लुक़ात ईमान व इताअ़त पर क़ायम न हों इस्लाम की नज़र में उनकी कोई अहमीयत नहीं है। इसी लिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इबराहीम अ़लैहिस्सलाम से किया गया इमामत व क़ेयादत का वादा ग़लत काम करने वालों तक नहीं पहुँचेगा।

ह़दीसः ह़ज़रत साद बिन अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने अर्ज़ कियाः अल्लाह के रसूल! सबसे ज़्यादा आज़माईश किस पर आती है? आपने फ़रमाया ''अम्बिया और रसूलों पर, फिर जो उनके बाद मर्तबा में हैं, फिर जो उनके बाद हैं। बन्दे की आजमाईश उसके दीन के मुताबिक़ होती है, अगर बन्दा अपने दीन में मज़बूत है तो उसकी आज़माईश भी सख़्त होती है, और अगर वह अपने दीन में नर्म होता है तो उसके दीन के मुताबिक़ ही आज़माईश होती है, फिर आज़माईश बन्दे के साथ हमेशा रहती है यहाँ तक कि बन्दा ज़मीन पर इस हाल में चलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता''। (तिरमिज़ीः **2398**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः

इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम को इमाम बनाया इस लिए कि वह मुख़लिस और सच्चे मुस्लिम थे। अल्लाह के अह़काम को पूरा करने में वह कभी पीछे नहीं हटे, चाहे कितना ही मुश्किल हुक्म क्यों न हो।
- जो लोग ग़लत काम करते हैं उन्हें अपने अजीम आबा व अजदाद से या अपने रसूलों से कोई फ़ायदा नहीं पहुँचेगा।
- अल्लाह पर ज़र्रा बराबर भी शक किए बग़ैर मज़बूत ईमान रखना और उसकी हिदायात पर अ़मल करना बड़े बेहतरीन अज्र का सबब बनता है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हमें हमारी ताक़त से ज़्यादा मत आज़माईए, आपने हमारे मुक़द्दर में जो आजमाईशें लिखी हैं उनमें कामयाब होने में हमारी मदद फ़रमाईए।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं मुश्किल ह़ालात में और ज़िंदगी की आज़माईशों में सब्र के अज्र व सवाब को याद रखूँगा।

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
बनाना	جَعْل	مَجْعُوْل	جَاعِل	اِجْعَلْ	يَجْعَلُ	جَعَلَ	ج ع ل ف	346
अ़ह्द लेना	عَهْد	مَعْهُوْد	عَاهِد	اِعْهَدْ	يَعْهَدُ	عَهِدَ	ع ه د س	35
ज़ुलम करना	ظُلْم	مَظْلُوْم	ظَالِم	اِظْلِمْ	يَظْلِمُ	ظَلَمَ	ظ ل م ض	266
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَايِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل قا	1719
पाना	نَيْل	مَنُوْل	نَايِل	نَلْ	يَنَالُ	نَالَ	ن ي ل خا	12
आजमाना	اِبْتِلَاء	مُبْتَلًى	مُبْتَلٍ	اِبْتَلِ	يَبْتَلِيْ	اِبْتَلٰى	ب ل و اِخ+	10
पूरा करना	إِتْمَام	مُتَمّ	مُتِمّ	أَتْمِمْ	يُتِمُّ	أَتَمَّ	ت م م أس+	17

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
बात	كَلِمَات	كَلِمَة
इमाम	أَئِمَّة	إِمَام
औलाद	ذُرِّيَّات	ذُرِّيَّة
अ़ह्द	عُهُوْد	عَهْد

www.understandquran.com

बैतुल्लाह और शहरे मक्का (अल-बक़राः125-126)

मुतालआ के बाद तल्लीग़ दुआ तसव्वुर एहसास ख़ान एहतिसाब

وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ

ख़ान-ए-काअ़बा को	और जब बनाया हमने

مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَاۤ

और हम ने हुक्म दिया	नमाज़ की जगह,	"मुक़ामे इबराहीम" से	और तुम बनाओ	और अम्न की जगह,	लोगों के लिए	इज्तिमाअ़ की जगह

اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ

और रुकुअ़ करने वालों	और एतेकाफ़ करने वालों	तवाफ़ करने वालों के लिए	मेरा घर	को कि वह पाक रखें	इबराहीम और इस्माईल अलैहिमस्सलाम को

السُّجُوْدِ (125) وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ

इस के रहने वालों को	और रोज़ी दे	अम्न वाला शहर	बना इस को	ऐ मेरे रब	कहा इबराहीम अ़लैहिस्सलाम ने	और जब	सज्दा करने वालों के लिए।

مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ

और जिस ने कुफ़्र किया	उस ने फ़रमाया	और आख़िरत के दिन (पर),	अल्लाह पर	उन में से	जो ईमान लाए	फ़लों से

فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ (126)

लौटने की जगह।	और बुरी है वह	दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़,	फिर मजबूर करूँगा उस को	थोड़ा	पस उसे नफ़ा दूँगा

मुख़्तसर शरहः

- وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً...: **ग़ौर कीजिएः** अल्लाह तआ़ला ने काअ़बा को इंसानियत के लिए मर्कज़ और अम्न की जगह बनाया है। इबराहीम अ़लैहिस्सलाम ने शहर के अम्न और ख़ोराक की दुआ़ की और उन की दुआ़ क़बूल हुई। शहरे मक्का ऐसी जगह है जहाँ आज भी ऐसे कई मोजिज़ात देखे जा सकते हैं जो वहाँ गुज़िश्ता सैंकड़ों सालों से मौजूद हैं। कुछ मोजज़ात का ज़िक्र आगे आ रहा है।
- وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ...: इस से पहले अल्लाह तआ़ला ने इमामत व क़ियादत के तअ़ल्लुक़ से बता दिया था कि कुफ़्र करने वालों का इस में कोई हिस्सा नहीं रहेगा। चुनांचः हज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम ने अदब का लिहाज़ रखते हुए अल्लाह तआ़ला से रिज़्क़ और ख़ोराक की दुआ़ सिर्फ़ अहले ईमान के हक़ में की। लेकिन अल्लाह ने फ़रमाया कि सिर्फ़ अहले ईमान ही को नहीं; बल्कि कुफ़्फ़ार को भी रिज़्क़ मिलेगा इस लिए कि दुनिया तो एक आज़माइश है, मगर आख़िरत में काफ़िरों को जहन्नम की आग के दर्दनाक अ़ज़ाब में डाला जाएगा।

मक्का के मोजज़ात

1. मक्का में न ही कोई हरियाली है न ही तालाब, और न ही वहाँ का मौसम खुशगवार रहता है। यह काले पहाड़ और वादीयों में आबाद शहर है! अल्लाह तआ़ला ने इसे तक़रीबन **5000** साल पहले "مثابة" (ठिकाना) बनाया और आज तक दुनिया में कोई और दूसरी ऐसी जगह नहीं है जहाँ लोग दुनिया भर के ममालिक से ह़ज की नीयत से लाखों की तादाद में आते हों, और अपनी ज़िंदगी की बचत करदा रक़म इस शहर का सफ़र करने में ख़र्च कर के खुश होते हों।

www.understandquran.com

2. मुक़ामे ''इबराहीम'' यानी वह जगह जहाँ इबराहीम खड़े हुए थे तारीख़ में मौजूद दूसरी चीज़ों से इस का मुवाज़िना कीजीए। ग़ौर कीजिए कि दीगर मज़ाहिब की किताबें भी अपनी असल शक्ल में महफ़ूज़ नहीं हैं और यहाँ अल्लाह तआ़ला ''मुक़ाम'' (खड़े होने की जगह) का ज़िक्र फ़रमा रहा है और वह आज तक महफ़ूज़ और बाक़ी है।
3. रोज़ाना वहाँ हज़ारों की तादाद में लोग मुसलसल उमरा, तवाफ़, नमाज़, ज़िक्र और इबादात करते रहते हैं।
4. मक्का महफ़ूज़ शहर है। तक़रीबन तमाम तारीख़ी जगहें और शहर मुख़्तलिफ़ हादसात या जंगों में बर्बाद कर दिए गए या फिर उन्हें दोबारा बनाया गया। मक्का की जिस दिन से बुनियाद रखी गई, उस दिन से यानी तक़रीबन **5000** साल से वह महफ़ूज़ है और कोई उसे हाथ न लगा सका।
5. मक्का हर जानिब से काले काले पहाड़ों से घिरा हुआ है जहाँ खेती बाड़ी नहीं की जा सकती, इस के बावजूद आपको वहाँ साल भर दुनिया के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से आने वाले हर क़िस्म के फल, तरकारी वग़ैरा मिल जाएंगे। यह इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की मक्का के लिए की गई दुआ़ के क़बूल होने की वाज़ेह निशानी है।
6. हज़ारों साल से बग़ैर किसी रुकावट के निकलने वाला ज़मज़म का पानी जो करोड़ों इंसानों को फ़ायदा पहुँचा रहा है। इस पानी में ख़ास तिब्बी अजज़ा हैं। सब से अ़जीब बात यह है कि वह ऐसी वादी में है जहाँ न खेती होती है, न तालाब हैं, न नदियाँ हैं और न क़रीब में पानी का कोई ज़रिया मौजूद है।

हदीसः हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया ''अगर दुनिया की क़ीमत अल्लाह तआ़ला के नज़दीक एक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो वह किसी काफ़िर को इस में से एक घूँट पानी भी ना पिलाता''। (तिरमिज़ीः **2320**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- हज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम ने मक्का में अम्न और रिज़्क़ के लिए दुआ़ की।
- अल्लाह तआ़ला सब को रिज़्क़ देगा चाहे वह ईमान लाएँ या न लाएँ, मगर काफ़िरों को आख़िरत में सज़ा देगा।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हमें हज व उमरा की सआ़दत से नवाज़ दे, ऐ अल्लाह! हमें अपने इलाक़े की मस्जिदों की हर मुम्किन ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं मस्जिद या मस्जिद में नमाज़ पढ़ने वालों की ख़िदमत के लिए कुछ वक़्त ख़ास करूँगा। जैसे मस्जिद की स़फ़ाई, मस्जिद में आने वाले बच्चों की मदद वग़ैरा।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
अ़ह्द लेना	عَهْد	مَعْهُوْد	عَاهِد	اِعْهَدْ	يَعْهَدُ	عَهِدَ	ع ه د / س	35
एतेकाफ़ करना	عُكُوْف	مَعْكُوْف عَنْهُ	عَاكِف	اُعْكُفْ	يَعْكُفُ	عَكَفَ	ع ك ف / ذ	9
अम्न व अमान होना	أَمْن	مَأْمُوْن	اٰمِن	اِيْمَنْ	يَأْمَنُ	أَمِنَ	أ م ن / س	59
तवाफ़ करना	طَوَاف	مَطُوْف بِهِ	طَائِف	طُفْ	يَطُوْفُ	طَافَ	ط و ف / قا	12
कम होना	قَلّ	–	قَلِيْل	قِلَّ	يَقِلُّ	قَلَّ	ق ل ل / ضل	72
पाक करना	تَطْهِيْر	مُطَهَّر	مُطَهِّر	طَهِّرْ	يُطَهِّرُ	طَهَّرَ	ط ه ر / عل+	17
फ़ायदा देना	تَمْتِيْع	مُمَتَّع	مُمَتِّع	مَتِّعْ	يُمَتِّعُ	مَتَّعَ	م ت ع / عل+	18
मजबूर करना	اِضْطِرَار	مُضطَرّ	مُضْطَرّ	اِضْطَرِرْ	يَضْطَرُّ	اِضْطَرَّ	ض ر ر / إخ+	8

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
रुकअ़ करने वाला	رُكَّع	رَاكِع
सजदा करने वाला	سُجُوْد	سَاجِد
आग	نِيْرَان	نَار

www.understandquran.com

बैतुल्लाह की तामीर और दुआएँ (अल-बक़रा:127-129)

मुतालआ के बाद तल्लीन दुआ तसव्वुर एहसास एहतिसाब प्लान

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ

और जब उठाते थे इबराहीम अ़लैहिस्सलाम	बुनियादें	ख़ानए काअ़बा की	और इस्माईल अ़लैहिस्सलाम,	ऐ हमारे रब	क़बूल फ़रमा ले हम से

اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ 127 رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ

बेशक तू	तू	सुनने वाला	जानने वाला है।	ऐ हमारे रब	और हमें बना ले	फ़रमाँबरदार	अपना

وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ

और हमारी औलाद से	उम्मत फ़रमाँबरदार	अपनी,	और हमें दिखा	ह़ज के तरीक़े	और हमारी तौबा क़बूल फ़रमा

اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ 128 رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

बेशक	तू	तौबा क़बूल करने वाला	रह़म करने वाला है।	हमारे रब	और भेज	उन में	एक रसूल

مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ

उन्हीं में से	वह पढ़े	उन पर	तेरी आयतें	और उन्हें तालीम दे	"किताब"	और ह़िक्मत (दानाई)

وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ 129

और उन्हें पाक करे,	बेशक	तु	ग़ालिब	ह़िक्मत वाला है

मुख़्तसर शरह

- ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के ज़रिया रखी गई बुनियाद तो वहाँ पहले से मौजूद थी। ह़ज़रत इबराहीम व इसमाईल अलैहिमस्सलाम उस को मज़ीद बुलंद कर रहे थे।
- ...رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا: सारी ज़िंदगी कुर्बानियाँ पेश करने के बाद भी उन की फ़िक्र यही थी कि उन की कोशिशें अल्लाह के यहाँ क़बूल हो जाएँ। इस दुआ़ से यह मालूम होता है कि तमाम कोशिशों का असल मक़सद यानी अल्लाह के पास उन का क़बूल हो जाना है।
- اِنَّكَ اَنْتَ: देखिए कि अल्लाह की ज़ात पर कितना मज़बूत, पक्का और गहरा यक़ीन और भरोसा इन अल्फ़ाज़ में पेश किया गया है।
- السَّمِيْعُ: जो कुछ हम माँग रहे हैं तू उन्हें अच्छी तरह़ सुनता है। नोट कीजिए कि इंसानी इल्म के मुताबिक़ इस कायनात का आख़िरी किनारा कई बिलीयन नूरी साल के फ़ासले पर है और अल्लाह तआ़ला सातों आसमान के ऊपर है।
- الْعَلِيْمُ: तू हमारी और हमारे दिलों की ह़ालत को अच्छी तरह़ जानता है।
- गुज़िशता आयत में सिर्फ़ ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम दुआ़ माँग रहे थे इस लिए वहाँ "رَبِّ" (ऐ मेरे) रब था। यहाँ चूँकि दोनों (ह़ज़रत इबराहीम व इसमाईल अलैहिमस्सलाम) दुआ़ माँग रहे हैं इस लिए "رَبَّنَا" (ऐ हमारे रब) है।
- ...رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ: काअ़बा की बुनियाद को बुलंद करने के इस तारीख़ी मौक़ा पर और इतनी सारी कुर्बानियाँ देने के बाद भी इन दोनों ने अल्लाह से यह दुआ़ की कि वह उन को "मुस्लिम" यानी सच्चा फ़रमाँबरदार बना। यही

www.understandquran.com

नहीं बल्कि उन्होंने अपनी आने वाली नस्लों के लिए भी यही दुआ मांगी। दुनियावी लोगों की तरह नहीं जो अपने बच्चों के लिए सिर्फ़ दुनिया की आसानियों और सहूलतों की फ़िक्र करते रहते हैं।

- وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا...: हमें "مَنَاسِك" दिखा ताकि हम उस रास्ते पर चलें जो तू चाहता है, लेकिन साथ ही साथ हमारी तौबा भी क़बूल फ़रमा क्योंकि मुम्किन है कि हम उन पर बराबर अ़मल न कर सकें।
- اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ: देखिए कैसा ईमान और कैसा कामिल भरोसा है इन अल्फ़ाज़ में तू ही तव्वाब "تَوَّاب" और तू ही रहीम "رَحِيْم" है।
- मुख़्तलिफ़ जगहों पर दीन की दावत के एक तवील तर्जबे की बुनियाद पर इबराहीम अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से एक ऐसे नबी की दुआ़ मांगी जो किसी भी उम्मत की बक़ा और उरूज के लिए चार ज़रूरी और बुनियादी काम करे, यही रसूलुल्लाह ﷺ का मिशन था:
  1. **तिलावतः** कुरआन मजीद के जरिया अल्लाह का पैग़ाम पहूँचाना।
  2. **किताब की तालीमः** किताबुल्लाह की वज़ाह़त करना।।
  3. **ह़िक्मत की तालीमः** अपने अक़्वाल और आमाल से ह़िक्मत की तालीम देना
  4. **तज़किया:** बुराईयों को निकालना और अच्छाईयों को बढ़ाना, इन्फ़िरादी और इज्तिमाई सतह़ पर।
- दुआ़ के बाद ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम कहते हैं कि बेशक तू ही "الْعَزِيْزُ" यानी ताक़त व क़ुदरत वाला है (तू यह कर सकता है) और "الْحَكِيْمُ" यानी ह़िक्मत वाला है (इसे करने का बेहतरीन तरीक़ा तू जानता है)। हम भी जब अल्लाह से अपने किसी प्लान के लिए दुआ़ करें तो हमें भी अपनी दुआ़ में अल्लाह की सिफ़ात में से कोई मुतअ़ल्लिक़ा सिफ़त शामिल करना चाहिए।
- अल्लाह ने यह दुआ़ क़बूल फ़रमाई। ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ उन के दरमियान भेजे गए। रसूलुल्लाह ﷺ के साथ एक ऐसी जमाअ़त थी जिसने क़ुरआन की ऐसी तिलावत की और उसे इस तरह़ याद किया कि दुनिया की कोई दूसरी क़ौम ऐसा नहीं कर सकती। आज भी हमारी उम्मत में लाखों ह़ाफ़िज़ मौजूद हैं!
- मगर अफ़सोस कि हम ग़ैर अ़रबों की अक्सरीयत ने क़ुरआन की असल तालीम को छोड़ दिया यानी उस को समझना और ग़ौर करना और सीरत की रोशनी में उस पर अ़मल करना।
- आप ﷺ ने सह़ाबा की एक जमाअ़त की ऐसी तर्बीयत फ़रमाई कि इस की मिसाल दुनिया ने कभी नहीं देखी होगी। आपकी तमाम तालीमात मुकम्मल तफ़सील के साथ मह़फ़ूज़ हैं, जब कि तारीख़ में किसी और इंसान की तालीमात उतनी तफ़सील के साथ मह़फ़ूज़ नहीं यह इस बात का मोजज़ाती सुबूत है कि ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम और ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ सच्चे नबियों में से थे।

ह़दीसः ह़ज़रत अ़बदुल्लाह बिन अ़म्र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ''बेशक अल्लाह तआ़ला अपने बंदे की तौबा उस वक़्त तक क़बूल करता रहता है जब तक कि उस की जान ह़लक़ में न आ जाए'' (इब्ने माजाः **4253**)

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- ह़ज़रत इबराहीम और ह़ज़रत इस्माईल अलैहिमस्सलाम ने काअ़बा की दोबारा तामीर फ़रमाई।
- इन दोनों ने निहायत आजिज़ी के साथ इस काम के क़बूल होने की और मग़फ़िरत की दुआ़ माँगी।
- उन्होंने दुआ़ माँगी एक ऐसे नबी के लिए जो चार अहम काम अंजाम दे।

दुआ़ः हम अल्लाह तआ़ला से ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम के ब्यान किए गए चारों कामों में से हर एक के बारे में दुआ़ कर सकते हैं

तिलावतः ऐ अल्लाह! हमारी मदद फ़रमा कि हम इसे समझ कर तिलावत करें।

किताब की तालीमः ऐ अल्लाह! कुरआन को पढ़ने और पढ़ाने वाला बनने में हमारी मदद फ़रमा।

ह़िक्मत की तालीमः ऐ अल्लाह! ह़दीस और सीरत का मुतालआ़ करने में हमारी मदद फ़रमा जो दर-ह़क़ीक़त कुरआन का अ़मली नमूना है और जो ह़िक्मत से भरपूर है।

तज़्किया: ऐ अल्लाह! अपने अक़ीदा, अख़लाक़, अपने घर और अपने मुआ़शरे को तमाम बुराईयों से पाक करने में और उन में अच्छाईयों को पैदा करने में मेरी मदद फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं चारों कामों को करने के लिए प्लान बनाऊँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
भेजना	بَعْث	مَبْعُوْث	بَاعِث	اِبْعَثْ	يَبْعَثُ	بَعَثَ	ب ع ث / ف	65
दानिशमंद होना	حِكْمَة	–	حَكِيْم	اُحْكُمْ	يَحْكُمُ	حَكُمَ	ح ك م / ک	117
तिलावत करना	تِلَاوَة	مَتْلُوّ	تَالٍ	اُتْلُ	يَتْلُوْ	تَلَا	ت ل و / دء	63
ताक़तवर होना	عِزَّة	–	عَزِيْز	عِزَّ	يَعِزُّ	عَزَّ	ع ز ز / ضلا	112
क़बूल करना	تَقَبُّل	مُتَقَبَّل	مُتَقَبِّل	تَقَبَّلْ	يَتَقَبَّلُ	تَقَبَّلَ	ق ب ل / تد+	11
दिखाना	إِرَاءَة	مُرًى	مُرٍ	أَرِ	يُرِيْ	أَرٰى	ر أ ي / أسـ+	54
पाक करना	تَزْكِيَة	مُزَكًّى	مُزَكٍّ	زَكِّ	يُزَكِّيْ	زَكّٰى	ز ك و / علـ+	12

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
बुनियाद	قَوَاعِد	قَاعِدَة
ह़ज के तरीक़े	مَنَاسِك	مَنْسِك
ह़िक्मत (दानाई)	حِكَم	حِكْمَة

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 19b कौन मुहँ मोड़े मिल्लते इबराहीम से? (अल-बक़रा:130-131)

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ

मिल्लत से इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की	और कौन मुँह मोड़ता है

اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا ۚ

सिवाए	जिस ने बेवकूफ़ बनाया	अपने आप को,	और अलबत्ता तह़क़ीक़	हमने उस को चुन लिया	दुनिया में,

وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿130﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ

और बेशक वह	आख़िरत में	अलबत्ता नेकों में से है।	जब कहा उस से	उस के रब ने	सर झुका दे,

قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿131﴾

उसने कहा	मैंने सर झुका दिया	सारे जहानों के रब के लिए।

मुख़्तसर शरह़

- وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا...: ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम में हमारे लिए ऐसा नमूना है जिस की इत्तिबा की जाए। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मुंतख़ब कर के उन्हें इस दुनिया में इमाम बनाया। दुनिया की तक़रीबन आधी आबादी जिन में यहूद व नसारा और मुसलमान भी शामिल हैं, ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की न सिर्फ़ इज़्ज़त और एह़तेराम करते हैं बल्कि उन्हें अल्लाह के एक नबी के तौर पर क़बूल भी करते हैं।
- وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ...: क़यामत के दिन उन्हें नेक लोगों के साथ उठाया जाएगा। सिर्फ़ बेवकूफ़ लोग ही ऐसे बेहतरीन शख़्स की पैरवी करने से मुँह मोड़ते हैं।
- اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ...: ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की सब से अहम सिफ़त क्या थी? उन्होंने अपने आप को अपने रब के सपुर्द कर दिया था। रब यानी वह जो हमारा ख़्याल रखता हो, हमारी ज़रूरियात को पूरा करता हो और जिंदगी गुज़ारने में हमारी मदद करता हो। रब के इलावा इबादत के लायक़ और कौन हो सकता है? ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की बात पर तवज्जोह दीजिए कि मैंने अपने आप को तमाम जहानों के रब के सपुर्द कर दिया है। उन का दिल अल्लाह की अज़मत से भरा हुआ था।
- ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम के सफ़र का आग़ाज़ दर-ह़क़ीक़त कायनात में, सितारों में, चाँद और सूरज में ग़ौर व फ़िक्र करने से हुआ, और फिर आख़िरकार उन्होंने यह एलान किया कि अल्लाह ही उन का रब है और यह कि वह ख़ुद को अल्लाह के सपुर्द करते हैं।
- सच्चे मुसलमानों में भी ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की तरह़ यह सिफ़त होनी चाहिए। अल्लाह ऐसे लोगों को मुंतख़ब फ़रमाएगा और उन्हें इस दुनिया में क़ायद और इमाम बनाएगा। सब से अहम यह कि आख़िरत में उन्हें कामयाबी से नवाज़ा जाएगा।

तदब्बुर व तज़क्कुर

- **तसव्वुर/एहसास:** बाज़ लोग जब देखते हैं कि अल्लाह के अह़काम उन की ख़ाहिशों के ख़िलाफ़ जा रहे हैं तो वह अल्लाह के अह़काम को नज़र अंदाज़ कर देते हैं। वह अपने ग़लत कामों को सह़ीह़ क़रार देने के रास्ते तलाश करते हैं। इस तरह़ कर के वह ख़ुद अपने आप को बेवकूफ़ बना रहे होते हैं।

www.understandquran.com

- हमें बिल्कुल साफ़ और वाज़ेह़ मिसालें और रोल मॉडल दिए गए हैं। इस के बावजूद भी अगर कोई अपनी ख़ाहिशात की पैरवी करना चाहता है तो सख़्त अ़ज़ाब ऐसे लोगों का इंतिज़ार कर रहा है।
- एक मुसलमान होने के नाते हम यह दावा करते हैं कि हम अपने आपको अल्लाह के सपुर्द कर रहे हैं। क्या हम ख़ुशी से अल्लाह के तमाम अह़काम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने के लिए तैयार हैं? मसलन सर्दीयों में फ़जर की नमाज़ पढ़ना, रमज़ान का पूरा महीना रोज़े रखना, ज़कात व सदक़ात देना, लोगों के साथ अच्छा बरताव करना, दीन की दावत देना वग़ैरा।

ह़दीसः ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ यूँ कहा करते थे।

"اَللّٰهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِعِزَّتِكَ

لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ أَنْ تُضِلَّنِيْ، أَنْتَ الْحَيُّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَالْجِنُّ وَالإِنْسُ يَمُوْتُوْنَ"

तर्जमाः ऐ अल्लाह! में तेरा फ़रमाँबरदार हो गया और तुझ ही पर ईमान लाया, तुझ ही पर मैंने भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ रुजूअ़ किया। तेरी ही मदद से मैं मुख़ालिफ़ों से लड़ा। ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरी इ़ज़्ज़त की पनाह माँगता हूँ ,कोई बरह़क़ माबूद नहीं सिवाए तेरे, इस बात से कि तु भटका दे मुझ को, तू वह ज़िंदा है जो कभी नहीं मरता, जबकि जिन्नात और इंसान मर जाते हैं। (मुस्लिमः **2717**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम इमाम व क़ायद और एक कामिल मुस्लिम थे। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इन्सानियत की इमामत व क़ेयादत के लिए चुन लिया था।
- सिर्फ़ बेवक़ूफ़ और जाहिल शख़्स ही ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम के रास्ते को छोड़ सकता है।
- ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की ख़ास सिफ़त अल्लाह तआ़ला की इताअ़त और कायनात में ग़ौर व फ़िक्र करना।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! मुझे अपना शुक्रगुज़ार और फ़रमाँबरदार बंदा बना दे।

प्लान इन्शा अल्लाह! मैं कायनात के रब की अ़ज़मत को समझने के लिए ज़मीन व आसमान की तख़लीक़ में ग़ौर व फ़िक्र करूँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
मुँह मोड़ना	رَغَب	مَرْغُوْب	رَاغِب	اِرْغَبْ	يَرْغَبُ	رَغِبَ	ر غ ب / سـ	8
बेवक़ूफ़ बनाना	سَفَاهَة	مَسْفُوْه	سَافِه	اِسْفَهْ	يَسْفَهُ	سَفِهَ	س ف ه / سـ	4
नेक होना	صَلَاح	-	صَالِح	اِصْلَحْ	يَصْلَحُ	صَلَحَ	ص ل ح / ف	129
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَائِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل / قا	1719
मुंतख़ब करना	اِصْطِفَاء	مُصْطَفًى	مُصْطَفٍ	اِصْطَفِ	يَصْطَفِيْ	اِصْطَفٰى	ص ف و / إخـ+	13
सर झुकाना	إِسْلَام	مُسْلَم	مُسْلِم	أَسْلِمْ	يُسْلِمُ	أَسْلَمَ	س ل م / أسـ+	72

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
मज़हब, मिल्लत	مِلَل	مِلَّة
जान, शख़्स	أَنْفُس	نَفْس
दुनिया	عَالَمِيْن	عَالَم

www.understandquran.com

वसीयत इबराहीम व याकूब अलैहिमस्सलाम की?

(अल-बक़रा:132-133)

मुतालआ के बाद तल्लीन दुआ तसव्वुर एहसास प्लान एहतिसाब

وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ

अपने बेटे को	इबराहीम अ़लैहिस्सलाम ने	और वसीयत की इस की

وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا

और याकूब अ़लैहिस्सलाम ने	ऐ मेरे बेटो!	बेशक अल्लाह ने	चुन लिया तुम्हारे लिए	दीन	पस तुम हरगिज़ न मरना	मगर

وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿132﴾ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ

इस ह़ाल में कि तुम	मुसलमान हो।	क्या तुम थे	मौजूद	जब आई	याकूब अ़लैहिस्सलाम को

الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ

मौत,	जब उस ने कहा	अपने बेटों से	किस की तुम इबादत करोगे	मेरे बाद,	उन्होंने कहा	हम इबादत करेंगे

اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ

तेरे माबूद	और तेरे बाप दादा के माबूद की	(यानी) इबराहीम अ़लैहिस्सलाम	और इस्माईल अ़लैहिस्सलाम	और इसह़ाक़ अ़लैहिस्सलाम	(के) माबूद यकता की,

وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿133﴾

और हम	उसी के फ़रमाँबरदार हैं।

मुख़्तसर शरह़

- فَلَا تَمُوْتُنَّ...اِلَّا: हरगिज़ मत मरना मगर यह कि तुम मुस्लिम हो कोई नहीं जानता है कि वह कब और कहाँ मरेगा। यहाँ इस का मतलब यह है कि हमें हर लम्हे और हर ह़ालत में मुसलमान रहना है; ताकि जब भी हम को मौत आए तो मुसलमान रहने की ह़ालत में आए। हमें मौत को और उस के बाद की ज़िंदगी को हमेशा अपने दिमाग़ में रखना है।
- रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया है कि हर बंदा उसी ह़ालत में उठाया जाएगा जिस ह़ालत में वह मरा है। (मुस्लिम 2878)
- يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى...: इन आयतों में औलाद की तर्बीयत के तअ़ल्लुक़ से बेहतरीन सबक़ मौजूद है कि अपनी औलाद को अपनी मौत के बाद भी अल्लाह का फ़रमाँबरदार बंदा बन कर रहने के लिए तैयार किया जाए, ताकि वह औलाद अल्लाह की इबादत करे और इस्लाम के मिशन को ले कर आगे बढ़े।
- इंसान सोचता है "मेरी मौत के बाद मेरी औलाद का क्या होगा", जब कि उसे ज़्यादा फ़िक्र यह होनी चाहिए कि "जब मेरे बच्चे मरेंगे तो उन का क्या होगा"।
- **तसव्वुर/एहसास:** ह़ज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात का वक़्त क़रीब है और उन की औलाद उन के अतराफ़ मौजूद है। उन की औलाद ने यह देखा है कि किस तरह़ उन के वालिद ने सारी ज़िंदगी अल्लाह की मरज़ी को पूरा करने में गुज़ार दी है। एक बाप होने और एक नबी होने की ह़ैसियत से उन्होंने अपनी औलाद को कितने प्यार और कितनी तवज्जोह से उन्हें सिखाया होगा कि उन्हें अल्लाह का फ़रमाँबरदार बंदा बन कर रहना है।

www.understandquran.com

- इस दुनिया में जो कुछ हमारे पास है उन में दुनिया और आख़िरत के एतबार से सब से ज़्यादा कीमती चीज़ ईमान है। आख़िरत के ख़तरात बहुत ज़्यादा हैं इस लिए ह़ज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम की इस दुनिया को छोड़ने से पहले आख़िरी फ़िक्र अपनी औलाद के ईमान व अ़क़ीदे के बारे में थी।
- ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम के बाद ह़ज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम का तज़्किरा क्यों? इस लिए कि बनीइसराईल (बनी याकूब) उन की औलाद में से थे।
- यह बहुत अहम नसीह़त है, इस लिए किः
  - वह सब नबी थे,
  - यह उन की वसीयत यानी ख़ाहिश और नसीह़त थी,
  - यह सब उन्होंने अपनी वफ़ात के मौक़े पर कहा था,
  - उन्होंने अपनी औलाद को यह बातें कही थीं। हर इंसान अपनी औलाद को बेहतर से बेहतर चीज़ देना चाहता है।
- अपने बच्चों से मुसबत जवाब सुन कर उन्हें कितनी ख़ुशी और सुकून का एह़सास हुआ होगा।
- इसी सिलसिले में ह़ज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र भी ख़ास तौर पर किया गया है जो ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ के अज्दाद में से थे। याकूब अ़लैहिस्सलाम की औलाद में कोई तअ़स्सुब नहीं था, उनके लिए इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की औलाद भी उतनी ही क़ाबिले एह़तेराम थी जितनी कि इसह़ाक़ अ़लैहिस्सलाम की औलाद थी। याद रहे कि बनीइसराईल का सिलसिला ह़ज़रत इसह़ाक़ अ़लैहिस्सलाम के ज़रिया से चला है।
- इस में मुशरिकीने मक्का के लिए भी एक अहम याद-देहानी है जो ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम को अपना जद्दे अमजद मान कर उन पर फ़ख़्र किया करते थे। यहाँ अल्लाह तआ़ला याद दिला रहा है कि वफ़ात के वक़्त भी ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की सब से बड़ी फ़िक्र यही थी कि उन की औलाद सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करे।
- وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُوْنَ: उन्होंने अपने आपको अल्लाह के सपुर्द किया, अपने मुआ़शरे, रस्म व रिवाज, अपनी या किसी और की ख़ाहिशात के सपुर्द नहीं किया। पैग़ाम यही है कि क्या तुम ह़क़ीक़त में अपने वालिद ह़ज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम की पैरवी कर रहे हो?

ह़दीसः ह़ज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः '''जब अल्लाह तआ़ला किसी बंदे के साथ भलाई का इरादा करता है तो उस से अ़मल कराता है'', अ़र्ज़ किया गयाः अल्लाह के रसूल कैसे अ़मल कराता है? आप ﷺ ने फ़रमायाः ''मौत से पहले उसे नेक अ़मल की तौफ़ीक़ दे देता है''। (तिरमिज़ीः **2142**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम और ह़ज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम ने अपनी औलाद को इस्लाम की पैरवी करने की नसीह़त की।
- वफ़ात के वक़्त भी उन को सब से ज़्यादा फ़िक्र इस बात की थी कि उन की औलाद उन की वफ़ात के बाद भी तौह़ीद का दामन थामे रहे।
- ''मुस्लिम होने की ह़ालत में ही मरना'' यानी हर लम्ह़ा और हर ह़ालत में मुस्लिम ही रहना।

दुआ़ः ऐ अल्लाहः हमें और हमारी आने वाली नस्लों को सच्चा मुसलमान बना दे।

प्लानः इन्शा अल्लाहः मैं अपनी औलाद की इस्लाम के मुताबिक़ तर्बीयत करूँगा और उन्हें इस्लाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना सिखाऊँगा।

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
आना, ह़ाज़िर होना	حُضُوْر	مَحْضُوْر	حَاضِر	اُحْضُرْ	يَحْضُرُ	حَضَرَ	ح ض ر / ذ	11
इबादत करना	عِبَادَة	مَعْبُوْد	عَابِد	اُعْبُدْ	يَعْبُدُ	عَبَدَ	ع ب د / ذ	143
होना	كَوْن	–	كَائِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن / قا	1358
मरना	مَوْت	–	مَيِّت	مُتْ	يَمُوْتُ	مَاتَ	م و ت / قا	115
वसीयत करना	تَوْصِيَة	مُوَصًّى	مُوَصٍّ	وَصِّ	يُوَصِّيْ	وَصّٰى	و ص ي / عل+	12
चुनना	اِصْطِفَاء	مُصْطَفًى	مُصْطَفٍ	اِصْطَفِ	يَصْطَفِيْ	اِصْطَفٰى	ص ف و / اِخ+	13

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
लड़का	أَبْنَاء، بَنُوْن بَنِيْن	إِبْن
मज़हब	أَدْيَان	دِيْن
वालिद, बाप	اٰبَاء	أَب

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 19d — वह उम्मत गुज़र गई (अल-बक़रा:134)

मुतालआ के बाद: तल्बीन, दुआ, तसव्वुर एहसास, प्लान, एहतिसाब

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ

जो उस ने कमाया	उसके लिए है	तहक़ीक़ गुज़र गई,	यह एक उम्मत है

وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ (134)

वह करते थे।	उस के बारे में जो	और नहीं तुम पूछे जाओगे	जो तुम ने कमाया,	और तुम्हारे लिए है

मुख़्तसर शरह

- تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ...: अल्लाह तआला बनीइसराईल से कह रहा है कि इस बात पर फ़ख़्र मत जताया करो कि तुम्हारे आबा व अजदाद नबी थे। क़्यामत के दिन तुम से तुम्हारे आबा व अजदाद के अज़ीम कारनामों के बारे में सवाल नहीं होगा और न ही तुम को उनके आमाल से कुछ मिलेगा।
- तुम्हारा फ़ैसला सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम्हारे अपने आमाल की बुनियाद पर होगा। हम जन्नत में सिर्फ़ इस वजह से नहीं जा सकते कि हम एक नबी यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद हैं।
- पिछली नसलों से और अपने आबा व अजदाद से हम क्या सबक़ ले सकते हैं? अच्छे रोल मॉडल की पैरवी करो और बुरे रोल मॉडल से दूर रहो। अगर हम वही करेंगे जो उन्होंने किया था तो अल्लाह तआला हमें इंआमात से नवाज़ेगा।
- इस्लाम का क़ानून बहुत ही साफ़ और वाज़ेह है कि आपको वही नतीजा मिलेगा जिस के लिए आपने मेहनत की है।
- पहले के लोगों ने जो गुनाह किए हैं, उसके बारे में आपसे नहीं पूछा जाएगा। इसी तरह पिछले नेक लोगों ने जो अच्छे काम किए हैं उनके अज्र व सवाब में भी आपका कोई हिस्सा नहीं रहेगा।
- अपने अक़ीदे और अपने आमाल की बुनियाद पर अपना आमाल नामा आप ख़ुद ही तैयार कर रहे हैं।
- इस्लाम में नसल परस्ती, इलाक़ाईयत, क़ौमीयत या ख़ानदान की वजह से किसी को बड़ा समझना या किसी को घटिया समझने का कोई तसव्वुर नहीं है। किसी भी ज़ात, रंग, नसल, क़ौमीयत, गिरोह या किसी ख़ास ज़बान के बोलने वाले को कोई तरजीह और इम्तियाज़ हासिल नहीं है।
- अल्लाह ही ने तो इंसानों को अलग अलग रंगों, या मुख़्तलिफ़ नसलों या मुख़्तलिफ़ ज़बानों के साथ पैदा फ़रमाया है, इंसान ने तो अपनी मरज़ी से इन में से किसी चीज़ को पसंद नहीं किया है।
- इस्लाम का निज़ाम इंसाफ़ पर क़ायम है। जो जैसा करेगा वैसा ही उस को बदला मिलेगा।

हदीस: हज़रत अबू होरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: ''जिस इंसान को उस का अमल पीछे कर दे तो उस का ख़ानदान (नसब) उसे आगे नहीं कर सकता''। (मुस्लिम: **2699**)

हज़रत अबू होरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु नक़ल करते हैं कि जब यह आयत "وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ" (शोअ़रा:**214**) नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने क़ुरैश को बुलाया। जब वह सब जमा हो गए तो आप ﷺ ने उमूमी तौर पर सब को डराया, फिर मख़सूस करते हुए फ़रमाया: ''ऐ काब बिन लुई के बेटो! अपने आप को जहन्नम से बचा लो, मर्रह बिन काब! के बेटो अपने आप को जहन्नम से बचा लो, ऐ अ़बद शमस! के बेटो अपने आप को जहन्नम से बचा लो, ऐ हाशिम के बेटो! अपने आप को जहन्नम से बचा लो, ऐ अबदुलमुत्तलिब के बेटो! अपने आप को जहन्नम से बचा लो, ऐ फ़ातिमा! अपने आप को जहन्नम से बचा लो; इस लिए कि मैं अल्लाह के सामने कुछ इख़्तियार नहीं रखता (यानी मैं बचा नहीं सकता) हाँ, इतना ज़रूर है कि तुम्हारी मुझ से जो रिश्तेदारी है में उस को जोड़ता रहूँगा'' (यानी तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करता रहूँगा)। (मुस्लिम:**204a**)

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- आला नसब का होना किसी को कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा सकता है।
- तुम्हें वही मिलेगा जो तुमने कमाया है

दुआः ऐ अल्लाह! नेक लोगों के रास्ते पर, उन लोगों के रास्ते पर चलने में हमारी मदद फ़रमा जिन पर तु ने इंआम किया है।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं अन्बियाए किराम की तारीख़ पढ़ूँगा और उस से सबक़ ह़ासिल करूँगा।

अस्मा और अफ़्आलः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आल नीचे दिए गए है।

अफ़्आलः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
कमाना	كَسْب	مَكْسُوْب	كَاسِب	اِكْسِبْ	يَكْسِبُ	كَسَبَ	ك س ب / ضد	62
काम करना	عَمَل	مَعْمُوْل	عَامِل	اِعْمَلْ	يَعْمَلُ	عَمِلَ	ع م ل / سد	319
गुज़रना	خُلُوّ	مَخْلُوّ عَنْهُ	خَالٍ	اُخْلُ	يَخْلُو	خَلَا	خ ل و / دعـ	26
पूछना	سُؤَال	مَسْئُوْل	سَائِل	سَلْ	يَسْئَلُ	سَأَلَ	س أ ل / ف	119
होना	كَوْن	–	كَائِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن / قا	1358

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
उम्मत	أُمَم	أُمَّة
दीन	أَدْيَان	دِيْن

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 20a हो जाओ यहूद व नसारा! (अल-बक़रा:135-136)

मुतालआ़ के बाद तल्क़ीन, दुआ, तसव्वुर एहसास, प्लान, एहतिसाब

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ

और उन्होंने कहा	हो जाओ तुम	यहूदी या नसरानी	तुम हिदायत पालोगे,	कह दीजिए	बल्कि (पैरवी करते हैं हम)	दीने इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की

حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿135﴾ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ

एक अल्लाह के हो जाने वाले,	और नहीं थे वह	मुशरिकों से।	कह दो तुम	हम ईमान लाए अल्लाह पर	और (उस पर) जो नाज़िल किया गया

اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

हमारी तरफ़	और जो नाज़िल किया गया	इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़	और इस्माईल अ़लैहिस्सलाम	और इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम	और याकूब अ़लैहिस्सलाम

وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِىَ النَّبِيُّوْنَ

और औलादे याकूब अ़लैहिस्सलाम (की तरफ़)	और जो	दिया गया	मूसा और ईसा अलैहिमस्सलाम को	और जो दिया गया	नबियों को

مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿136﴾

उनके रब की तरफ़ से,	हम फ़र्क़ नहीं करते	उनमें से किसी एक के दरमियान	और हम	उसी के फरमाँबरदार हैं।

मुख़्तसर शरह

- ...وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى: आज भी आप देखेंगे कि नसारा अपने मज़हब की दावत देने की हर मुम्किन कोशिश करते हैं। यह काम तो हमें करना चाहिए था उन को सबसे बेहतरीन मज़हब इस्लाम की तरफ़ दावत दीजिए। हमें ह़ज़रत इबराहीम अलैहिमस्सलाम की मिसाल देना चाहिए जो न ही यहूदी थे और न ही नसरानी, बल्कि वह तो एक सच्चे मुस्लिम थे।
- ...قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا: हम ह़ज़रत इबराहीम अलैहिमस्सलाम और दीगर तमाम अन्बिया की पैरवी करते हैं। तमाम नबियों के पास अल्लाह ने जो हिदायत का पैग़ाम भेजा वह एक ही था। यह एक बहुत आसान और समझ में आने वाली बात है।
- अल्लाह ने हर क़ौम में नबी को भेजा, जो शख़्स किसी एक नबी के पैग़ाम पर ईमान रखता हो उसे दूसरे नबी के पैग़ाम में कोई इख़तिलाफ़ नज़र नहीं आएगा।
- ...قُوْلُوْا: अल्लाह तआ़ला हमें याद दिला रहा है कि दूसरों को इस्लाम की तरफ़ बुलाओ, जैसा कि इस आयत में ब्यान किया गया है। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इस पैग़ाम को हर मुम्किन तरीक़े से दूसरों तक पहुंचाएँ। अब उसे क़बूल करना है या नहीं यह उन की मर्ज़ी है। याद रहे कि दीन के मुआ़मिले में कोई ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती है।
- ...لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ: नबियों के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते इस लिए कि सब के सब नबी उसी अल्लाह का पैग़ाम ले कर आए हैं।
- وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ: हम अपने आप को अल्लाह के सपुर्द करते हैं, न कि अपने मुआ़शरे, रस्मोरिवाज, ख़ुद की या किसी और की ख़ाहिशात के।

www.understandquran.com

ह़दीसः ह़ज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ''अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है मैं तमाम शरीकों में शिर्क के बारे में सब से ज़्यादा बेनयाज़ हूँ, जिस किसी शख़्स ने कोई ऐसा काम किया जिस में उस ने मेरे साथ किसी को शरीक किया तो में उस को और उस के शिर्क को (उस के ह़ाल पर) छोड़ देता हूँ''। (मुस्लिमः **2985**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- अगर यहूद व नसारा अपने मज़हब को क़बूल करने की दावत दें तो उन को बताईए कि हम इबराहीम अ़लैहिस्सलाम के रास्ते पर हैं जो एक सच्चे मुसलमान थे।
- हम कुरआन पर और कुरआन में ब्यान की गई तमाम बातों पर ईमान रखते हैं। हम तमाम नबियों और रसूलों पर ईमान लाते हैं और उन में से किसी के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं करते।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हमें शिर्क से मह़फ़ूज़ रख।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं हर क़िस्म के शिर्क से दूर रहूँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
एक अल्लाह के हो जाने वाले	حَنْف	-	حَنِيْف	اِحْنِفْ	يَحْنِفُ	حَنَفَ	ح ن ف / ضـ	10
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَايِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل / قا	1719
होना	كَوْن	–	كَايِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن / قا	1358
देना	إِيْتَاء	مُؤْتًى	مُؤْتٍ	اٰتِ	يُؤْتِيْ	اٰتٰى	أ ت ي / أسـ+	274
फ़र्क़ करना, अलग करना	تَفْرِيْق	مُفَرَّق	مُفَرِّق	فَرِّقْ	يُفَرِّقُ	فَرَّقَ	ف ر ق / عل+	10
फ़रमाँबरदार होना	إِسْلَام	مُسْلَم	مُسْلِم	أَسْلِمْ	يُسْلِمُ	أَسْلَمَ	س ل م / أسـ+	72

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
मज़हब, दीन	مِلَل	مِلَّة
औलाद	أَسْبَاط	سِبْط
पैग़म्बर	نَبِيُّوْن، نَبِيِّيْن	نَبِيّ

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 20b अगर वह ईमान लाएँ तुम जैसा तो... (अल-बक़राः137-138)

मुतालआ़ के बाद तल्लीन दुआ़ तसव्वुर एहसास प्लान एहतिसाब

فَاِنْ

पस अगर

فَاِنَّمَا	وَاِنْ تَوَلَّوْا	اهْتَدَوْا ۚ	فَقَدِ	اٰمَنْتُمْ بِهٖ	بِمِثْلِ مَآ	اٰمَنُوْا
तो बेशक वही	और अगर वह एराज़ करें	वह हिदायत पा गए,	तो यक़ीनन	तुम ईमान लाए इस पर	जिस तरह़	वह ईमान लाएँ

الْعَلِيْمُ (137)	السَّمِيْعُ	وَهُوَ	فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ	هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ	
खूब जानने वाला।	खूब सुनने वाला	और वही है	पस अनक़रीब काफ़ी होगा आप के लिए अल्लाह उन के मुक़ाबिले में,	मुख़ालिफ़त में,	(वह) हैं

لَهٗ	وَّنَحْنُ	صِبْغَةً ۖ	مِنَ اللّٰهِ	وَمَنْ اَحْسَنُ	صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ
उसी की	और हम	रंग में?,	अल्लाह से	और कौन है ज़्यादा अच्छा	अल्लाह का रंग (इख़्तियार करो),

عٰبِدُوْنَ (138)

इबादत करने वाले हैं।

मुख़्तसर शरह़

- بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ: इस तरह़ जिस तरह़ तुम ईमान लाए। यह उन लोगों के लिए भी और ख़ुद हम मुसलमानों के लिए भी ईमान के तमाम शोबों में जैसे इबादात, अख़लाक़ीयात वग़ैरा में क़्यामत तक के लिए एक पैमाना और मेयार है। हमें यह देखना चाहिए कि सह़ाबए किराम का ईमान और उन के आमाल कैसे थे।
- बात साफ़ होने के बाद भी अगर वह ईमान नहीं लाते तो यह इस बात की निशानी है कि वह लोग ज़िद में हैं। आपके ज़िम्मे जो काम था वह आपने पूरा कर दिया है।
- يَكْفِيْكَ: अल्लाह उन से निमट लेगा, एक और जगह अल्लाह ने फ़रमाया "وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ" कि अल्लाह आप को लोगों से मह़फ़ूज़ रखेगा।
- السَّمِيْعُ: इन सब मुआ़मिलात के बारे में वह तुम्हारी बातों को भी सुन रहा है और उनकी बातों को भी सुन रहा है।
- الْعَلِيْمُ: वह नीयतों को और कामों को अच्छी तरह़ जानता है।
- अल्लाह के रंग को इख़्तियार कर लो। जब आप किसी कपड़े को कोई ख़ास रंग में रंग देते हैं तो उस कपड़े के हर एक धागे में वह रंग समा जाता है। हम अपने आप को अल्लाह के रंग में कैसे रंग सकते हैं? क़ुरआन और ह़दीस हमारे दिलों में बैठ जाना चाहिए, इस का नतीजा यह होगा कि हमारा अ़क़ीदा, हमारे आमाल, हमारा लिबास, हमारी बातचीत, हमारे अख़लाक़ और मुआ़मिलात में हमारा ईमान और अल्लाह के लिए हमारी इताअ़त छलकती रहेगी।

ह़दीसः ह़ज़रत अबू हुरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया ''ईमान की सत्तर से ज़्यादा या साठ से ज़्यादा शाख़ें हैं, उन में सब से अफ़ज़ल لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहना है और सब से अदना रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ का हटाना है, और ह़या ईमान की एक शाख़ है''। (मुस्लिमः 35)

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- जो लोग कुरआन पर ईमान लाते हैं वही लोग सहीह़ हिदायत पर हैं।
- बात साफ़ होने के बाद भी अगर वह ईमान नहीं लाते तो यह इस बात की निशानी है कि वह लोग ज़िद में हैं।
- अल्लाह के रंग में रंग जाओ, यानी अपने अ़क़ीदे में, अपने आमाल में और हर वक़्त, हर ह़ाल में अल्लाह के दीन की पैरवी करो

दुआः ऐ अल्लाह! जिस तरह़ सहाबए किराम ने इस्लाम की पैरवी की उसी तरह़ हमारे लिए भी इस्लाम की पैरवी करना आसान फ़रमा। गुमराह हो जाने से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं कुरआन व ह़दीस का, सीरत का और सहाबए किराम की ज़िन्दगीयों का मुतालआ़ करूँगा ताकि में इस्लाम की अच्छी पैरवी करूँ।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
इबादत करना	عِبَادَة	مَعْبُوْد	عَابِد	اُعْبُدْ	يَعْبُدُ	عَبَدَ	ع ب د / ذ	143
काफ़ी होना	كِفَايَة	مَكْفِيّ	كَافٍ	اِكْفِ	يَكْفِيْ	كَفٰى	ك ف ي / هد	32
हिदायत पाना	اِهتِدَاء	مُهْتَدًى	مُهْتَدٍ	اِهْتَدِ	يَهْتَدِيْ	اِهْتَدٰى	هـ د ي / اِخ+	61
एराज़ करना	تَوَلٍّ	مُتَوَلًّى	مُتَوَلٍّ	تَوَلَّ	يَتَوَلّٰى	تَوَلّٰى	و ل ي / تد+	78
मुख़ालिफ़त करना	شِقَاق	مُشَاقٌّ	مُشَاقٌّ	شَاقِقْ	يُشَاقُّ	شَاقَّ	ش ق ق / حا+	14

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
अच्छा	↑أَحْسَن	حَسَن

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 20c अल्लाह के बारे में झगड़ा? (अल-बक़राः139-140)

मुतालआ़ के बाद: तल्बीग़, दुआ़, तसव्वुर एहसास, प्लान, एहतिसाब

قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ

कह दीजिए	क्या तुम हम से झगड़ते हो	अल्लाह के बारे में?	ह़ालाँकि वही है	हमारा रब	और तुम्हारा रब	और हमारे लिए हैं

اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ (139) اَمْ تَقُوْلُوْنَ

हमारे अ़मल	और तुम्हारे लिए हैं	तुम्हारे अ़मल,	और हम (तो)	उसी के लिए ख़ालिस हैं।	क्या तुम कहते हो

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا

बेशक	इबराहीम अ़लैहिस्सलाम	और इस्माईल अ़लैहिस्सलाम	और इसह़ाक़ अ़लैहिस्सलाम	और याक़ूब अ़लैहिस्सलाम	और औलादे याक़ूब अ़लैहिस्सलाम	थे वह

هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ

यहूदी	या नसरानी,	कह दीजिए	क्या तुम	ज़्यादा जानने वाले हो	या अल्लाह?

मुख़्तसर शरह़

- قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ...: इन आयात में और पिछली आयात में अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अलग अलग तरीक़ों से इस्लाम की दावत दी और बिल्कुल साफ़ अंदाज़ में इस्लाम को पेश किया ताकि वह ह़क़ की तरफ़ लौट जाएँ।
- हमारे लिए क़ुरआन में दावत व तबलीग़ की और बात को पेश करने की बेहतरीन ट्रेनिंग मौजूद है। हम को यह ट्रेनिंग और तरीक़े अच्छी तरह़ से सीखना चाहिए ताकि हम बेहतर तरीक़े पर दीन की दावत दे सकें।
- दीने इस्लाम को मानना और उस पर अ़मल करना बहुत ही अहम मुआ़मिला है, यह मुआ़मिला अल्लाह से मुतअ़ल्लिक़ है।
- वही हमारा और आप का रब है। वह हमारी हर एक ज़रूरत का ख़्याल रखता है, तो फिर हम कैसे उस के तअ़ल्लुक़ से लापरवाह हो सकते हैं।
- हमारे सब कामों के ज़िम्मेदार ख़ुद हम ही हैं
- وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ: अल्लाह तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ हमें मुख़लिस होना चाहिए। ''इख़लास'' यानी हर अ़मल सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए किया जाए। हमें न ही किसी और का ख़ौफ़ होना चाहिए और न ही नाम या शौहरत या किसी की जानिब से तारीफ़ की फ़िक्र होनी चाहिए। इस का यह मतलब भी है कि हम अल्लाह के रास्ते में घटिया चीज़ या सिर्फ़ बचा हुआ वक़्त ख़र्च न करें।
- यहूदीयत और नसरानीयत उन अ़ज़ीम नबियों के आने के बाद ईजाद की गईं, वर्ना इन अम्बियाए किराम का दीन तो ''इस्लाम'' यानी अपने आप को अल्लाह के सपुर्द कर देना था।
- ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ: क्या तुम अल्लाह से ज़्यादा जानते हो? यह अल्लाह तआ़ला की जानिब से एक ज़बरदस्त एलान है। कोई ज़िद्दी इंसान ही होगा जो इतनी वाज़ेह़ और मोअस्सिर बातों का इंकार कर दे।

ह़दीसः ह़ज़रत अबू हुरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ''तमाम अम्बियाए किराम अल्लाती (बाप शरीक) भाईयों की तरह़ हैं, उनकी मायें अलग अलग हैं और उन सब का दीन एक ही है''। (बुख़ारीः **3443**)

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- दीन पर अ़मल करना बहुत ही अहम मुआ़मिला है, यह मुआ़मिला अल्लाह से मुतअ़ल्लिक़ है।
- यहूदीयत और नसरानीयत बाद के लोगों ने ईजाद की। अन्बियाए किराम तो मुस्लिम ही थे।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हमें "مُخْلِصِين" (मुख़्लिसों) मैं से और "مُخْلَصِين" (चुने हुए बंदों) मैं से बना दीजिए।

प्लानः इन्शा अल्लाह! जब भी मुम्किन हो मैं अपनी नीयत को चेक करूँगा और मैं सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए बेहतर से बेहतर काम करूँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَايِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل قا	1719
होना	كَوْن	–	كَايِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن قا	1358
झगड़ा करना	مُحَاجَّة	مُحَاجٌّ	مُحَاجٌّ	حَاجِجْ	يُحَاجُّ	حَاجَّ	ح ج ج حا+	12
ख़ालिस करना	إِخْلَاص	مُخْلَص	مُخْلِص	أَخْلِصْ	يُخْلِصُ	أَخْلَصَ	خ ل ص أس+	22

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
अ़मल, काम	أَعْمَال	عَمَل
जानने वाला	أَعْلَم↑	عَالِم

www.understandquran.com

बड़ा ज़ालिम जो शहादत छुपाए (अल-बक़राः140-141)

وَمَنْ	اَظْلَمُ
और कौन	बड़ा ज़ालिम है

مِمَّنْ	كَتَمَ شَهَادَةً	عِنْدَهٗ	مِنَ اللّٰهِ ؕ	وَمَا اللّٰهُ	بِغَافِلٍ
उस से जिस ने	छुपाई गवाही	(जो) उस के पास है	अल्लाह की तरफ़ से,	और नहीं है अल्लाह	बे-ख़बर

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ (140)	تِلْكَ اُمَّةٌ	قَدْ خَلَتْ ۚ	لَهَا	مَا كَسَبَتْ	وَلَكُمْ
उस से जो तुम अ़मल करते हो।	यह एक उम्मत (थी)	(जो) तह़क़ीक़ गुज़र गई	उसके लिए है	जो उस ने कमाया	और तुम्हारे लिए है

مَّا كَسَبْتُمْ ۚ	وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ	عَمَّا	كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (141)
जो तुमने कमाया,	और तुम से न पूछा जाएगा	उस के बारे में	जो वह अ़मल करते थे।

मुख़्तसर शरह़

- مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً: (यहूद व नसारा से कहा जा रहा है कि) तुम अच्छी तरह़ जानते हो कि तुम ह़क़ को छुपा रहे हो। तुम्हारे पास तो तौरात और इंजील है, ज़रा ख़ुद उस में चेक कर लो।
- وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ...: यह अल्लाह तआ़ला की जानिब से बहुत ही सख़्त तंबीह है। अल्लाह न सिर्फ़ तुम्हारी ह़रकतों को देख रहा है; बल्कि वह तुम्हारी नीयतों से भी अच्छी तरह़ वाक़िफ़ है। तुम्हें अपनी ग़लत ह़रकतों का अंजाम भुगतना होगा।
- لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ: इस आयत को अल्लाह ने दोबारा ज़िक्र फ़रमाया है, इस बात पर ज़ोर देने के लिए कि नसब का आला होना किसी भी इंसान को अल्लाह के पास अज्र व सवाब नहीं दिला सकता। हर कोई अपने कामों का ज़िम्मेदार है। शैतान के धोके में तो हरगिज़ मत आना जो किसी को उस के मुत्तक़ी और पार्सा ख़ानदान या नसब का धोका देता है।
- وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ: क़्यामत के दिन तुम से यह सवाल नहीं होगा कि ह़ज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम या ह़ज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के नेक कामों को ब्यान करो। जब तुम को उन के कामों के बारे में पूछा ही नहीं जाएगा तो यह भूल जाओ कि तुम को उन के नेक कामों से कोई फ़ायदा पहुँचेगा। तुम्हें तो सिर्फ़ तुम्हारे नेक कामों का अज्र व सवाब मिलेगा या फिर तुम्हारे बुरे कामों पर सज़ा मिलेगी।

ह़दीसः ह़ज़रत अबू हुरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः ''जिस इंसान को उसका अ़मल पीछे कर दे तो उसका ख़ानदान (नसब) उसे आगे नहीं कर सकता''। (मुस्लिमः **2699**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- ह़क़ को छुपाना बहुत ही बड़ा जुर्म है।
- अल्लाह तआ़ला हमारी बातों से और हमारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं है।
- हर इंसान को अपने अ़मल का जवाब देना है।
- अगर किसी के आमाल अच्छे न हों तो उसका आला नसल से होना उस को कोई फ़ायदा नहीं दे सकेगा।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हमें ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक बेहतर अंदाज़ में क़ुरआन का पैग़ाम पहुँचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह! अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन में मुख़तलिफ़ गिरोहों के सामने इस्लाम को पेश करने के लिए जो तरीक़े इस्तिमाल किए हैं उन को मैं अच्छी तरह़ सीखने की कोशिश करूँगा।

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
छुपाना	كِتْمَان	مَكْتُوْم	كَاتِم	اُكْتُمْ	يَكْتُمُ	كَتَمَ	ك ت م / ذ	21
गवाही देना	شَهَادَة	مَشْهُوْد	شَاهِد	اِشْهَدْ	يَشْهَدُ	شَهِدَ	ش ه د / س	90
बे-ख़बर होना	غَفْلَة	مَغْفُوْل	غَافِل	اُغْفُلْ	يَغْفُلُ	غَفَلَ	غ ف ل / ذ	34
अ़मल करना	عَمَل	مَعْمُوْل	عَامِل	اِعْمَلْ	يَعْمَلُ	عَمِلَ	ع م ل / س	319
कमाना	كَسْب	مَكْسُوْب	كَاسِب	اِكْسِبْ	يَكْسِبُ	كَسَبَ	ك س ب / ض	62
गुज़रना	خُلُوّ	مَخْلُوّ عَنْهُ	خَالٍ	اُخْلُ	يَخْلُو	خَلَا	خ ل و / د ع	26
पूछना	سُؤَال	مَسْئُوْل	سَائِل	سَلْ	يَسْئَلُ	سَأَلَ	س أ ل / ف	119

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
जुल्म करने वाला	أَظْلَم ↑	ظَالِم
गवाही	شَهَادَات	شَهَادَة
उम्मत	أُمَم	أُمَّة

www.understandquran.com

अ़रबी ग्रामर

(अ़रबी बोल–चाल के साथ)

www.understandquran.com

जुमला फ़ेअ़लिया

अ़रबी ग्रामर के दो हिस्से हैं: सर्फ़ "صرف" और नह़व "نحو"। इन की आसान सी तारीफ़ कुछ इस तरह़ से होगी।

- सर्फ़ "صرف": हुरूफ़ से अल्फ़ाज़ कैसे बनाए जाते हैं (आ़म तौर पर तीन हुरूफ़ से एक लफ़्ज़ बनता है)।

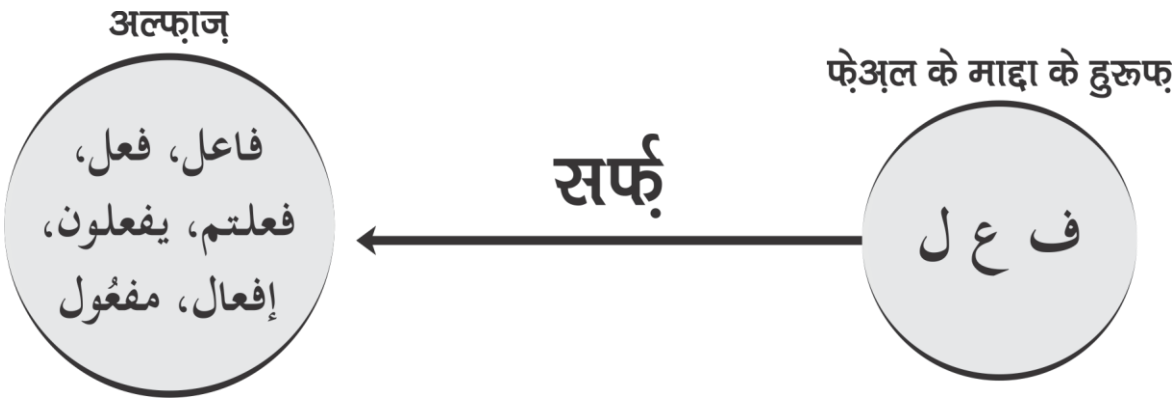

- नह़व "نحو": अल्फ़ाज़ से जोड़े और जुमले कैसे बनाए जाते हैं।

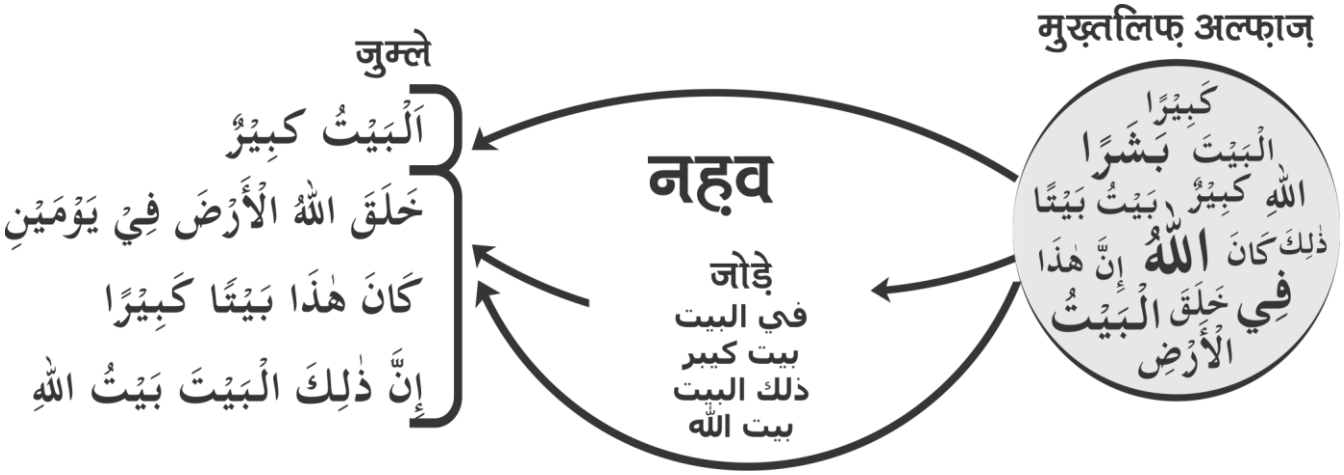

जब आप जुमले बनाते हैं तो अस्मा के आख़िर में (ـُـ، ـٌـ، ونْ، ينْ) होते हैं, यह मुख़तलिफ़ ह़ालात की बुनियाद पर बदलते हैं कभी फ़ायल तो कभी मफ़ऊल और कभी किसी और वजह से। यह तमाम तबदीलीयाँ नह़व के ज़रिया समझी जा सकती हैं।

इस कोर्स में हम चार जोड़े और चार क़िस्म के जुमले बनाना सीखेंगे। पिछले कोर्स में हम ने जुमला इस्मिया के बारे में पढ़ा। इस सबक़ में हम जुमला फेअ़लिया के बारे में पढ़ेंगे, इन्शा अल्लाह।

www.understandquran.com

जुमला इस्मियाः जो इस्म से शुरूअ़ हो।

जुमला फेअ़लियाः जो फ़ेअ़ल से शुरूअ़ हो।

आईए जुमला फेअ़लिया की एक मिसाल लेते हैं।

الْأَرْضَ	اللهُ	خَلَقَ
ज़मीन को	अल्लाह ने पैदा किया	
Object :مَفْعُوْل بِهٖ	Subject :فَاعِل	Verb :فِعْل
नसब की ह़ालत	रफ़अ़ की ह़ालत	

कुछ और मिसालेंः

याद किया मुस्लिम ने कुरआन को	حَفِظَ الْمُسْلِمُ الْقُرْاٰنَ
पढ़ता है मोमिन ह़दीस को	يَقْرَأُ الْمُؤْمِنُ الْحَدِيْثَ
सुनता है नेक आदमी सीरत को	يَسْمَعُ الصَّالِحُ السِّيْرَةَ

फ़ायल की जमा बनाईएः

حَفِظَ الْمُسْلِمُ الْقُرْاٰنَ ← حَفِظَ الْمُسْلِمُوْنَ الْقُرْاٰنَ

يَقْرَأُ الْمُؤْمِنُ الْحَدِيْثَ ← يَقْرَأُ الْمُؤْمِنُوْنَ الْحَدِيْثَ

يَسْمَعُ الصَّالِحُ السِّيْرَةَ ← يَسْمَعُ الصَّالِحُوْنَ السِّيْرَةَ

अगर जुमले में फ़ेअ़ल और फ़ायल दोनों हों तो ऐसी सूरत में फ़ेअ़ल वाह़िद आएगा

- गोया काम आसान है सिर्फ़ फ़ायल को जमा बनाएँ, फ़ेअ़ल की जमा बनाने की ज़रूरत नहीं।

फ़ेअ़ल और फ़ायल की मोअन्नस बनाईए।

حَفِظَ الْمُسْلِمُ الْقُرْاٰنَ ← حَفِظَتِ الْمُسْلِمَةُ الْقُرْاٰنَ

يَقْرَأُ الْمُؤْمِنُ الْحَدِيْثَ ← تَقْرَأُ الْمُؤْمِنَةُ الْحَدِيْثَ

يَسْمَعُ الصَّالِحُ السِّيْرَةَ ← تَسْمَعُ الصَّالِحَةُ السِّيْرَةَ

www.understandquran.com

إِنَّ और उस की बहनें (أَنَّ، كَأَنَّ، لٰكِنَّ)

إِنَّ पहले इस्म पर ज़बर देता है, यानी नसब की ह़ालत में कर देता है इस की बेहतरीन क़ुरआनी मिसाल।

غَفُوْرٌ	اللّٰهَ	إِنَّ
خبر إِنَّ	اسم إِنَّ	
बख़शने वाला है	अल्लाह	बेशक

कुछ और मिसालें:

इन जुमलों में إِنَّ बढ़ाईए:

مُحَمَّدٌ رَسُوْلٌ ﷺ ← إِنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلٌ ﷺ

هُوْدٌ نَبِيٌّ ← إِنَّ هُوْدًا نَبِيٌّ

زَيْدٌ صَغِيْرٌ ← إِنَّ زَيْداً صَغِيْرٌ

سَعْدٌ كَبِيْرٌ ← إِنَّ سَعْدًا كَبِيْرٌ

इन जुमलों में إِنَّ बढ़ाईए:

اَلْمُسْلِمُ صَادِقٌ ← إِنَّ الْمُسْلِمَ صَادِقٌ

اَلْمُؤْمِنُ صَالِحٌ ← إِنَّ الْمُؤْمِنَ صَالِحٌ

اَلْمُنَافِقُ فَاسِقٌ ← إِنَّ الْمُنَافِقَ فَاسِقٌ

इन जुमलों में إِنَّ बढ़ाईए:

नोटः مُسْلِمَةً और مُسْلِمَةٍ की जमा مُسْلِمَاتٍ होती है, बस अ़लामत को ज़ेहन में रख कर TPI के साथ मशक़ कीजिए।

اَلْمُسْلِمَةُ صَادِقَةٌ ← إِنَّ الْمُسْلِمَةَ صَادِقَةٌ

اَلْمُؤْمِنَةُ صَالِحَةٌ ← إِنَّ الْمُؤْمِنَةَ صَالِحَةٌ

اَلْمُنَافِقَةُ فَاسِقَةٌ ← إِنَّ الْمُنَافِقَةَ فَاسِقَةٌ

नोटः مُسْلِمًا और مُسْلِمٍ की जमा مُسْلِمِيْنَ होती है, बस अ़लामत को ज़ेहन में रख कर TPI के साथ मशक़ कीजिए।

اَلْمُسْلِمُ ← اَلْمُسْلِمُوْنَ असली ह़ालत (रफ़अ़ की है)

اَلْمُسْلِمَ ← اَلْمُسْلِمِيْنَ असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत है)

www.understandquran.com

इन जुमलों में اِنَّ बढ़ाईए:

اَلْمُسْلِمُوْنَ صَادِقُوْنَ ← إِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ صَادِقُوْنَ

اَلْمُؤْمِنُوْنَ صَالِحُوْنَ ← إِنَّ الْمُؤْمِنِيْنَ صَالِحُوْنَ

اَلْمُنَافِقُوْنَ فَاسِقُوْنَ ← إِنَّ الْمُنَافِقِيْنَ فَاسِقُوْنَ

- कुछ और अल्फ़ाज़ हैं जो إِنَّ की तरह काम करते हैं। इन को إِنَّ की बहनें कहा जाता है।

لٰكِنَّ	كَأَنَّ	أَنَّ
लेकिन	जैसे कि	कि

- اَلْبَيْتُ كَبِيرٌ से पहले इन कलिमात को बढ़ाईए:

أَنَّ ← أَنَّ الْبَيْتَ كَبِيرٌ

كَأَنَّ ← كَأَنَّ الْبَيْتَ كَبِيرٌ

لٰكِنَّ ← لٰكِنَّ الْبَيْتَ كَبِيرٌ

www.understandquran.com

كَانَ और उस की बहनें (أَصْبَحَ، أَمْسٰى)

كَانَ के साथ जुमले की बेहतरीन कुरआनी मिसाल नीचे दी गई है। اَللّٰهُ غَفُوْرٌ के सामने जब كَانَ आए तो वह ख़बर को नसब की ह़ालत में कर देता है:

كَانَ	اللّٰهُ	غَفُوْرًا
	اسم كَانَ	خبر كَانَ
	अल्लाह है	बख़्शने वाला

➢ इन जुमलों में كَانَ का इज़ाफ़ा कीजिए।

पहली सूरतः नाम वाले जुमले, दोनों को तन्वीन	
هُوْدٌ نَبِيٌّ ←	كَانَ هُوْدٌ نَبِيًّا
زَيْدٌ صَغِيْرٌ ←	كَانَ زَيْدٌ صَغِيْرًا
سَعْدٌ كَبِيْرٌ ←	كَانَ سَعْدٌ كَبِيْرًا

दूसरी सूरतः पहले पर "ال", दूसरे को तन्वीन	
اَلْمُسْلِمُ صَادِقٌ ←	كَانَ الْمُسْلِمُ صَادِقًا
اَلْمُؤْمِنُ صَالِحٌ ←	كَانَ الْمُؤْمِنُ صَالِحًا
اَلْمُنَافِقُ فَاسِقٌ ←	كَانَ الْمُنَافِقُ فَاسِقًا

तीसरी सूरतः मोअन्नस अस्मा	
اَلْمُسْلِمَةُ صَادِقَةٌ ←	كَانَتِ الْمُسْلِمَةُ صَادِقَةً
اَلْمُؤْمِنَةُ صَالِحَةٌ ←	كَانَتِ الْمُؤْمِنَةُ صَالِحَةً
اَلْمُنَافِقَةُ فَاسِقَةٌ ←	كَانَتِ الْمُنَافِقَةُ فَاسِقَةً

चौथी सूरतः अस्मा जमा की शक्ल में	
اَلْمُسْلِمُوْنَ صَادِقُوْنَ ←	كَانَ الْمُسْلِمُوْنَ صَادِقِيْنَ
اَلْمُؤْمِنُوْنَ صَالِحُوْنَ ←	كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ صَالِحِيْنَ
اَلْمُنَافِقُوْنَ فَاسِقُوْنَ ←	كَانَ الْمُنَافِقُوْنَ فَاسِقِيْنَ

नोटः مُسْلِمًا और مُسْلِمٍ की जमा مُسْلِمِيْنَ होती है, बस अ़लामत को ज़ेहन में रख कर **TPI** के साथ मशक कीजिए।

اَلْمُسْلِمُ असली ह़ालत (रफ़अ़ की है) اَلْمُسْلِمُوْنَ

اَلْمُسْلِمَ असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत है) اَلْمُسْلِمِيْنَ

➢ कुछ और अल्फ़ाज़ हैं जो كَانَ की तरह़ काम करते हैं। इन को كَانَ की बहनें कहा जाता है। इन में से दो नीचे दिए जा रहे हैं।

أَصْبَحَ	सुब्ह़ की, हो गया
أَمْسٰى	शाम की, हो गया

➢ اَلْبَيْتُ كَبِيْرٌ से पहले इन कलिमात को बढ़ाईए:

كَانَ	←	كَانَ الْبَيْتُ كَبِيْرًا
أَصْبَحَ	←	أَصْبَحَ الْبَيْتُ كَبِيْرًا
أَمْسٰى	←	أَمْسَى الْبَيْتُ كَبِيْرًا

www.understandquran.com

पहली जोड़ीः حرف جر+ اسم (واحد)

अब तक हम ने चार क़िस्म के जुमले सीख लिएः

اِسْمِيَّة : اَللّٰهُ غَفُورٌ

فِعْلِيَّة : خَلَقَ اللّٰهُ الْأَرْضَ

إِنَّ के साथः إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ

كَانَ के साथः كَانَ اللّٰهُ غَفُورًا

यहाँ से हम चार अहम क़िस्म की जोड़ियाँ सीखेंगे। नीचे इन जोड़ियों की सादा मिसाल दी गई है। यह मिसालें इन जोड़ियों को आसानी से याद करने में काफ़ी मुआविन हैं।

	मिसालें	वज़ाहत
हर्फ़े जर के साथ→	فِي الْأَرْضِ	
सिफ़त के साथ→	بَيْتٌ كَبِيْرٌ	कैसा
इशारा के साथ→	ذٰلِكَ الْبَيْتُ	कौन सा
तअल्लुक़→	بَيْتُ اللّٰهِ	किस का

सवाल यह है कि इन जोड़ियों को सीखने की क्या ज़रूरत है? इस को उर्दू में दो अल्फ़ाज़ की जोड़ी वाली मिसाल से समझएः अल्लाह का घर। इस से बने दो जुमले लीजिएः यह अल्लाह का घर है। मैं अल्लाह के घर में हूँ। जोड़ी वही है मगर एक जुमले में ''अल्लाह का घर'' है और दूसरे में ''अल्लाह के घर''। यानी जुमले के लिहाज़ से इस के अंदर थोड़ी सी तबदीली होती है। कुछ इसी तरह की तबदीलीयाँ (ज़बर ज़ेर वग़ैरा के ज़रिए) अरबी अल्फ़ाज़ के जोड़ों में भी आती हैं, इस लिए इन को यहाँ सिखाया जा रहा है।

इस सबक़ में हम पहला जोड़ा लेंगे। (जार मजरूर) ...لِ، مِنْ، عَنْ، بِ، فِي، عَلٰى، إِلٰى, इन के बाद इस्म जर की हालत में होता है (ـِـ ـٍـ ـِـ ين)

➢ हालते जर की मिसालें

जर की हालत	हुरूफ़
فِي الْأَرْضِ	بِـــاللّٰهِ
لِـــلْمُسْلِمِيْنَ	
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	

www.understandquran.com

➢ हालते जर की कुछ और मिसालें

अगर मारिफ़ा (اَلْـ) इस्म से पहले لِ हो (ـٍ ـٍ ـٍ)			अगर आम इस्म से पहले لِ हो (ـٍ ـٍ ـٍ)			TPI के साथ मश्क कीजिए	
الْمُسْلِمُ	←	لِلْمُسْلِمِ	مُسْلِمٌ	←	لِمُسْلِمٍ	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	مُسْلِمٌ
الْمُؤْمِنُ	←	لِلْمُؤْمِنِ	مُؤْمِنٌ	←	لِمُؤْمِنٍ	असर पड़े तो (नसब की हालत)	مُسْلِمًا
الصَّالِحُ	←	لِلصَّالِحِ	صَالِحٌ	←	لِصَالِحٍ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	مُسْلِمٍ
النَّاصِرُ	←	لِلنَّاصِرِ	نَاصِرٌ	←	لِنَاصِرٍ		

➢ अगर किसी हर्फ़े जर के बाद लफ़्ज़ اللهُ आए

بِـ	←	بِاللهِ	مِنْ	←	مِنَ اللهِ	إِلَى	←	إِلَى اللهِ
لِـ	←	لِلّٰهِ	فِيْ	←	فِي اللهِ	عَلَى	←	عَلَى اللهِ

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 17a पहली जोड़ीः حرف جر+ اسم (جمع)

इस सबक़ में हम ह़र्फ़े जर को अस्मा (जमा) के साथ सीखेंगे। ...لِ، مِنْ، عَنْ، بِ، فِي، عَلٰى، إِلٰى, इन के बाद वाला इस्म जर की ह़ालत मैं होता है (ـِـ ـٍـ ين)। पहले हम वाह़िद और जमा की ह़ालतों की TPI के साथ मशक़ करेंगे।

اَلْمُسْلِمُ		असली ह़ालत (रफ़अ़) की ह़ालत	اَلْمُسْلِمُوْنَ
اَلْمُسْلِمَ		असर पड़े तो (नसब की ह़ालत)	اَلْمُسْلِمِيْنَ
اَلْمُسْلِمِ		हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	اَلْمُسْلِمِيْنَ

➢ ह़ालते जर की कुछ और मिसालें

अगर لِ के बाद इस्म (जमा) माअ़रफ़ा हो (الْـ)		
اَلْمُسْلِمُوْنَ	←	لِلْمُسْلِمِيْنَ
اَلْمُؤْمِنُوْنَ	←	لِلْمُؤْمِنِيْنَ
اَلصَّالِحُوْنَ	←	لِلصَّالِحِيْنَ
اَلنَّاصِرُوْنَ	←	لِلنَّاصِرِيْنَ

अगर مِنْ के बाद इस्म (जमा) माअ़रफ़ा हो (الْـ)		
اَلْمُسْلِمُوْنَ	←	مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ
اَلْمُؤْمِنُوْنَ	←	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
اَلصَّالِحُوْنَ	←	مِنَ الصَّالِحِيْنَ
اَلنَّاصِرُوْنَ	←	مِنَ النَّاصِرِيْنَ

➢ क़ुरआन से मिसालें

هُدًى	لِّلْمُتَّقِيْنَ
हिदायत है	अल्लाह से डरने वालों के लिए
وَمَا هُمْ	بِمُؤْمِنِيْنَ
ह़ालाँकि वह सब नहीं हैं	ईमान लाने वाले
وَكَانَ	مِنَ الْكٰفِرِيْنَ
और हो गया	काफ़िरों में से
وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ	عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
और अल्लाह फ़ज़्ल वाला है	मोमिनों पर
فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ	عَنِ الْعٰلَمِيْنَ
पस अल्लाह बेनेयाज़ है	तमाम जहानों से

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ	فِي الصّٰلِحِيْنَ
और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए हम उन्हें ज़रूर शामिल करेंगे	नेक लोगों में

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 17b رَفْع، نَصْب، جَرّ वाहिद अस्मा के लिए

आज के सबक़ में हम वाहिद अस्मा के जुमलों की रफ़अ़, नसब, ज़र के साथ मशक़ करेंगे।

➢ इन जुमलों का तर्जमा देखिए (मशक़ के दौरान फ़ेअ़ल और फ़ायल को एक साथ रखिए)

जुमलों से मिसाल		ह़ालत	
(एक मुस्लिम आया)	جَاءَ مُسْلِمٌ	असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)	مُسْلِمٌ
(ज़ैद ने देखा एक मुस्लिम को)	رَأٰى زَيْدٌ مُسْلِمًا	असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)	مُسْلِمًا
(ज़ैद ने सुना एक मुस्लिम से)	سَمِعَ زَيْدٌ مِنْ مُسْلِمٍ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	مُسْلِمٍ

➢ इन जुमलों का तर्जमा देखिए। सिर्फ़ अस्मा के लिए TPI के साथ मश्क कीजिए।

जुमलों से मिसाल		ह़ालत	
एक ख़ास मुस्लिम आया	جَاءَ الْمُسْلِمُ	असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)	اَلْمُسْلِمُ
ज़ैद ने देखा एक ख़ास मुस्लिम को	رَأٰى زَيْدٌ الْمُسْلِمَ	असर पड़े तो (नसब की ह़ालत)	اَلْمُسْلِمَ
ज़ैद ने सुना एक ख़ास मुस्लिम से	سَمِعَ زَيْدٌ مِنَ الْمُسْلِمِ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	اَلْمُسْلِمِ

➢ कुरआन से मिसालें। सिर्फ़ अस्मा के लिए TPI के साथ मशक़ कीजिए।

يَقُوْلُ الْكَافِرُ	اٰمَنَ النَّاسُ	سَمِعَ اللّٰهُ
काफ़िर कहता है	लोग ईमान लाए	अल्लाह ने सुना

➢ मज़ीद कुरआनी मिसालें। सिर्फ़ अस्मा के लिए TPI के साथ मशक़ कीजिए। बाज़ जुमलों में फ़ायल लिखा हुआ नहीं होता। वहाँ पर - लगाया गया है।

الْأَرْضَ	اللّٰهُ	خَلَقَ
ज़मीन को	अल्लाह ने	पैदा किया
الْقَوَاعِدَ	اِبْرٰهِمُ	يَرْفَعُ
बुनियादों को	इबराहीम	बुलंद करते हैं
الرَّسُوْلَ	فِرْعَوْنُ	عَصٰى
रसूल की	फिरऔन ने	ना-फ़रमानी की
الْكِتٰبَ	-	اَنْزَلَ
किताब को	-	उस ने उतारा
اللّٰهَ	-	اَطِيْعُوْا
अल्लाह की	-	इताअ़त करो
النَّارَ	-	وَاتَّقُوْا
आग से	-	और डरो

www.understandquran.com

رَفْع، نَصْب، جَرّ जमा अस्मा के लिए

आज के सबक़ में हम जमा अस्मा के जुमलों की रफ़अ़, नसब, जर के साथ मशक़ करेंगे।

➢ इन जुमलों का तर्जमा देखिए (मशक़ के दौरान फ़ेअ़ल और फ़ायल को एक साथ रखिए)

जुमलों से मिसाल		हालत	
मुसलमान आए	جَاءَ مُسْلِمُوْنَ	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	مُسْلِمُوْنَ
ज़ैद ने देखा मुसलमानों को	رَأٰى زَيْدٌ مُسْلِمِيْنَ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की हालत)	مُسْلِمِيْنَ
ज़ैद ने सुना मुसलमानों से	سَمِعَ زَيْدٌ مِنْ مُسْلِمِيْنَ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	مُسْلِمِيْنَ

➢ इन जुमलों का तर्जमा देखिए (मशक़ के दौरान फ़ेअ़ल और फ़ायल को एक साथ रखिए)

जुमलों से मिसाल		हालत	
ख़ास मुसलमान आए	جَاءَ الْمُسْلِمُوْنَ	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	الْمُسْلِمُوْنَ
ज़ैद ने देखा ख़ास मुसलमानों को	رَأٰى زَيْدٌ الْمُسْلِمِيْنَ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की हालत)	الْمُسْلِمِيْنَ
ज़ैद ने सुना ख़ास मुसलमानों से	سَمِعَ زَيْدٌ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	الْمُسْلِمِيْنَ

➢ कुरआन से मिसालें। सिर्फ़ अस्मा के लिए TPI के साथ मशक़ कीजिए।

يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ	يَقُوْلُ الْكَافِرُوْنَ	قَالَ الظّٰلِمُوْنَ
ईमान वाले खुश होते हैं	काफ़िर कहते हैं	ज़ालिमों ने कहा

➢ मज़ीद कुरआनी मिसालें। सिर्फ़ अस्मा लिए TPI के साथ मशक़ कीजिए। बाज़ जुमलों में फ़ायल लिखा हुआ नहीं होता। वहाँ पर – लगाया गया है।

الظّٰلِمِيْنَ	يُضِلُّ اللّٰهُ
ज़ालिमों को	गुमराह करता है अल्लाह
الشّٰكِرِيْنَ	سَيَجْزِى اللّٰهُ
शुक्र करने वालों को	अ़ंक़रीब अल्लाह बदला देगा
الْمُرْسَلِيْنَ	كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ
रसूलों को	झुठलाया समूद ने
الْكٰفِرِيْنَ	لَا يُحِبُّ
काफ़िरों को	वह पसंद नहीं करता है
الظّٰلِمِيْنَ	لَا يُحِبُّ
ज़ालिमों को	वह पसंद नहीं करता है
الصّٰبِرِيْنَ	بَشِّرِ
सब्र करने वालों को	खुशख़बरी दे दीजिए

www.understandquran.com

दूसरी जोड़ी: اسم + صفت (واحد)

इस सबक़ में हम दोसरी जोड़ी के मुतअ़ल्लिक़ पढ़ेंगे। एक इस्म और उस की सिफ़त को लेते हैं।

- अ़रबी में पहले इस्म लिखा जाता है और फिर उस के बाद उस की सिफ़त। بَيْتٌ كَبِيْرٌ (इस्म, सिफ़त)
- बड़े घर के बजाए घर बड़ा, क्यों? फ़र्ज़ कीजिए आपने कहा: मैंने एक बहुत बड़ा स्याह ख़ौफ़नाक बालों वाला कीड़ा देखा (या वह भालू था?) अ़रबी में, आप सब से पहले चीज़ का नाम लेते हैं कीड़े; और फिर उस की सिफ़ात के बारे में बात करते हैं।
- दो लफ़्ज़ के लिए दो बार इशारा करते हुए **TPI** के साथ मशक़ कीजिए।

जुमलों से मिसाल	हालत	
هٰذَا بَيْتٌ كَبِيْرٌ	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	بَيْتٌ كَبِيْرٌ
رَأٰى زَيْدٌ بَيْتًا كَبِيْرًا	असर पड़ने की सूरत में (नसब की हालत)	بَيْتًا كَبِيْرًا
زَيْدٌ فِيْ بَيْتٍ كَبِيْرٍ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	بَيْتٍ كَبِيْرٍ

- TPI के साथ मशक़ कीजिए। مُسْلِمٌ صَادِقٌ एक सच्चा मुसलमान

जुमलों से मिसाल	हालत	
جَاءَ مُسْلِمٌ صَادِقٌ	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	مُسْلِمٌ صَادِقٌ
رَأٰى زَيْدٌ مُسْلِمًا صَادِقًا	असर पड़ने की सूरत में (नसब की हालत)	مُسْلِمًا صَادِقًا
سَمِعَ زَيْدٌ مِنْ مُسْلِمٍ صَادِقٍ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	مُسْلِمٍ صَادِقٍ

- मिसाल "اَلْ" के साथ, अगर इस्म के साथ ال हो तो सिफ़त के साथ भी ال होगा, اَلْمُسْلِمُ الصَّادِقُ एक ख़ास सच्चा मुस्लिम।

जुमलों से मिसाल	हालत	
جَاءَ الْمُسْلِمُ الصَّادِقُ	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	اَلْمُسْلِمُ الصَّادِقُ
رَأٰى زَيْدٌ الْمُسْلِمَ الصَّادِقَ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की हालत)	اَلْمُسْلِمَ الصَّادِقَ
سَمِعَ زَيْدٌ مِنَ الْمُسْلِمِ الصَّادِقِ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	اَلْمُسْلِمِ الصَّادِقِ

- क़ुरआन से मिसालें।

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ मैं पनाह में आता हूँ अल्लाह की मर्दूद शैतान से	اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ हमें हिदायत दे सीधे रास्ते की
وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ और यह खुली कामयाबी है	وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ और तुम्हारा माबूद एक माबूद है
وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا और कहो उन से अच्छी बात	اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ، فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ बेशक यह मुअज़्ज़ज़ क़ुरआन है महफ़ूज़ किताब में

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 18a दूसरी जोड़ी: اسم + صفت (جمع)

इस सबक़ में हम दूसरी जोड़ी के मुतअ़ल्लिक़ पढ़ेंगे। एक जमा इस्म और उस की सिफ़त को लेते हैं।

सच्चे मुसलमान مُسْلِمُونَ صَادِقُونَ

➢ दो लफ़्ज़ के लिए दो बार इशारा करते हुए **TPI** के साथ मशक़ कीजिए।

जुमलों से मिसाल	हालत	
جَاءَ مُسْلِمُونَ صَادِقُوْنَ	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	مُسْلِمُوْنَ صَادِقُوْنَ
رَأٰى زَيْدٌ مُسْلِمِيْنَ صَادِقِيْنَ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की हालत)	مُسْلِمِيْنَ صَادِقِيْنَ
سَمِعَ زَيْدٌ مِنْ مُسْلِمِيْنَ صَادِقِيْنَ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	مُسْلِمِيْنَ صَادِقِيْنَ

➢ मिसाल "اَلْ" के साथ। अगर इस्म के साथ ال हो तो सिफ़त के साथ भी ال होगा। اَلْمُسْلِمُوْنَ الصَّادِقُوْنَ सच्चे मुसलमान

जुमलों से मिसाल	हालत	
جَاءَ الْمُسْلِمُونَ الصَّادِقُوْنَ	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	اَلْمُسْلِمُونَ الصَّادِقُوْنَ
رَأٰى زَيْدٌ الْمُسْلِمِيْنَ الصَّادِقِيْنَ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की हालत)	اَلْمُسْلِمِيْنَ الصَّادِقِيْنَ
سَمِعَ زَيْدٌ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ الصَّادِقِيْنَ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	اَلْمُسْلِمِيْنَ الصَّادِقِيْنَ

➢ क़ुरआन से मिसालें।

فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ

पस बेशक अल्लाह राज़ी नहीं होता है ज़ालिम क़ौम से

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ

और अल्लाह हिदायत नहीं देता है ज़ालिम क़ौम को

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ

उन लोगों ने कहा बेशक हम भेजे गए हैं मुजरिम क़ौम की तरफ़

www.understandquran.com

18b तीसरी जोड़ी: إِشَارَة + اِسْم (هٰذَا، هٰؤُلَاءِ)

आज के सबक़ में हम तीसरी जोड़ी सीखेंगे। इन को हम जानते हैं هٰذَا، هٰؤُلَآءِ, (यह, यह सब)। जब आप هٰذَا कहते हुए किसी चीज़ की तरफ़ इशारा करते हैं तो उस वक़्त वह चीज़ ख़ास हो जाती है। इस लिए उस लफ़्ज़ के शुरू में الْ लगाया जाता है।

هٰذَا الْبَيْتُ

यह घर

- यह इशारे की जोड़ी है। इस सवाल का जवाब: कौन?
- किसी भी ह़ालत में कोई तबदीली! नहीं TPI का इस्तिमाल कीजिए। सिर्फ़ एक अ़लामत क्योंकि सिर्फ़ एक लफ़्ज़ की अ़लामत बदल रही है।

जुमलों से मिसाल	ह़ालत	
هٰذَا الْبَيْتُ	असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)	هٰذَا
هٰذَا الْبَيْتَ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)	هٰذَا
هٰذَا الْبَيْتِ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	هٰذَا

- इन जुमलों की TPI के साथ मशक़ कीजिए!

जुमलों से मिसाल	ह़ालत	
بَيْتِي هٰذَا الْبَيْتُ	असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)	هٰذَا
رَأَى زَيْدٌ هٰذَا الْبَيْتَ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)	هٰذَا
زَيْدٌ فِي هٰذَا الْبَيْتِ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	هٰذَا

- इशारे की जोड़ी को लफ़्ज़ مُسْلِم के साथ TPI के साथ मशक़ कीजिए!

जुमलों से मिसाल	ह़ालत	
جَاءَ هٰذَا الْمُسْلِمُ	असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)	هٰذَا الْمُسْلِمُ
رَأَى زَيْدٌ هٰذَا الْمُسْلِمَ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)	هٰذَا الْمُسْلِمَ
سَمِعَ زَيْدٌ مِنْ هٰذَا الْمُسْلِمِ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	هٰذَا الْمُسْلِمِ

www.understandquran.com

जमा की मशक़ कीजिए!

- जैसा कि आपने सीखा कि किसी भी ह़ालत में कोई भी तबदीली नहीं, इसी तरह़ जमा के सेग़े में भी **TPI** का इशारा करते हुए कोई तबदीली नहीं होगी। सिर्फ़ एक अ़लामत क्योंकि सिर्फ़ एक लफ़्ज़ की अ़लामत बदल रही है।
- किसी भी ह़ालत में कोई तबदीली नहीं **TPI** का इस्तिमाल कीजिए। सिर्फ़ एक अ़लामत क्योंकि सिर्फ़ एक लफ़्ज़ की अ़लामत बदल रही है।

जुमलों से मिसाल	ह़ालत	
هٰؤُلَآءِ الْمُسْلِمُوْنَ	असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)	هٰؤُلَآءِ
هٰؤُلَآءِ الْمُسْلِمِينَ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)	هٰؤُلَآءِ
هٰؤُلَآءِ الْمُسْلِمِينَ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	هٰؤُلَآءِ

- इन जुमलों की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए!

جَاءَ هٰؤُلَآءِ الْمُسْلِمُوْنَ

رَأٰى زَيْدٌ هٰؤُلَآءِ الْمُسْلِمِينَ

سَمِعَ زَيْدٌ مِنْ هٰؤُلَآءِ الْمُسْلِمِينَ

- इशारे के दूसरे अल्फ़ाज़

ذٰلِكَ	أُولٰٓئِكَ
वह	वह सब

- कुरआन से मिसालें (मशक़ के दौरान फेअ़ल और फ़ायल को एक साथ रखिए)।

اَوْحَيْنَآ	اِلَيْكَ	هٰذَا الْقُرْاٰنَ
आपकी तरफ़ हम ने वह्य की		इस कुरआन को

اِنَّ	هٰذَا الْقُرْاٰنَ	يَهْدِىْ
बेशक	यह कुरआन	हिदायत देता है

وَلَقَدْ	ضَرَبْنَا	لِلنَّاسِ	فِى هٰذَا الْقُرْاٰنِ	مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
और अलबत्ता तह़क़ीक़	हमने ब्यान की है	लोगों के लिए	इस कुरआन में	हर तरह़ की मिसाल

www.understandquran.com

चौथी जोड़ी का तआ़रूफ़ (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है)

आज के सबक़ में दो लफ़्ज़ों के दरमियान तअ़ल्लुक़ की जोड़ी सीखेंगे।

➢ आपने इस जोड़ी को ज़रूर सुना होगाः

اللّٰهِ	بَيْتُ
अल्लाह का	घर

➢ पहले लफ़्ज़ पर ज़म्मा दीजिए और दूसरे लफ़्ज़ पर कसरा दीजिए। यह दो लफ़्ज़ों के दरमियान तअ़ल्लुक़ को बताता है।

بَيْتُ اللّٰهِ

दूसरा लफ़्ज़ सवाल ''किस का''? का जवाब है

➢ बहुत सारे नाम इसी वज़न पर आते हैं।

अल्लाह का बन्दा	عَبْدُ اللّٰهِ
बहुत ज़्यादा मेहरबानी करने वाले का बंदा	عَبْدُ الرَّحْمٰنِ
दीन का मददगार	نَصِيْرُ الدِّيْنِ

➢ कुछ और मिसालें (नामों के साथ)।

ज़ैद का घर	بَيْتُ زَيْدٍ
हूद की क़ौम	قَوْمُ هُوْدٍ
मोहम्मद ﷺ का रब	رَبُّ مُحَمَّدٍ ﷺ

➢ कुरआनी मिसालेंः

مُحَمَّدٌ	رَّسُوْلُ اللّٰهِ	
मोहम्मद ﷺ	अल्लाह के रसूल हैं	
اِذَا جَآءَ	نَصْرُ اللّٰهِ	وَالْفَتْحُ
जब आ जाए	अल्लाह की मदद	और फ़तह
كَذَّبَتْ	قَبْلَهُمْ	قَوْمُ نُوحٍ
झुठलाया	उन से पहले	नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ने

www.understandquran.com

चौथी जोड़ी (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है) رَفْع، نَصْب، جَرّ

पिछले सबक़ में हमने दो लफ़्ज़ों के दरमियान तअ़ल्लुक़ की जोड़ी को देखा। इन्शा अल्लाह आज के सबक़ में हम इस जोड़ी को जुमलों में इस्तिमाल करना सीखेंगे:

➢ हम पिछले सबक़ में (بَيْتُ الله) पढ़ चुके हैं। अब इस की तीनों ह़ालतों के मुतअल्लिक़ पढ़ेंगे। ध्यान से देखिए कि दूसरा लफ़्ज़ जर की ह़ालत में रहता है इस में कोई तबदीली नहीं होती है, सिर्फ़ पहले लफ़्ज़ में तबदीली होती है। आप सिर्फ़ पहले लफ़्ज़ के लिए इशारा करेंगे, नीचे दिए गए जुमलों की टी पी आई के साथ प्रैक्टिस कीजिए:

जुमलों से मिसाल	ह़ालत	
هٰذَا بَيْتُ اللهِ	असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)	بَيْتُ اللهِ
رَأٰى زَيْدٌ بَيْتَ اللهِ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)	بَيْتَ اللهِ
سَمِعَ زَيْدٌ مِنْ هٰذَا الْمُسْلِمِ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	بَيْتِ اللهِ

➢ अब दूसरी मिसाल लेते हैं رَبُّ الْاَرْضِ (ज़मीन का रब)। जुमलों की टी पी आई के साथ प्रैक्टिस कीजिए: **TPI** का इशारा सिर्फ़ एक मर्तबा कीजिए क्योंकि सिर्फ़ एक लफ़्ज़ में तबदीली हो रही है।

जुमलों से मिसाल	ह़ालत	
اَللهُ رَبُّ الْأَرْضِ	असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)	رَبُّ الْأَرْضِ
أَعْبُدُ رَبَّ الْأَرْضِ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)	رَبَّ الْأَرْضِ
أَعُوْذُ بِرَبِّ الْأَرْضِ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	رَبِّ الْأَرْضِ

➢ कुरआनी मिसालें:

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللهِ
जो लोग तोड़ते हैं अल्लाह के अ़ह्द को

اِنِّيْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
बेशक मैं जानता हूँ आसमानों और ज़मीन की पोशीदा चीज़ों को

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ
वस्वसा डालने वाले के शर से

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ
कह दीजिए मैं पनाह में आता हूँ लोगों के रब की

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ
क्या तुमने नहीं देखा? कैसा किया तेरे रब ने हाथी के साथीयों के साथ

وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللهِ اَفْوَاجًا
और आप देखें लोगों को दाख़िल हो रहे हैं अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज

www.understandquran.com

चौथी जोड़ी (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है)
رَفْع، نَصْب، جَرّ (ज़मायर के साथ)

इस सबक़ में हम तअ़ल्लुक़ की जोड़ी को ज़मायर के साथ मिला कर सीखेंगे, मसलन हम بَيْتُ اللهِ के बजाए بَيْتُهٗ को लेंगे और इस जोड़ी को जुमलों में इस्तिमाल करते हुए TPI के साथ प्रैक्टिस करेंगे। (नोटः ـهٗ، ـهُم، ـكَ، ـكُمْ، ـِي، ـنَا में कोई तबदीली नहीं आती)।

जुमलों से मिसाल	हालत	
هٰذَا بَيْتُهٗ	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	بَيْتُـهٗ
دَخَلَ زَيْدٌ بَيْتَهٗ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की हालत)	بَيْتَـهٗ
زَيْدٌ فِيْ بَيْتِهٖ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	بَيْتِـهٖ

नोटः بَيْتِهٖ के बजाए सहूलत के लिए بَيْتِهٖ पढ़ा जाता है।

➢ अब मोअन्नस की ज़मीर (رَبُّـهَا) की मिसाल लेंगे और इस जोड़ी को जुमलों में इस्तिमाल करते हुए TPI के साथ प्रैक्टिस करेंगे।

जुमलों से मिसाल	हालत	
اَللهُ رَبُّهَا	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	رَبُّـهَا
أَعْبُدُ رَبَّهَا	असर पड़ने की सूरत में (नसब की हालत)	رَبَّـهَا
أَعُوْذُ بِرَبِّهَا	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	رَبِّـهَا

➢ अब देखते हैं इस जोड़ी पर हुरूफ़े जर का क्या असर पड़ता है।

तअ़ल्लुक़ की जोड़ी पर अगर हर्फ़े जर "مِنْ" हो		
رَبُّـهٗ	←	مِنْ رَّبِّـهٖ
رَبُّـهُمْ	←	مِنْ رَّبِّـهِمْ
رَبُّـكَ	←	مِنْ رَّبِّـكَ
رَبِّـيْ	←	مِنْ رَّبِّـيْ
رَبُّـكُمْ	←	مِنْ رَّبِّـكُمْ
رَبُّـنَا	←	مِنْ رَّبِّـنَا
رَبُّـهَا	←	مِنْ رَّبِّـهَا

तअ़ल्लुक़ की जोड़ी पर अगर हर्फ़े जर "ب" हो		
رَبُّـهٗ	←	بِرَبِّـهٖ
رَبُّـهُمْ	←	بِرَبِّـهِمْ
رَبُّـكَ	←	بِرَبِّـكَ
رَبِّـيْ	←	بِرَبِّـيْ
رَبُّـكُمْ	←	بِرَبِّـكُمْ
رَبُّـنَا	←	بِرَبِّـنَا
رَبُّـهَا	←	بِرَبِّـهَا

www.understandquran.com

चौथी जोड़ी (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है) जमा के साथ

आज के सबक़ में दो लफ़्ज़ों के दरमियान तअ़ल्लुक़ की जोड़ी के बारे (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है) जमा के साथ सीखेंगे।

अल्लाह का घर	بَيْتُ اللهِ
मुस्लिम की किताब	كِتَابُ الْمُسْلِمِ
मसलमानों की किताब	كِتَابُ الْمُسْلِمِيْنَ

➢ नीचे दिए गए जुमलों की **TPI** के साथ प्रैक्टिस कीजिए, इन जुमलों में दो लफ़्ज़ हैं लेकिन इन में से सिर्फ़ एक में तबदीली हो रही है इस लिए **TPI** सिर्फ़ अ़लामत पर होगी।

जुमलों से मिसाल	हालत	
هٰذَا كِتَابُ الْمُسْلِمِيْنَ	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	كِتَابُ الْمُسْلِمِيْنَ
قَرَأْتُ كِتَابَ الْمُسْلِمِيْنَ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की हालत)	كِتَابَ الْمُسْلِمِيْنَ
كَتَبْتُ مِنْ كِتَابِ الْمُسْلِمِيْنَ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	كِتَابِ الْمُسْلِمِيْنَ

➢ अब हम كِتَابُ الْمُسْلِمِيْنَ के बजाए كِتَابُهُمْ लेंगे, अगर इस पर कोई असर पड़े तो كِتَابَهُمْ और अगर हर्फ़े जर के बाद आए तो كِتَابِهِمْ होगा। आईए इन की **TPI** साथ प्रैक्टिस करते हैं।

जुमलों से मिसाल	हालत	
هٰذَا كِتَابُهُمْ	असली हालत (रफ़अ़ की हालत)	كِتَابُهُمْ
قَرَأْتُ كِتَابَهُمْ	असर पड़ने की सूरत में (नसब की हालत)	كِتَابَهُمْ
كَتَبْتُ مِنْ كِتَابِهِمْ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की हालत)	كِتَابِهِمْ

➢ हुरूफ़े जर अपने बाद आने वाले इस्म पर असर डालते हैं। आईए इनकी **TPI** साथ प्रैक्टिस करते हैं।

مِنْ+بَعْد (बाद, के बाद)	مِنْ+قَبْل (पहले, से पहले)	مِنْ+دُوْنِ (के सिवा, के इलावा)
مِنْ بَعْدِهٖ	مِنْ قَبْلِهٖ	مِنْ دُوْنِهٖ
مِنْ بَعْدِهِمْ	مِنْ قَبْلِهِمْ	مِنْ دُوْنِهِمْ
مِنْ بَعْدِكَ	مِنْ قَبْلِكَ	مِنْ دُوْنِكَ
مِنْ بَعْدِيْ	مِنْ قَبْلِيْ	مِنْ دُوْنِيْ
مِنْ بَعْدِكُمْ	مِنْ قَبْلِكُمْ	مِنْ دُوْنِكُمْ
مِنْ بَعْدِنَا	مِنْ قَبْلِنَا	مِنْ دُوْنِنَا
مِنْ بَعْدِهَا	مِنْ قَبْلِهَا	مِنْ دُوْنِهَا

➢ कुरआनी मिसालें:

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ इसी तरह अल्लाह मुहर लगा देता है काफ़िरों के दिलों पर	وَّاَنَّ اللهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ और बेशक अल्लाह ज़ाय नहीं करेगा मोमिनों का बदला	وَاللهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ और अल्लाह मोमिनों का दोस्त है

www.understandquran.com

नसब की तीन हालतें

इस सबक़ में हम नसब की तीनों हालतों के बारे में पढ़ेंगे (1) मफ़ऊल (2) ताकीद (ज़ोर देने के लिए) (3) सबब ब्यान करने के लिए।

➢ इस मिसाल को याद रखिए:

क्यों?	क्या वही? (ताकीद)	किस को?	
طَاعَةً	ذِكْرًا	اللهَ	ذَكَرْتُ
इताअ़त करते हुए	ज़िक्र	अल्लाह का	ज़िक्र किया मैंने

➢ आएँ हर एक हालत के लिए कुरआनी मिसालें लेते हैं।

1- कौन/किस को? (मफ़ऊल) की कुरआन से मिसालें:

خَلَقَ اللهُ الْاَرْضَ

अल्लाह ने पैदा किया ज़मीन को

يَضْرِبُ اللهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ

अल्लाह ब्यान करता है मिसालों को लोगों के लिए

وَلَا تَقْتُلُوْا اَوْلَادَكُمْ

और मत क़त्ल करो अपनी औलादों को

2- ताकीद (ज़ोर देने के लिए) की कुरआन से मिसालें:

اُذْكُرُوا اللهَ ذِكْرًا

याद करो अल्लाह को याद

رَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا

और कुरआन को ठहर ठहर कर (साफ़) पढ़ा कर

وَكَلَّمَ اللهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا

और मूसा (अलैहिस-सलाम) से अल्लाह तआ़ला ने साफ़ तौर पर कलाम किया

3- क्यों या किस वजह से? (मफ़ऊल):

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ

और मुफ़लिसी के ख़ौफ से अपनी औलाद को न मार डालो

يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ

डाल लेते हैं अपनी उंगलियाँ अपने कानों में कड़ाके की वजह से मौत से डर कर

يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللهِ

वह सब अपना माल ख़र्च करते हैं अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए

www.understandquran.com

नसब की मज़ीद तीन ह़ालतें

पिछले सबक़ में हम ने नसब की तीन ह़ालतें सीखीं। इस सबक़ में हम नसब की मज़ीद तीन ह़ालतें पढ़ेंगे। **(4)** कब या किस वक़्त? **(5)** कहाँ? **(6)** किस ह़ालत में (ख़ारिजी या दाख़िली)

➢ मिसाल के तौर पर

किस ह़ालत में (दाख़िली, बाहरी)	कहाँ?	कब?				
قَاعِدًا ، خَائِفًا	خَلْفَ الْإِمَامِ	صَبَاحًا	طَاعَةً	ذِكْرًا	اللهَ	ذَكَرْتُ
बैठ कर, डरते हुए	इमाम के पीछे	सुब्ह़ में				

➢ आएँ हर एक ह़ालत के लिए क़ुरआनी मिसालें लेते हैं।

4- कब या किस वक़्त?:

اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब रात को आ पड़े या दिन को

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ

और अपने रब की तस्बीह़ तारीफ़ के साथ ब्यान करें सूरज निकलने से पहले

دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا

मैंने अपनी क़ौम को रात-दिन तेरी तरफ़ बुलाया है

5- कहाँ?

اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ

जबकि वह दरख़्त के नीचे तुझ से बैअ़त कर रहे थे

وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا

और तुम्हारे ऊपर हम ने सात मज़बूत आसमान बनाए

وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

और मस्जिदे ह़राम के पास उन से लड़ाई न करो

6- किस ह़ालत में (दाख़िली, बाहरी)

يَذْكُرُوْنَ اللهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا

अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र खड़े और बैठे करते हैं

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً

तुम लोग अपने परवरदिगार से दुआ़ किया करो गिड़गिड़ा कर के भी और चुपके चुपके भी

وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا

और तुम उस को पुकारो डरते हुए और उम्मीदवार हो कर

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 20a नसब की मज़ीद पाँच ह़ालतें

पिछले दो अस्बाक़ में हम ने नसब की छः ह़ालतें सीखीं। इस सबक़ में हम नसब की मज़ीद पाँच ह़ालतें सीखेंगे। पहले हम नसब की छः ह़ालतों का इआ़दा करेंगे जिस की मिसाल हम पढ़ चुके हैं:

किस ह़ालत में (दाख़िली, बाहरी)	कहाँ?	कब?	क्यों?	क्या वही? (ताकीद)	किस को?	
قَاعِدًا، خَائِفًا	خَلْفَ الْإِمَامِ	صَبَاحًا	طَاعَةً	ذِكْرًا	اللهَ	ذَكَرْتُ
बैठ कर, डरते हुए	इमाम के पीछे	सुब्ह़ में	इताअ़त करते हुए	ज़िक्र	अल्लाह का	ज़िक्र किया मैंने

➢ ऊपर दी गई मिसाल ही को आगे बढ़ाते हुए कि इस ह़ालत में दुआ़ करते हुए में इन जुमलों को इस्तिमाल करता हूँ:

كَانَ की खबर	اِنَّ का इस्म	किस गोशे में?	किस को पुकार रहे हैं?
وَكَانَ اللهُ غَفُوْرًا	وَاَعْلَمُ اَنَّ اللهَ غَفُوْرٌ	فَاَنْتَ خَيْرٌ غَافِرًا	يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ اِغْفِرْ لِيْ!
और अल्लाह मुआ़फ़ करने वाला है	और मैं जानता हूँ कि अल्लाह मुआ़फ़ करने वाला है	इस लिए कि तू बेहतर है मुआ़फ़ करने में	ऐ! तमाम जहानों के रब मुझे मुआ़फ़ फ़रमा

पूरी जिन्स की नफ़ी	
لَا إِلٰهَ	إِلَّا اللهُ
नहीं कोई माबूद	सिवाए अल्लाह के

➢ अब हम नसब की मज़ीद पाँच ह़ालतों की कुरआनी मिसालें लेते हैं:

7- किस को पुकार रहे हैं? (तअ़ल्लुक़ की जोड़ी में)

اَهْلُ الْكِتٰبِ ← يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
ऐ अहले किताब!

نِسَآءُ النَّبِيِّ ← يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ
ऐ नबी की बीवीयों!

رَبُّنَا ← يَا رَبَّنَا
ऐ हमारे रब!

8- किस गोशे में?

رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا
ऐ मेरे रब! ज़्यादा कर मुझे इल्म में

اللهُ خَيْرٌ غَافِرًا
अल्लाह बेहतर है मुआ़फ़ करने में

www.understandquran.com

إِنَّ का इस्म और (उस की बहनें)। हम इन को पिछले अस्बाक़ में सीख चुके हैं।

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

बेशक अल्लाह मुआ़फ़ करने वाला, रह़म करने वाला है

اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ

बेशक तेरा रब ह़िक्मत वाला, जानने वाला है

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

मैं गवाही देता हूँ कि मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं

मिसाल अज़ान से

9- كَانَ की ख़बर और (उस की बहनें)। हम इन को भी पिछले अस्बाक़ में सीख चुके हैं।

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا

और अल्लाह मुआ़फ़ करने वाला, रह़म करने वाला है

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا

और अल्लाह जानने वाला, ह़िक्मत वाला है

وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا

और इंसान ना शुक्रा है

10- एक पूरी जिन्स की नफ़ी।

لَارَيْبَ ۛ فِيْهِ

कोई शक नहीं है इस में

لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ

कोई ज़ुलम नहीं होगा आज

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

नहीं कोई ताक़त और नहीं कोई कुव्वत मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से

मिसाल दुआ़ से

www.understandquran.com

أَسْمَاء خَمْسَة (पाँच अस्मा)

कैंची वाला लफ़्ज़ इन पाँच अफ़्आल से ن को ख़त्म कर देता है। इस तरह़ के अफ़्आल को أفعال خمسة (पाँच अफ़्आल) कहा जाता है। मज़्कूरा तबदीली को याद रखने की ख़ातिर इन की ग्रुप बंदी कर दी गई है। अच्छे से याद कर लें कि यह पाँच अफ़्आल हैं: يَفْعَلَانِ، يَفْعَلُوْنَ تَفْعَلَانِ، تَفْعَلُوْنَ، تَفْعَلِيْنَ

नीचे अ़रबी ज़बान के पाँच अस्मा (أَسْمَاء خَمْسَة) दिए गए हैं:

أَبُوْ، حَمُوْ، أَخُوْ، فُوْ، ذُوْ

इन अल्फाज़ की ख़ास बात यह है रफ़्अ़, नसब, जर की ह़ालतों में इन की शक्लें बदलती रहती हैं। इन पाँचों में से हर एक की TPI के साथ प्रैक्टिस करते हैं पहली सतर में अल्फ़ाज़ के मआ़नी दिए गए हैं।

वाला	मुँह	भाई	ख़सुर	बाप	
ذُوْ	فُوْ	أَخُوْ	حَمُوْ	أَبُوْ	
ذَا	فَا	أَخَا	حَمَا	أَبَا	
ذِيْ	فِيْ	أَخِيْ	حَمِيْ	أَبِيْ	

أفعال خمسة (पाँच अफ़्आल) के लिए रफ़्अ़ नसब, जर की ह़ालतें

أَخُوْ زَيْد (ज़ैद के भाई)	حَمُوْ زَيْد (ज़ैद के ख़सुर)	أَبُوْ زَيْد (ज़ैद के बाप)
هٰذَا أَخُو زَيْد	هٰذَا حَمُو زَيْدٍ	هٰذَا أَبُو زَيْدٍ
رَأَيْتُ أَخَا زَيْدٍ	رَأَيْتُ حَمَا زَيْدٍ	رَأَيْتُ أَبَا زَيْدٍ
سَمِعْتُ مِنْ أَخِي زَيْدٍ	سَمِعْتُ مِنْ حَمِي زَيْدٍ	سَمِعْتُ مِنْ أَبِي زَيْدٍ

ذُو الْجَلَال (जलाल वाला)	فُو زَيْد (ज़ैद का मुँह)
اَللّٰهُ ذُوْ الْجَلَالِ	هٰذَا فُوْ زَيْدٍ
دَعَوْتُ ذَا الْجَلَالِ	رَأَيْتُ فَا زَيْدٍ
أَعُوْذُ بِذِي الْجَلَالِ	اَلْحَلْوَةُ فِيْ فِيْ زَيْدٍ

www.understandquran.com

➢ أَبُوْ की मिसालें कुरआन से

أَبُوْ ←	وَاَبُوْنَا	شَيْخٌ كَبِيْرٌ		
	और हमारे अब्बू	बहुत बूढ़े हैं		
أَبَا ←	مَا كَانَ	مُحَمَّدٌ	اَبَآ اَحَدٍ	مِّنْ رِّجَالِكُمْ
	नहीं है	मोहम्मद	किसी के बाप	तुम्हारे मरदों में से
أَبِيْ ←	تَبَّتْ	يَدَآ	اَبِىْ لَهَبٍ	وَّتَبَّ
	टूट गए	दोनों हाथ	अबूलहब के	और वह (खुद) हलाक हो गया

➢ أَخُوْ की मिसालें कुरआन से

أَخُوْ ←	قَالَ	اِنِّىْٓ اَنَا	اَخُوْكَ
	उस ने कहा	बेशक मैं	तुम्हारा भाई हूँ
أَخَا ←	ثُمَّ اَرْسَلْنَا	مُوْسٰى	وَاَخَاهُ	هٰرُوْنَ	بِاٰيٰتِنَا
	फिर हम ने भेजा	मूसा	और उन के भाई	हारून को	हमारी निशानीयों के साथ
أَخِيْ ←	وَاَوْحَيْنَآ	اِلٰى مُوْسٰى	وَاَخِيْهِ
	मूसा की तरफ़	और हमने वह्य की	और उस के भाई की तरफ़

➢ فُوْ की मिसालें कुरआन से

فَا ←	كَبَاسِطِ	كَفَّيْهِ	اِلَى الْمَآءِ	لِيَبْلُغَ	فَاهُ
	जैसे कोई शख़्स फेलाए हुए	अपने दोनों हाथ	पानी की तरफ़ हो	कि पड़ जाए	उस के मुँह में

➢ ذُوْ की मिसालें कुरआन से

ذُوْ ←	وَاللّٰهُ	ذُو الْفَضْلِ	الْعَظِيْمِ
	और अल्लाह	फ़ज़्ल वाला है	अ़ज़ीम
ذَا ←	قَالُوْا	يٰذَا الْقَرْنَيْنِ
	उन्होंने कहा,	ऐ ज़ुल्क़रनैन
ذِيْ ←	وَالْقُرْاٰنِ	ذِى الذِّكْرِ
	कुरआन की क़सम	नसीह़त वाले

www.understandquran.com

ग़ैर मुंसरिफ़

आप इस्म की आ़म तौर पर पेश आने वाली तीनों ह़ालतें सीख चुके हैं और इनकी मिसालें भी पढ़ चुके हैं:

जुमलों से मिसाल	ह़ालत	
جَاءَ مُسْلِمٌ	असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)	مُسْلِمٌ
رَأٰى زَيْدٌ مُسْلِمًا	असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)	مُسْلِمًا
سَمِعَ زَيْدٌ مِنْ مُسْلِمٍ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	مُسْلِمٍ

कुछ दिलचस्प इस्तिसना: यहाँ चंद अस्मा हैं जो इस क़ायदे से अलग हैं। मसलन:

तन्वीन नहीं

اَللّٰهُ أَكْبَرُ

कसरा नहीं

كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ إِبْرَاهِيْمَ

इस तरह़ के अस्मा को ग़ैर मुंसरिफ़ अस्मा कहा जाता है, जिन पर तन्वीन और कसरा नहीं आता है। तन्वीन नहीं, कसरा नहीं

मुंसरिफ़ इस्म

असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)	مُسْلِمٌ
असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)	مُسْلِمًا
हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	مُسْلِمٍ

ग़ैर मुंसरिफ़ इस्म

असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)	إِبْرَاهِيْمُ	أَكْبَرُ
असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)	إِبْرَاهِيْمَ	أَكْبَرَ
हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)	إِبْرَاهِيْمَ	أَكْبَرَ

www.understandquran.com

यहाँ चंद अस्मा हैं जो इस तरह़ का अ़मल करते हैं। इन की क़िस्मों को याद रखने के लिए एक कहानी लेते हैं।

معاوية ने शादी की مريم से। उन के यहाँ औलाद हुई ابراهيم، احمد، عفان، عمر। वह सब مصر गए और مطاعم (होटल) में खाया। वह सब बहुत سعداء (खुश) थे, लेकिन معاوية बहुत ज़्यादा مصاريف (ख़र्च) की वजह से غضبان (बहुत ज़्यादा गुस्सा) थे।

مُعَاوِيَة ← أُسَامَة، حُذَيْفَة، حَمْزَة

مَرْيَم ← فَاطِمَة، عَايِشَة، زَيْنَب

إِبْرَاهِيْم ← إِسْمَاعِيْل، إِسْحَاق، يَعْقُوْب، فِرْعَوْن، هَامَان، قَارُوْن، هَارُوْت، مَارُوْت

أَحْمَد ← أَكْرَم، أَكْبَر، أَرْحَم

عَفَّان ← رَمَضَان، عُثْمَان، سَلْمَان

عُمَرُ ← مُضَرُ، زُحَلُ

مِصْر ← مَكَّة، لَنْدَن، بَابِل

مَطَاعِم ← مَنَافِع، مَشَارِب، مَسَاجِد

سُعَدَاء ← خُلَفَاء، عُلَمَاء، عُقَلَاء

غَضْبَان ← جَوْعَان، تَعْبَانَ، شَبْعَان

مَصَارِيف ← مَصَابِيْح، مَحَارِيْب، مَوَاقِيْت

ग़ैर मुंसरिफ़ अस्मा में रफ़अ़, नसब, जर के क़वायद से मुतअ़ल्लिक़ कुछ इस्तिसना हैं जिन को आप बाद में पढ़ेंगे।

www.understandquran.com

ग्रामरः इआ़दा

अब हम कुरआन का पांचवाँ सफ़्हा यानी आयत **30** से **37** लेते हैं, और इन क़वायद का इजरा करेंगे।

इस्म की ह़ालतें और मिसालें

जरः कमतर ह़ालत है नसबः मुतवस्सित ह़ालत है रफ़अ़ः ऊँची ह़ालत है (असली)

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا
اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿30﴾ وَعَلَّمَ
اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِىْ
بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿31﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ
اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿32﴾ قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ
بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ
غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿33﴾
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى
وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿34﴾ وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ
وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا
هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿35﴾ فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ
عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿36﴾ فَتَلَقّٰٓى
اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿37﴾

www.understandquran.com

वर्कबुक

www.understandquran.com

नस्ख़ व निसयान (अल-बक़रा:106-107)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: नस्ख़ के मअ़ना क्या हैं, और जब कुरआन मजीद बतौर आख़िरी किताब नाज़िल होना शुरूअ़ हुआ तो किस तरह़ का वाकिआ़ पेश आया?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मअ़ानी लिखिए?

जवाब: مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا .....

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ.....

مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ.....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मअ़ानी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						نَسَخَ	ن س خ / ف	2
						عَلِمَ	ع ل م / س	518
						مَلَكَ	م ل ك / ض	97
						نَصَرَ	ن ص ر / ذ	94
						أَتٰى	أ ت ي / هد	275
						أَنْسٰى	ن س ي / أسـ+	7

मअ़ानी	जमा	वाह़िद
		اٰيَة
	سَمٰوَات	
		وَلِيّ

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 16b क्या तुम भी सवाल करोगे? (अल-बक़राः108)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: जब कोई शख़्स ग़लत अंदाज़ से अल्लाह और उसके रसूल से सवाल करता है, तो उस को किस तरह़ का नुक़्सान होता है?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ .....

وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						كَفَرَ	ك ف ر / ذ	465
						سَأَلَ	س أ ل / ف	119
						ضَلَّ	ض ل ل / ضل	113
						أَرَادَ	ر و د / أسـ+	139
						تَبَدَّلَ	ب د ل / تد+	3
						اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818

मआ़नी	जमा	वाह़िद
		رَسُوْل
		سَبِيْل

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 16c ख़ाहिश अहले किताब की? (अल-बक़राः109-110)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: अहले किताब ने इस्लाम क्यों नहीं क़बूल किया?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ .....

فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا.....

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ.....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						صَفَحَ	ص ف ح / ف	8
						بَصُرَ	ب ص ر / ک	66
						عَفَا	ع ف و / دع	30
						أَتٰى	أ ت ي / هد	275
						وَدَّ	و د د / مسـ	25
						رَدَّ	ر د د / ظن	44
						تَبَيَّنَ	ب ي ن / تد+	18
						قَدَّمَ	ق د م / عل+	27

मआ़नी	जमा	वाहिद
		أَمْر
		صَلَاة

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 16d जन्नत सिर्फ़ यहुद व नसारा को? (अल-बक़रा:111-112)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: यहूदी और ईसाई जन्नत के बारे में किस तरह़ का दावे करते थे?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाब: مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى .....

هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ .....

بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						صَدَقَ	ص د ق / ذ	90
						أَجَرَ	أ ج ر / ذ	94
						حَزِنَ	ح ز ن / سـ	33
						قَالَ	ق و ل / قا	1719
						كَانَ	ك و ن / قا	1358
						خَافَ	خ و ف / خا	118
						أَسْلَمَ	س ل م / أسـ+	72
						أَحْسَنَ	ح س ن / أسـ+	74

मआ़नी	जमा	वाह़िद
	أَمَانِيّ	
		بُرْهَان
		وَجْه
		أَجْر

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 17a — यहूद व नसारा लड़ें आपस में (अल-बक़राः113)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: जब यहूद व नसारा के आपसी तअ़ल्लुक़ात की बात होती थी तो वह क्या करते थे ?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ .....

وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ.....

فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ.....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						عَلِمَ	ع ل م / سـ	518
						حَكَمَ	ح ك م / ذ	80
						قَالَ	ق ول / قا	1719
						تَلَا	ت ل و / دعـ	63
						اِخْتَلَفَ	خ ل ف / اِخـ+	52

मआ़नी	जमा	वाहिद
		شَيْء
		كِتَاب
		قَوْل

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 17b ज़ालिम रोकें मस्जिद से (अल-बक़राः114-115)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: मस्जिदों के तअल्लुक़ से हमारा रवैय्या कैसा होना चाहिए?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः وَسَعٰى فِىْ خَرَابِهَا.....

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ .....

اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ.....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						مَنَعَ	م ن ع / ف	14
						خَرِبَ	خ ر ب / س	1
						عَظُمَ	ع ظ م / ک	107
						سَعٰى	س ع ي / سعـ	30
						خَافَ	خ و ف / خا	118
						وَلّٰى	ظ ل م / ضـ	31

मआ़नी	जमा	वाहिद
	أَظْلَم ↑	
		وَجْه

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 17c इसाई बनाएँ बेटा अल्लाह का (अल-बक़रा:116-117)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: ईसाई अल्लाह के बारे में किस तरह़ का अक़ीदा रखते हैं?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाब: وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ .....

كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ .....

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						قَنَتَ	ق ن ت / ذ	13
						بَدَعَ	ب د ع / ف	2
						قَالَ	ق و ل / قا	1719
						قَضٰى	ق ض ي / هد	63
						أَمَرَ	أ م ر / ذ	231
						كَانَ	ك و ن / قا	1358
						اِتَّخَذَ	أ خ ذ / إخ+	128

मआ़नी	जमा	वाह़िद
		وَلَد
	سَمٰوَات	
		أَمْر

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 17d बे–इल्म कहें: बात करे अल्लाह (अल–बक़रा:118-119)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: शक्की क़िस्म के लोग किस तरह़ का दावे करते हैं? और कुरआने मजीद के पैग़ाम के साथ उनका सुलूक कैसा होता है?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाब: لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ .....

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ .....

وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						عَلِمَ	ع ل م / س	518
						قَالَ	ق و ل / قا	1719
						أَتٰى	أ ت ي / هد	275
						سَأَلَ	س أ ل / ف	119
						كَلَّمَ	ك ل م / عل+	21
						تَشَابَهَ	ش ب ه / تدا+	10
						بَيَّنَ	ب ي ن / عل+	48
						أَيْقَنَ	ي ق ن / أس+	17

मआ़नी	जमा	वाह़िद
		قَوْل
		قَوْم
	أَصْحَاب	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 18a राज़ी न हों यहूद व नसारा (अल-बक़राः120-121)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: कुरआने मजीद के हुकूक़ क्या हैं? और हमें उन्हें क्यों पूरा करना चाहिए?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ.....

وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ .....

اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						خَسِرَ	خ س ر / سـ	57
						رَضِيَ	ر ض ي / رضـ	64
						جَاءَ	ج ي أ / زا	277
						تَلَا	ت ل و / دع	63
						اِتَّبَعَ	ت ب ع / إخ+	140
						اٰتٰى	أ ت ي / أسـ+	274
						اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818

मआ़नी	जमा	वाहि़द
	مِلَل	مِلَّة
	أَهْوَاء	
		عِلْم

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 18b बनीइसराईल! याद करो नेअ़मतें (अल-बक़राः122-123)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करने के बजाए बनीइसराईल ने क्या किया?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ .....

لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا .....

وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						قَبِلَ	ق ب ل / سـ	10
						نَفَعَ	ن ف ع / فـ	42
						شَفَعَ	ش ف ع / فـ	25
						نَصَرَ	ن ص ر / ذ	94
						جَزٰى	ج ز ي / هد	116
						أَنْعَمَ	ن ع م / أسـ+	17
						فَضَّلَ	ف ض ل / علـ+	19
						اِتَّقٰى	و ق ي / إخـ+	216

मआ़नी	जमा	वाह़िद
		نِعْمَة
		عَالَم
	أَيَّام	
	أَنْفُس	

www.understandquran.com

इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की आज़माइश और कामयाबी
(अल-बक़रा:124)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: इस सबक़ में आपने पढ़ा कि हज़रत इबराहीम अलैहिस-सलाम को बहुत सारे सख़्त तरीन मसाईल से गुज़रना पड़ा, आप उनमें से चंद का ज़िक्र कीजिए?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाब: اِنِّیْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا .....

قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِیْ .....

لَا يَنَالُ عَهْدِی الظّٰلِمِيْنَ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						جَعَلَ	ج ع ل / ف	346
						عَهِدَ	ع ه د / سـ	35
						ظَلَمَ	ظ ل م / ضـ	266
						قَالَ	ق و ل / قا	1719
						نَالَ	ن ي ل / خا	12
						اِبْتَلٰی	ب ل و / اِخـ+	10
						أَتَمَّ	ت م م / أسـ+	17

मआ़नी	जमा	वाह़िद
		كَلِمَة
		إِمَام
		ذُرِّيَّة
		عَهْد

www.understandquran.com

बैतुल्लाह और शहरे मक्का (अल-बक़राः125-126)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: इबराहीम अलैहिस सलाम ने ईमान वालों के लिए अल्लाह से किया मागाँ?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا.....

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى.....

رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا.....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						عَهِدَ	ع ه د / سـ	35
						عَكَفَ	ع ك ف / ذ	9
						أَمِنَ	أ م ن / سـ	59
						طَافَ	ط و ف / قا	12
						قَلَّ	ق ل ل / ضلـ	72
						طَهَّرَ	ط ه ر / علـ+	17
						مَتَّعَ	م ت ع / علـ+	18
						اِضْطَرَّ	ض ر ر / اِخـ+	8

मआ़नी	जमा	वाह़िद
	رُكَّع	
	سُجُوْد	
		نَار

www.understandquran.com

बैतुल्लाह की तामीर और दुआ़एँ (अल-बक़रा:127-129)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: ख़ानए काअ़बा की बुनियाद किस ने रखी और इबराहीम व इसमाईल अ़लैहिस्सलाम ने उसके साथ क्या किया?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मअ़ानी लिखिए?

जवाब: وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ .....

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ .....

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मअ़ानी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						بَعَثَ	ب ع ث / ف	65
						حَكُمَ	ح ك م / ک	117
						تَلَا	ت ل و / دع	63
						عَزَّ	ع ز ز / ضد	112
						تَقَبَّلَ	ق ب ل / تد+	11
						أَرٰى	ر أ ي / أسد+	54
						زَكّٰى	ز ك و / عد+	12

मअ़ानी	जमा	वाहिद
	قَوَاعِد	
	مَنَاسِك	
	حِكْمَة	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 19b कौन मुहँ मोड़े मिल्लते इबराहीम से? (अल-बक़राः130-131)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: हमें पैरवी करने के लिए ह़ज़रत इबराहीम अलैहिस-सलाम को रोल मॉडल क्यों बनाना चाहिए?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ .....

اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ.....

وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						رَغِبَ	ر غ ب سـ	8
						سَفِهَ	س ف ه سـ	4
						صَلَحَ	ص ل ح ف	129
						قَالَ	ق و ل قا	1719
						اِصْطَفٰى	ص ف و اِخـ+	13
						أَسْلَمَ	س ل م أسـ+	72

मआ़नी	जमा	वाह़िद
		مِلَّة
		نَفْس
	عَالَمِيْن	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 19c

वसीयत इबराहीम व याकूब अलैहिमस्सलाम की?

(अल–बक़राः132-133)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: इस जुमले का मतलब बताईए ''हरगिज़ मत मरना मगर यह कि तुम मुस्लिम हो''
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाबः وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ..... ؕ

اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ..... ۙ

وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						حَضَرَ	ح ض ر / ذ	11
						عَبَدَ	ع ب د / ذ	143
						كَانَ	ك و ن / قا	1358
						مَاتَ	م و ت / قا	115
						وَصّٰى	و ص ي / عل+	12
						اِصْطَفٰى	ص ف و / اِخ+	13

मआ़नी	जमा	वाहिद
	أَبْنَاء	إِبْن
		دِيْن
		أَب

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 19d — वह उम्मत गुज़र गई (अल-बक़रा:134)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: इस आयत में बनीइसराईल को कौन सा पैग़ाम दिया गया है?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाब: تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ .....

لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ .....

وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ.....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						كَسَبَ	ك س ب / ضَ	62
						عَمِلَ	ع م ل / سَ	319
						خَلَا	خ ل و / دعَ	26
						سَأَلَ	س أ ل / ف	119
						كَانَ	ك و ن / قا	1358

मआ़नी	जमा	वाहि़द
		اُمَّة
		دِيْن

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 20a हो जाओ यहूद व नसारा! (अल-बक़राः135-136)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: क्या कोई शख़्स रसूलों में और अल्लाह के पैग़ाम में कोई इख़्तिलाफ़ पा सकता है?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः مِلَّةَ اِبْرٰهِمَ حَنِيْفًا .....

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ .....

وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						حَنَفَ	ح ن ف / ض	10
						قَالَ	ق و ل / قا	1719
						كَانَ	ك و ن / قا	1358
						اٰتٰى	أ ت ي / أسـ+	274
						فَرَّقَ	ف ر ق / علـ+	10
						أَسْلَمَ	س ل م / أسـ+	72

मआ़नी	जमा	वाहिद
	مِلَّة	
	أَسْبَاط	
	نَبِيُّوْن	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 20b अगर वह ईमान लाएँ तुम जैसा तो... (अल-बक़राः137-138)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: हमारी ज़िन्दगी के मुख़तलिफ़ गोशों में होने वाले कामों का जायज़ा लेने का हमारे पास मअ़यार और ख़ाका क्या है?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः فَاِنَّمَا هُمْ فِىْ شِقَاقٍ .....

فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ .....

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						عَبَدَ	ع ب د / ذ	143
						كَفٰى	ك ف ي / هد	32
						اِهْتَدٰى	ه د ي / اِخ+	61
						تَوَلّٰى	و ل ي / تد+	78
						شَاقَّ	ش ق ق / حا+	14

मआ़नी	जमा	वाहि़द
أَحْسَن ↑		

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 20c अल्लाह के बारे में झगड़ा? (अल-बक़राः139-140)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: إخلاص का मतलब बताएं?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?
जवाबः وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ .....

وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ .....

ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						قَالَ	ق و ل قا	1719
						كَانَ	ك و ن قا	1358
						حَاجَّ	ح ج ج حا+	12
						أَخْلَصَ	خ ل ص أس+	22

मआ़नी	जमा	वाहिद
	أَعْمَال	
	أَعْلَم↑	

www.understandquran.com

बड़ा ज़ालिम जो शहादत छुपाए (अल-बक़रा:140-141)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: अल्लाह तआ़ला ने इस आयत को तकरार के साथ क्यों ब्यान फ़रमाया है "لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ"?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाब: وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ .....

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ .....

وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						كَتَمَ	ك ت م / ذ	21
						شَهِدَ	ش ه د / س	90
						غَفَلَ	غ ف ل / ذ	34
						عَمِلَ	ع م ل / س	319
						كَسَبَ	ك س ب / ض	62
						خَلَا	خ ل و / دع	26
						سَأَلَ	س أ ل / ف	119

मआ़नी	जमा	वाहिद
		ظَالِم
		شَهَادَة
		أُمَّة

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़ः 16a जुमला फ़ेअ़लिया

सवाल-1: सर्फ़ और नह्व की आसान तारीफ़ लिखिए?
जवाबः

सवाल-2: जुमला फ़ेअ़लिया और जुमला इस्मिया क्या है?
जवाबः

सवाल-3: नीचे के जुमलों में फ़ायल को जमा में तबदील कीजिएः

	حَفِظَ الْمُسْلِمُ الْقُرْاٰنَ
	يَقْرَأُ الْمُؤْمِنُ الْحَدِيْثَ
	يَسْمَعُ الصَّالِحُ السِّيْرَةَ

सवाल-4: फ़ेअ़ल और फ़ायल को मोअन्नस में तबदील कीजिएः

	حَفِظَ الْمُسْلِمُ الْقُرْاٰنَ
	يَقْرَأُ الْمُؤْمِنُ الْحَدِيْثَ
	يَسْمَعُ الصَّالِحُ السِّيْرَةَ

वर्कबुक–सबक़ः 16b إِنَّ और उस की बहनें (أَنَّ، كَأَنَّ، لٰكِنَّ)

सवाल-1: اِنَّ पहले वाले इस्म पर किस तरह़ का अ़मल करता है? मिसाल से वाज़ेह़ कीजिए।
जवाबः

सवाल-2: इन जुमलों में اِنَّ का इज़ाफ़ा कीजिएः

	زَيْدٌ صَغِيْرٌ
	اَلْمُؤْمِنَةُ صَالِحَةٌ
	اَلْمُؤْمِنُوْنَ صَالِحُوْنَ

सवाल-3: اِنَّ की तरह़ अ़मल करने वाले अल्फ़ाज़ लिखिए, साथ में उनका नाम बताईए और उनकी मिसालें भी दीजिए।
जवाबः

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 16c كَانَ और उस की बहनें (أَصْبَحَ، أَمْسٰى)

सवाल-1: كَانَ दूसरे वाले इस्म पर किस तरह़ अ़मल करता है? मिसाल से वाज़ेह़ कीजिए।
जवाब:

सवाल-2: इन जुमलों में كَانَ का इज़ाफ़ा कीजिए:

	هُوْدٌ نَبِيٌّ
	اَلْمُؤْمِنُ صَالِحٌ
	اَلْمُنَافِقُوْنَ فَاسِقُوْنَ

सवाल-3: इन जुमलों में كَانَ का इज़ाफ़ा कीजिए और इन को जमा में तबदील कीजिए:

	اَلْمُسْلِمُ صَادِقٌ
	اَلْمُنَافِقَةُ فَاسِقَةٌ
	اَلْمُسْلِمَةُ صَادِقَةٌ

सवाल-4: كَانَ की तरह़ अ़मल करने वाले अल्फ़ाज़ लिखिए, साथ में उन का नाम बताईए और उन की मिसालें भी दीजिए।
जवाब:

वर्कबुक–सबक़: 16d पहली जोड़ी: حرف جر+ اسم (واحد)

सवाल-1: आपने अब तक जो चार अहम जुमले सीखें हैं उनके नाम मिसालों के साथ लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: जब इस्म ह़र्फ़े जर के बाद आता है तो आ़म तौर से किस तरह़ की तबदीली होती है?
जवाब:

सवाल-3: नीचे दिए गए अल्फ़ाज़ में ह़र्फ़े जर के नीचे खत खींचिए:

فِيْ الْمُؤْمِنِ	إِلَى الْمُسْلِمِ	لِمُسْلِمٍ
عَلَى النَّاصِرِ	مِنْ صَالِحٍ	بِاللهِ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 17a पहली जोड़ी: حرف جر+ اسم (جمع)

सवाल-1: नीचे के टेबल को ह़र्फ़े जर के साथ मुकम्मल कीजिए:

	عَلَى+	اَلْمُسْلِمُوْنَ
	فِيْ+	اَلْمُؤْمِنُوْنَ
	لِـ+	اَلصَّالِحُوْنَ
	بِـ+	اَلنَّاصِرُوْنَ

	لِـ +	اَلْمُسْلِمُوْنَ
	مِنْ+	اَلْمُؤْمِنُوْنَ
	إِلَى+	اَلصَّالِحُوْنَ
	مِنْ+	اَلنَّاصِرُوْنَ

सवाल-2: ह़र्फ़े जर और उसके बाद वाले इस्म के नीचे ख़त खींचिए:

وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ
فَاِنَّ اللهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ
هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ
وَاللهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

सवाल-3: अब तक आपने जितने हुरूफ़ जर सीखीं उन को लिखिए।
जवाब:

वर्कबुक–सबक़: 17b رَفْع، نَصْب، جَرّ वाह़िद अस्मा के लिए

सवाल-1: अ़रबी में तर्जमा कीजिए:

	एक मुसलमान आया
	ज़ैद ने एक मुसलमान को देखा
	ज़ैद ने एक मुसलमान से सुना

सवाल-2: हिंदी में तर्जमा कीजिए:

	جَاءَ الْمُسْلِمُ
	رَأٰى زَيْدٌ الْمُسْلِمَ
	سَمِعَ زَيْدٌ مِنَ الْمُسْلِمِ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 17c رَفْع، نَصْب ،جَرّ जमा अस्मा के लिए

सवाल-1: अ़रबी में तर्जमा कीजिए:

	मुसलमान आए
	ज़ैद ने मुसलमानों को देखा
	ज़ैद ने मुसलमानों से सुना

सवाल-2: हिंदी में तर्जमा कीजिए:

	جَاءَ الْمُسْلِمُوْنَ
	رَأٰى زَيْدٌ الْمُسْلِمِيْنَ
	سَمِعَ زَيْدٌ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

वर्कबुक–सबक़: 17d दूसरी जोड़ी: اسم + صفت (واحد)

सवाल-1: मुनासिब लफ़्ज़ का इज़ाफ़ा कर के जुमला मुकम्मल कीजिए:

بَيْتٌ كَبِيْرٌ .....
رَأٰى زَيْدٌ .....
زَيْدٌ.....بَيْتٍ كَبِيْرٍ

सवाल-2: नीचे दिए गए जुमलों को दरुस्त कीजिए:

	جَاءَ الْمُسْلِمُ صَادِقٌ
	رَأٰى زَيْدٌ الْمُسْلِمَ صَادِقًا
	سَمِعَ زَيْدٌ مِنَ الْمُسْلِمِ صَادِقًا
	زَيْدٌ فِيْ بَيْتًا كَبِيْرًا

सवाल-3: नीचे टेबल में दिए गए मौसूफ़ व सिफ़त के जुमलों के नीचे ख़त खींचिए:

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ
وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ
وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا
وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ
اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ، فِىْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 18a दूसरी जोड़ी: اسم + صفت (جمع)

सवाल-1: मुनासिब लफ़्ज़ का इज़ाफ़ा कर के जुमला मुकम्मल कीजिए:

جَاءَ ..... صَادِقُوْنَ
رَأٰى .....مُسْلِمِيْنَ صَادِقِيْنَ
سَمِعَ زَيْدٌ ..... مُسْلِمِيْنَ صَادِقِيْنَ

सवाल-2: नीचे टेबल में दिए गए मौसूफ़ व सिफ़त (जमा) के जुमलों के नीचे खींचिए:

فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ
قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ

वर्कबुक–सबक़: 18b तीसरी जोड़ी: إِشَارَة + اِسْم (هٰذَا، هٰؤُلَاءِ)

सवाल-1: मुनासिब लफ़्ज़ का इज़ाफ़ा कर के जुमला मुकम्मल कीजिए:

جَاءَ هٰذَا .....
رَأٰى زَيْدٌ هٰذَا .....
سَمِعَ زَيْدٌ مِنْ هٰذَا .....
جَاءَ هٰؤُلَآءِ .....
رَأٰى زَيْدٌ هٰؤُلَآءِ .....
سَمِعَ زَيْدٌ مِنْ هٰؤُلَآءِ .....

सवाल-2: नीचे टेबल इशारे के अल्फ़ाज़ और हुरूफ़ के नीचे खींचिए:

اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ
اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ
وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِى هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 18c चौथी जोड़ी का तआ़रूफ़ (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है)

सवाल-1: दो लफ़्ज़ों के दरमियान तअ़ल्लुक़ को बताने के लिए हमें ज़म्मा और कसरा कहाँ रखना चाहिए?
जवाब:

सवाल-2: नीचे दिए गए जुमलों का तर्जमा कीजिए:

	عَبْدُ اللهِ
	قَوْمُ هُوْدٍ
	رَبُّ مُحَمَّدٍ ﷺ
	نَصِيْرُ الدِّيْنِ

सवाल-3: इस जोड़ी में दूसरा लफ़्ज़ किस सवाल का जवाब बन सकता है?
जवाब:

वर्कबुक–सबक़: 18d चौथी जोड़ी (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है) رَفْع، نَصْب، جَرّ

सवाल-1: नीचे के जुमलों में जहाँ ह़रकत (रफ़अ़, नसब, जर) नहीं है वहाँ ह़रकत लगाईए:

هٰذَا بَيْت الله
رَأٰى زَيْدٌ بَيْت اللهِ
زَيْد فِيْ بَيْت اللهِ

सवाल-2: नीचे दी गई आयतों में तअ़ल्लुक़ की जोड़ी के नीचे ख़त खींचिए:

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ
اِنِّيْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ
وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللهِ اَفْوَاجًا
الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللهِ
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 19a चौथी जोड़ी (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है) رَفْع، نَصْب، جَرّ (ज़मायर के साथ)

सवाल-1: अल्फ़ाज़ को जोड़ कर जोड़ी बनाईए:

دَخَلَ زَيْدٌ	رَبُّهَا
اَللّٰهُ	بَيْتُهٗ
زَيْدٌ فِيْ	رَبَّهَا
هٰذَا	بَيْتَهٗ
أَعْبُدُ	بَيْتِهٖ

सवाल-2: नीचे दिए गए अल्फ़ाज़ में हुरूफ़े जर का इज़ाफ़ा कीजिए और दूसरे कालम में उनकी मुकम्मल शक्लें लिखिए:

رَبُّهُمْ	بِـ +	
رَبُّكَ	مِنْ+	
رَبُّنَا	بِـ +	
رَبِّيْ	مِنْ+	
رَبُّهُمْ	مِنْ+	

वर्कबुक–सबक़: 19b चौथी जोड़ी (जो तअ़ल्लुक़ को बताती है) जमा के साथ

सवाल-1: नीचे के जुमलों में जहाँ ह़रकत (रफ़अ़, नसब, जर) नहीं है वहाँ ह़रकत लगाईए:

هٰذَا كِتَابهُمْ
قَرَأْتُ كِتَابهُمْ
كَتَبْتُ مِنْ كِتَابِهِمْ
كِتَابُ الْمُسْلِم

सवाल-2: नीचे दी गई आयतों में तअ़ल्लुक़ की जोड़ी के नीचे ख़त खींचिए:

وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 19c नसब की तीन हालतें

सवाल-1: नसब की वह तीन हालतें कौन सी हैं जिन को हम ने इस सबक़ में पढ़ा है?
जवाब:

सवाल-2: नीचे दी गई आयतों में नसब की हालत लिखिए।

	يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ
	اُذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا
	يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ
	وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا
	خَلَقَ اللّٰهُ الْاَرْضَ

सवाल-3: नीचे दी गई आयतों में तअ़ल्लुक़ की जोड़ी और हुरूफ़े जर के नीचे ख़त खिंचिए:

يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ
وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ
يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ
يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ

वर्कबुक–सबक़: 19d नसब की मज़ीद तीन हालतें

सवाल-1: नसब की वह मज़ीद तीन हालतें कौन सी हैं जिनको हमने इस सबक़ में पढ़ा है?
जवाब:

सवाल-2: नीचे दी गई आयतों में नसब की हालत लिखिए।

	دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا
	وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا
	اُدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً
	وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا
	اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ
	وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 20a नसब की मज़ीद पाँच ह़ालतें

सवाल-1: नीचे दिए गए जुमलों में नसब की ह़ालत लिखिए:

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ	وَاَعْلَمُ اَنَّ اللهَ غَفُوْرٌ	وَكَانَ اللهُ غَفُوْرًا	فَاَنْتَ خَيْرٌ غَافِرًا	يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ اِغْفِرْ لِيْ!

सवाल-2: नीचे चंद फ़ेक़रे दिए गए हैं, उनमें नसब की ह़ालत को पहचान कर दूसरे कालम में लिखिए:

	يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ
	اللهُ خَيْرٌ غَافِرًا
	اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ
	وَكَانَ اللهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا
	لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ

वर्कबुक–सबक़: 20b أَسْمَاء خَمْسَة (पाँच अस्मा)

सवाल-1: अफ़्आ़ले ख़मसा क्या हैं और उनको यह नाम क्यों दिया गया है?
जवाब:

सवाल-2: अस्माए ख़मसा क्या हैं उन से मुतअ़ल्लिक़ ख़ुसूसी चीज़ क्या है?
जवाब:

सवाल-3: नीचे दी गई आयतों में अस्माए के नीचे ख़त खींचिए, और उन की ह़ालत लिखिए:

	تَبَّتْ يَدَآ اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ
	قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ
	وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ
	قَالَ اِنِّىْٓ اَنَا اَخُوْكَ
	وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़ः 20c ग़ैर मुंसरिफ़

सवाल-1: ग़ैर मुंसरिफ़ अस्मा कौन से हैं और उन्हें क्यों ग़ैर मुंसरिफ़ कहा जाता है?
जवाबः

सवाल-1: नीचे के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

مُسْلِمٌ	إِبْرَاهِيْمُ	أَكْبَرُ	असली ह़ालत (रफ़अ़ की ह़ालत)
			असर पड़े तो (नसब की ह़ालत)
			हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)

वर्कबुक–सबक़ः 20d ग्रामरः इआ़दा

सवाल-1: नीचे दी गई आयतों में इस्म की ह़ालत के ह़िसाब से सह़ीह़ अ़लामत (इशारा) लगाईएः

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا
اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿30﴾ وَعَلَّمَ
اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِىْ
بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿31﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ
اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿32﴾ قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ
بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ
غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿33﴾

www.understandquran.com

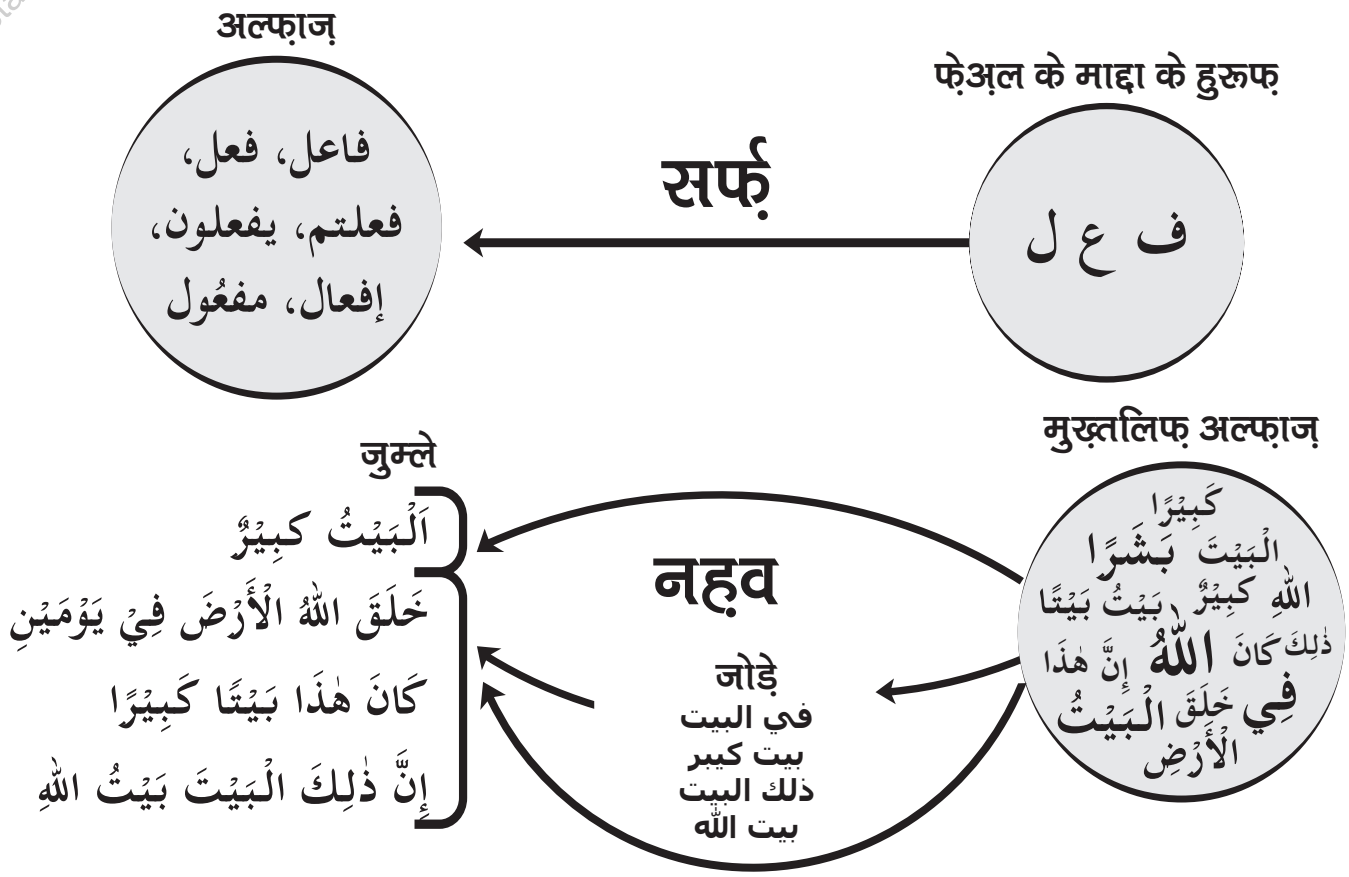

रफ़अ़, नसब, जर की ह़ालतें (TPI के साथ प्रक्टिस कीजिए)

छुपे हुए एराब	नहीं बदलने वाले	कुछ बदलने वाले	अस्माए ख़म्सा	आ़म ह़ालतें	ह़ालतें
مُوسٰى	هٰذَا	إِبْرَاهِيْمُ	أَبُوْ	مُسْلِمٌ	رفع ←
مُوسٰى	هٰذَا	إِبْرَاهِيْمُ	أَبَا	مُسْلِمًا	نصب ←
مُوسٰى	هٰذَا	إِبْرَاهِيْمُ	أَبِيْ	مُسْلِمٍ	جر ←

चार क़िस्म के जुम्ले (TPI के साथ प्रक्टिस कीजिए)

اِسْمِيَّة ←	اللهُ غَفُوْرٌ
فِعْلِيَّة ←	خَلَقَ اللهُ الْأَرْضَ
إِنَّ کے ساتھ ←	إِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ
كَانَ کے ساتھ ←	كَانَ اللهُ غَفُوْرًا

www.understandquran.com

www.understandquran.com

www.understandquran.com

مُسْلِمُوْنَ	مُسْلِمٌ	अस्ली हालत (रफ़अ़ की ह़ालत)
مُسْلِمِيْنَ	مُسْلِمًا	असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)
مُسْلِمِيْنَ	مُسْلِمٍ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)

مُسْلِمَاتٌ	مُسْلِمَةٌ	अस्ली हालत (रफ़अ़ की ह़ालत)
مُسْلِمَاتٍ	مُسْلِمَةً	असर पड़ने की सूरत में (नसब की ह़ालत)
مُسْلِمَاتٍ	مُسْلِمَةٍ	हुरूफ़े जर के बाद (जर की ह़ालत)

4 जोड़े

حرف جرّ

فِى الْأَرْضِ

بَيْتٌ كَبِيْرٌ

1 1

صِفَة

هٰذَا بَيْتٌ كَبِيْرٌ
رَأَى زَيْدٌ بَيْتًا كَبِيْرًا
زَيْدٌ فِيْ بَيْتٍ كَبِيْرٍ

ذٰلِكَ الْبَيْتُ

بَيْتُ اللّٰهِ

1 1

إِشَارة

بَيْتُهُ ذٰلِكَ الْبَيْتُ
رَأَى زَيْدٌ ذٰلِكَ الْبَيْتَ
زَيْدٌ فِيْ ذٰلِكَ الْبَيْتِ

Relation

هٰذَا بَيْتُ اللّٰهِ
رَأَى زَيْدٌ بَيْتَ اللّٰهِ
زَيْدٌ فِيْ بَيْتِ اللّٰهِ

منصوبات

ذَكَرْتُ اللّٰهَ ذِكْرًا طَاعَةً صَبَاحًا خَلْفَ الْإِمَامِ قَاعِدًا خَائِفًا
يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ، اِغْفِرْ لِيْ! فَأَنْتَ خَيْرُ غَافِرًا
وَأَعْلَمُ أَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا. لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

www.understandquran.com

आओ कुरआन पढ़ें - आसान तरीक़े से

(बच्चों और बड़ों के लिए)

- अ़रबी हुरूफ़, ह़रकात और उसूले तज्वीद (क़वायद) की तालीम तख़लीक़ी अंदाज़ में
- मसरूफ़ लोगों के लिए कम वक़्त में सीखने का बेहतरीन मौक़ा
- जदीद साइंसी अंदाज़ को इस्तेमाल करते हुए मुशकिल नज़रियात की आसान तालीम

आओ कुरआन समझें - आसान तरीक़े से

(निहायत दिलचस्प और आसान तर्ज़े तालीम)

कोर्स: 1	(20 घण्टे) आओ कुरआन समझें (7 सूरतें और नमाज़ के अज़्कार)	ज़मायर, हुरूफ़े जर और फ़ेअ़ल सुलासी सह़ीह़	50% कुरआनी अल्फ़ाज़*
कोर्स: 2	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 1-37)	फ़ेअ़ल सुलासी मोअ़तल	80% कुरआनी अल्फ़ाज़*
कोर्स: 3	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 38-76)	फ़ेअ़ल सुलासी मज़ीद फ़ीह	90% कुरआनी अल्फ़ाज़*
कोर्स: 4	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 77-105)	इज़ाफ़ी सर्फ़ और नह्व का तआ़रूफ़	90% से ज़ायद*
कोर्स: 5	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 106-141)	नह्व के बुनियादी क़वायद	90% से ज़ायद*

*फ़ीसद की यह तक़सीम उस वक़्त दुरूस्त शुमार होगी जब कि सूरतुल बक़रा और उसके बाद वाली सूरतों की तालीम जारी रखी जाए।

स्कूली निसाब

- दुनिया भर के बहुत से स्कूलों में दाख़िले निसाब
- तक़रीबन दो लाख से ज़ायद मुस्तफ़ीद तलबा
- नर्सरी से दसवीं जमाअ़त तक का निसाब

कुरआन की ऑनलाइन पर्सनल क्लासेस

घर बैठे आसानी के साथ कुरआन सीखने का बेहतरीन मौक़ा

- इंग्लिश, उर्दू, तमिल, और बंगाली वग़ैरह ज़ुबानों में पढ़ाने के लिए मुस्तनद और क़ाबिल असातिज़ा मौजूद
- आसान निसाब और सहूलत बख़्श शेडूल
- साइंसी तरीक़ों के इस्तेमाल और याद-दाश्त के लिए मुफ़ीद तकनीक के साथ
- तदरीस के लिए मुआ़विन चीज़ों का इस्तेमाल
- तलबा की रोज़ाना की कारकर्दगी का जायज़ा और फ़ीडबैक
- कोर्स की तकमील पर सनद

100+ से ज़ायद ट्रेनर्स | **2000+** से ज़ायद रजिस्टर्ड तलबा | **50000+** से ज़ायद क्लासेस की तकमील

मुअल्लिफ़ के बारे में

डा० अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अ़ब्दुर्रह़ीम ने अपनी 25 साला तह़क़ीक़ात व तजर्बात की बुनियाद पर कुरआनी निसाब की एक सीरीज़ "आओ कुरआन पढ़े आसान तरीक़े से और तज्वीद के साथ" और "आओ कुरआन समझें आसान तरीक़े से" तैयार की है जो दुनिया भर के बहुत से स्कूलों में दाख़िले निसाब है। यह किताब बड़ी उम्र के लोगों के मेयार के मुताबिक़ भी तैयार की गई है। उन्होंने इन कोर्सेज़ को अब तक 10 मुल्कों मे पेश किया है और इन के प्रोग्राम नेशनल व इण्टरनेशनल टीवी पर भी नश्र किए जाते हैं। इन किताबों का 20 से ज़ायद ज़ुबानों में तर्जमा किया जा चुका है।

Plot No. 13-6-434/B/41, 2nd Floor, Omnagar, Langar House, Hyderabad - 500 008. Telangana - INDIA
Phone Nos: +91- 9652 430 971 /+91-40-2351 1371
Website: www.understandquran.com I Email: info@understandquran.com

INR 99/-